सू॰सा॰ तहीं तुम अंतरजामी । तो फिरि नृप कहत कों तुम के यके ती
८० सेवा तुम जिती करी रेंहों पुनि तेती ॥ १ ॥ स्वक धनुष जन मल्ल
निसंक माधि काजा । सूरज प्रभु सोहें उग्रसेंनि राजा ॥ ४ ॥ रा॰ सा
रंग ॥ मथुरा लोगनि वात सुनी उग्रसेंनि कों राज्य दयों ॥ सिंहास
न वेंठ नरिक्रूपा करि आप ह्या पासों चवरस्यों ॥ १ ॥ मात पिता के
संकट हारयो दरवन जें धुनि शाबास कियों ॥ रानी सवें मरन ते रा
खी उनते प्रभु नाहि और रखियों ॥ २ ॥ अवहीं सुनि वसुदेव देवकी
दुख चित के दुहु नि हियों ॥ सूरदास प्रभु आरा मधुपुरी दरसन तें
पुरलोक जियों ॥ ३ ॥ राग पूरबी ॥ मथुरा के लोगनि सब पायों ॥ नंद
वर भेख धरें नंदनंदन संग अक्रूर के आयो ॥ १ ॥ प्रथम माहि रजक
मारि अपने कर गोप हूं रंग पहराये ॥ तो रि धनुस ली लानट
नागर सव जग खेल खिलायों ॥ २ ॥ रंगभूमि मुष्टिक चांणूर ख
लि भुजा तार वजायों ॥ नगर नारि गारि देंक हां अजगुन तनु छव
नायो ॥ ३ ॥ वरषहि सुमन अकास महा हरि देव दुंदुभि वजायों
चढि अंवर विमान परम सुख कौतुक इंद्र आप आयो ॥ ४ ॥ कं
स मारि सुरराज काज कंप उग्रसेंन सिरनायों ॥ मात पिता वं
धं ते छुडे सूर सु जस गायों ॥ ५ ॥ रा॰ गा॰ नट ॥ देखन मंदिर पर सु च
ढी ॥ नंदपति पूरन चंद विलोकत जनु पुरस उदधि तरंग वढी ॥ १
दरसन की प्यासी अति आतुर निसि वासर गुण ग्राम रटी ॥
रही न लाज मोहि सुख चित वज सब निमुनाथ असीस पढी ॥ २
रही देह की विह्व करम वस जनु पट घारि काष्ट न लखढी ॥ सूर
दास प्रभु कृपा अवलोकनि मन हुं विधाता फेरि गढी ॥ ३ ॥ रा
ग ५ स्यान ॥ खेलत गज संग स्याम रामकुंवर दोऊ ॥ कोध दूर
व्याकुल अति इन के पिसनें क नहीं चकित भई जो धान हां दे
खत सब कोऊ ॥ १ ॥ स्याम कटकि पुछि लेत हर लधर कर सुंडि
देत महल महल नारी चरित देखति यह भारी ॥ ऐसे आतुर
गोपाल चपल नेंन मुख रसाल लिये कर वेंनल कुटलाल
मनों निर्ति कारी ॥ २ ॥ सुरंगना व्याकुल विमांन मन मन सव
करें गांन वोलत यह वचन अजहुं पायो नहि हार्यो ॥ सूर
प्रभु स्याम राम अखिल लोक के विश्राम पर पूरन कांम कर
न नाम लेत साखी ॥ ३ ॥ रा॰ गा॰ सो॰ रठि ॥ नचरि सखियों महावतभा
री ॥ जो वहि आजु नारी होंइनकों के सडारिहें मारी ॥ १ ॥ अंकुस

गलिकुंभपरकरषो हलधरकरेंहेंबिलकारी ॥ धायोभवनहुं
तेंअतिआतुर धरनीरतखभारी ॥ २ ॥ नवहूपि पूंछगह्यो दृष्टि
नकरर्केवृकवरसिरवारी ॥ पटक्योभूमिपेफिनहिंमरयो थ
विसोंनिरखिपुरनारी ॥ ३ ॥ सूरदासप्रभुसुरसुखदायकमारयो
नागपछारी ॥ ४ ॥ राग गौरी ॥ हसतहूमतत्यांमप्रवलकुवलयासें
घारयो ॥ तुरतदंतलियेउपाटिकें धनि परचलधारयो ॥ १ ॥ निरख
तिनरनारिमुदितचित्रिजगजनमामयो ॥ अतिहिकोमलअंगनान
सुनतनपतिजियसंकारयो ॥ २ ॥ तनुविंतुन्योंभयेप्रानमल्लनि
प्रेमआये ॥ देखतहीसाकितगएकालनिरखिवेहालभये ॥ ३
असुरवीरवहूपासजिनकेभुजअकासमल्लकरतगासनाम
ग्रसकोंविचारें ॥ सबेंकहूभिरहुश्यांमसुनतरहूतमदेनामहू
स्जोतधरहीकोंनकाहूमारें ॥ ४ ॥ हसिबोलेस्यांमरामकहांसु
नतरहेनामखेलनकोंहमहिकांमबालकसंगडोलें ॥ सुरन
रवेंकुमारइहेंराजसविचारकहांकहांवामवारप्रभुएसें
बोलें ॥ ५ ॥ राग कल्यान ॥ रंगभूमिआयेश्रीनंदसुवनवारे ॥ नि
रखनिव्रजनारिनेहउरतेंनविसारें ॥ १ ॥ देखोरीमुष्टिकचाणू
इनाहिहूकोप ॥ केसेंअबवचेंनाथउरधसबासडारे ॥ २ ॥ जनकध
नुसजोधाहूतिरंतगमतापाये ॥ निरदयपरकंसइनहिचाहतहे
मारे ॥ ३ ॥ कहांमल्लकहांअतिहिकोमलअंगवारे ॥ केसीजन
नीकठोरकीनेजिनत्याये ॥ ४ ॥ वारवारवहूकहतिभरिभरिदृ
उतारे ॥ सूरजप्रभुवलिमोहनउरतेंनहिटारे ॥ ६ ॥ राग मारू ॥ न
वलनंदनंदन रंगभूमिआए ॥ संगवलिरांमअभिरांमससि
सूरजोआपनीआपछविसोंसुहाए ॥ १ ॥ द्वारगजराजलखिपी
तपटकटिकसतमेंरमदहूसतअतिलसतभारी ॥ कछुक
हीपरतीतिवजतांहिफिरिहेरिकेंपेचदैछविलीपगियांसवा
री ॥ २ ॥ गर्वकेगिरिमनोंवलतपाइनतेंसेंहीकुवलयाप्रवलरि
सहीधायों ॥ बालकनिज्यों पूछधरिखेलियेंतेंसेंहरिहा
यहाथीगिरायो ॥ ३ ॥ गहिपटकिपुहुमिपरनेंकनहींमटकियो
दंतभिरनालसेंएंचिलीनों ॥ कंधधरिचलेदोउवीरनकेवने
निरखिपुरजनप्रांनवारिदीनों ॥ ४ ॥ मेलमेमल्लसवेंधायआ
एसरनकोंउभूलेगोडपरपारानें ॥ कंसकेप्राणभयोभीतपिंज
राजलेंनवविहंगमभ्रमतफरफरानें ॥ ५ ॥ मधुपरकीजुवतीस

सू.सा. वैं करि तिअनि रति भरी देषिरी देषि अंग अंग लुनाई ॥ सुनत
२.८ अवननि रही देषिरी नवसई मधुर मूरति मूरति पनिन पाई
॥ निपट असमसर रोकु निरषि देषिरी विधि बड़ों कूर किधों हम
अभागी ॥ परम हंस अस रिपु रिपु रमन देषत भक्त जनन के
आनंद अनुरागी ॥ ७ ॥ अबल सों अबल भये सबल सों सबल भ
ये ललित तनु जोति अनि ही प्रकासी ॥ ज्ञान करि ध्यान करि जि
निजै सी लई मानि मान पितु दुख दूरि सूर अविनासी ॥ ८ ॥ रा॥ सो
रठि ॥ मथुरा ऐसी आजु बनी मानों पति को आगम जान्यों सजे
सिंगार घनी ॥ भूषन चित्र विचित्र देषियत सोभित सुंदर अ
मनी ॥ १ ॥ मानों कोरि कसी कटि किंकिनि उपवन बसन सुरंगि
नि ॥ सुनि अति सघन घरालघोषते पाइनन् पुर बाजत ॥ २
उर अंचल चंचल अतिराजत धाम निधुजा विराजत ॥ ऊंचे
अटन नछत्र की छवि जनु जुबनी मग फूली ॥ कनक कलस
कुच प्रगट देषियत आनंद कंचुकी भूली ॥ ३ ॥ विद्रुम फटिक
पान चीऊ पर जालरंध्र की रेष ॥ मनहु तुम्हारे दरसन कारन
नैंनानि तजी निमेष ॥ ४ ॥ अबिलंब कहु इहि भांति रमापति पुरी
परम रुचि सूहि ॥ सूरदास प्रभु कंस मारि कें ह्वो हु इहां के भूप
५ ॥ रा॥ भूपाली ॥ आनंद हे हरषि बधू आनि देव बहरचरणपवि
दर्यो मथुरा प्रगट भयो पति ॥ १ ॥ गावत गनगंधर्व जुमुल वि
नरासिक सुरलोक अति रति ॥ विद्याधर कंठ कलित अति
तालु घरे जनननि जति ॥ २ ॥ शिव विरंचि सनकादिक आगे
चितन समान रह्यो रति ॥ कमल नैंन सासिवरनि विलोकत
दृविम रतन जु विचित्र रति ॥ ३ ॥ श्याम सुभग जोपीत बसन दुति
गोरस आनि जोरें रति ॥ सूरदास प्रभु कियों कृपा अति भुजन के
चिन्ह दरावति ॥ ४ ॥ रा॥ गौंड़ मलार ॥ क्रोध गज मान पाल की
नों ॥ गरजि घुमरात मर भार गगननि अवत पवन तें वेग ते
हि समें चीनों ॥ १ ॥ चक्र सो भ्रमत चक्र तन भएदे षि सव चहूं ओ
र षिये नैंन दृढ ठोटा ॥ धमकि गए बीर सब चंक चौधी लागि चि
ते उरपे असुर घटा घोरा ॥ २ ॥ लाल फर्ष वर धोल वरन वालि
रोम तनु पीन अंबर स्याम अंग सोभा ॥ सूर प्रभु चरित पुरना
रि देखति महल महल पर आसिर्वाद देत लोभा ॥ ३ ॥ रा॥ क
ल्यान ॥ भलें नंद के छोहरा हेरन ही कहौं जो मनु विचारे ॥ वार

हीवारेंहांकगएकहांग्रव ग्रापनेसम ग्रसुरहंकारे॥ ५॥ पौ
रिगाढीकरेंद्वारवीरनकहें ग्रायबलकारीइनगारीरेवें॥ बहु
रिघसनाहुगे धेंनुरहिखाग्रोगे जांनरेहुतु महिंग्रांनलेवें॥ २
कोउनररेंउह्यालोहैंग्रावत कहांपगहेंधरनि हरिसन्मुखेंग्रा
यों॥ वक्रितहेंगयोमीचट्रसनभयोकहांरानीब इहकहिसु
नायों॥ ३॥ स्पांमवलिरांमकेनामलेंलेंकहतमचिग्राईलेंन
तुमहिवाजें॥ सूरप्रभुरंग्विनपक्रोधकरिघरांकरोंकरिपीन
परेंदेवराजें॥ ४॥ रा ग मा रू॥ जैजैधुनिमिहलोकभई॥ मारयोकंस
धरनितबउद्धरी ग्रोक ग्रोक ग्रानंदमई॥ १॥ रजकमारिकें ग्रंउवि
भंज्योंखिलतकरगज ग्रांनलियों॥ मल्लपछारितुरतसंघारेस
वनिमांनसुरलोकदियों॥ २॥ परनरनारिनकोंसुखदीनों जो
जैसोंफलसोइलह्यों॥ सूरधन्यजदुवंसउजागर धन्यधन्यधा
निघुमरिरह्यो॥ ३॥ रा ग मा रू॥ ग्राजुनोंनिसानवाजेवसुदेवरा
इकें॥ मथुराकेनरनारीउठेसुखपाइयें ग्रमरविमानसवेंक
हेंहरषाइकें॥ १॥ फल्लेमातपितारोउ ग्रानंदवढायकें॥ कंस
कोंभंडाररेतसवेंलुटायकें॥ २॥ धनजसकलराखेनंदएगा
नायकें॥ नांवरूपेसोनेसजि ग्रांनेवनाइकें॥ ३॥ मागधमगध
जनलेतमनुभायकें॥ ग्रघसिद्धनवनिद्धि ग्रागेंठाढी ग्राइकें
४॥ सवतिलकाविप्रनितिलकदईदिवायकें॥ सवपुरनारि ग्राइ
मंगलगाइकें॥ ५॥ ग्रंवरभूखनपठेदईउनेंपहिराइकें॥ ग्रखि
लभुवनजनकोंसनापराइकें॥ ६॥ पुरजनधनदेतहेंलुटाय
कें॥ सूरजदारीविद्धारठाढेभयोसुखगायकें॥ ७॥ रा ग मा रू॥ न
वनदकुलपतिकेंसहिमामह्यो तिहंभुवनमेंसोरपर्यो॥ तुर
तमांचधरनी मोरायो॥ एसहींमाररनविलमनलायो॥ १॥ के
सगहेंपुहुमीघिसिग्रायो॥ उग्रिजमुनजलवीचवहायो॥ जा
केसुहनिहंभुवनडराई॥ ताकोंमारयोहलधरभाई॥ २॥ जाके
धनुषटकोरतहाथा॥ ग्रासनडारिभजेसुरनाथा॥ मारतना
हिविलमनहिकीनों॥ उग्रसेनिकोंरानतवदीनों॥ ३॥ जेहोजे
वसुदेवकुमारा॥ जेहोजेतुमनंदहुलारा॥ सुरदेवीदेवेंधन
मेया॥ धनिजसुमतित्रिभुवनपतिधेया॥ ४॥ रा ग ध ना श्री
धनिग्रक्रूरमधुपुरीलेंग्राये॥ सुरश्रमरजेजेंधुनिगाये॥ द
नुजवंससनिरवंसकराये॥ धरनीसिरतेंभारगवाये॥ १॥ मात

सू.सा पिताबंदितें छुडावें ॥ पढ्हवानी सुरलोक निगावें ॥ जोजैसो तेसो
२.९ तेहिभाए ॥ सहज प्रभु सबकों सुखदाये ॥ ३ ॥ राग बिलावल ॥ कंस
मारि सुरकाजा कियो ॥ मातपितावंदितें छोरे दुखबिसरे आनं
दहियो ॥ १ ॥ उग्रसेनिकों धायमिले हरि अभय अचल करिराज
दयो ॥ असुरवंस निरवंस छिनकमें ऐसोंनहीं कोउ औरबियो ॥
२ ॥ मिली कूबरी बंदन देकें एसें हि हरि कोंनांमलियो ॥ सुनहु
सूरनपपासजातिहें बीचसुकृत प्रति दरसदियो ॥ ३ ॥ राग
माल्हा ॥ कुवरी पूरब तपकरि राख्यो ॥ आए स्पांम भवन ताहीके
नृपतिमहल सबनाष्यो ॥ १ ॥ प्रथम हि धनुषतोरि आवतिहें
बीचमिलीयहधाये ॥ तिहि अनुराग बस्पभए ताके सोहि
तकह्योंनजाये ॥ २ ॥ देवकाजकरि आवन कहिगये देंगये
रूपअपार ॥ कृपादृष्टि चितवत श्री भई निगमन पावत
पार ॥ ३ ॥ हनेदूत दीन्ह मिकेपाछें एसेदीन दयाल ॥ सूरसुर नि
केकालतुरंत नहीं आवततहांगोपाल ॥ ४ ॥ राग काफी ॥ कियेसुर
राजगरहबलेताबे ॥ पुरुषअरुनारि कोभेद भेदा नहींकुलीन
अकुलीन अवतरोंकाके ॥ १ ॥ दासदासी कोनें प्रभुनि प्रभुकों
नहें अखिल ब्रह्मांडकरो म्हताबे ॥ भावसांचों हृदयजहांह
रितहांहें कृपा प्रभुकी भाग्य भागवाके ॥ २ ॥ दासदासी स्पांम
भजन हुतेजीये रमासम भई सोकृष्ण दासी ॥ मिलि बहसूर
प्रभुप्रेम चंदन बरुचि कियोंअप कोरितपको हिकासी ॥ ३ ॥ रा
गकाफी ॥ [illegible]जासदन आए स्पांम ॥ करिकृपा हरिगए प्रथम
ही भई अनूपम बांम ॥ १ ॥ प्रीतिके बसरी निबंधों भक्त बछल
नाम मिलीमारगमलय लेकें भए पूरनकांम ॥ २ ॥ उर्वसीपर
तरनहीं नहिं रमाकेमनताम ॥ सूरप्रभु महिमा अगोचर बसेरा
सीधांम ॥ ३ ॥ राग धनाश्री ॥ मथुराकेनरनारि कहें ॥ कहांमिलीकु
बिजाचंदनलें कहांस्पांम निहि कृपाचहें ॥ १ ॥ कहांतपस्पाकरि
यहराख्योंजहां तहांपुरइहें चलें ॥ कछुनहि आवत हरिदेखि
हूंकरों प्रभुहेत मलें ॥ २ ॥ तबहिकृपाकरि सुंदरि कीनी यहमहि
मामुहिकहिनआवें ॥ सूरजदासभाग कुवरीकों कोंनताहिकी
पटतरपावें ॥ ३ ॥ राग गौडमल्लार ॥ हसबनरनारिमथुरापुरीके
सोचसबकोंगयो देतकलसबहयोंतिहुंभुवनजैभयोहर
खकपिकें ॥ १ ॥ निदरिमारोकंसप्रगटदें प्रगटदेखतसब अति

हिं वंदिन अलपके नंद ढोटा ॥ नैंन दोऊ ब्रह्म से पर मंसो भाल सें भ
गत केजे से शुभ हंस जोटा ॥ ४ ॥ देवदुंदुभि बजी अमर आनंद भये
पुहपगन वर्षही चैंन जांन्यो ॥ सूर वसुदेव सुत रोहिनी नंद धनि
मि यो भुवभार अखिल जांन्यो ॥ ३ ॥ राग मारू ॥ तुरत मार्यो कंस देव
नाष्यो ॥ निदरि मर्यो असुर पूतना आदि तें धरनि पावन करि भ
ई सनाथ्यो ॥ १ ॥ लोक लोकनि विदित कष्पा तुरत हीं गई करन अ
स्तुति जहां तहां आये ॥ देवदुंदुभि पुहप वृष्टि जय धुनि करें हृष्ट
पहमानि सुरपुर पठाये ॥ २ ॥ केस गहि करषि जमुनाधारि डारि दें ।
सुन्यों नृपनारि पति कृष्ण मार्यो ॥ भई व्याकुल सबें हेत रोवन
लगीं मरन कों तुरत जान्यों हृदय विचार्यो ॥ ३ ॥ गए स्याम तहां बलि राम
बोधि सब कहति सब नारि तुम करौ ते सौ ॥ सुनहु नृप स्याम वहु कें
म ऐसो उर ह्यौं जानि यह बात कौं कह तुम ऐसी ॥ ४ ॥ मरति काहे क
हों तुम हि कह्यों वहु भई जानि अज्ञान तुम हो न काहे ॥ सूर नृप मापि
हृदय वचन मार्यो सत्य हू रख्यें स्याम मुररारि चाहे ॥ ५ ॥ राग मारू
एहौ सुत नंद अहीर के ॥ मार्यो रजक वसन सब लूट्यो संग स
खा बल वीर के ॥ १ ॥ कांधें धारि दोऊ अए आए दंत कुवलिया धी
र के ॥ पशुपति मंडल मध्य मनो मीन खी रधि निरधि सीर के ॥ २ ॥
उठि आए तजि हंस समान मनो मान सरोवर तीर के ॥ सूरदास प्रभु
ताप निवारन हरन संगम वपीर के ॥ ३ ॥ राग गौरमलार ॥ बोलि लीने
कंस मल्ल चाणूर वोलि कहें रे करत क्यों विलम कीनो ॥ वंस निरवं
स करि डारिहों छिनक मे गारि दें ताहि त्रास दीनो ॥ १ ॥ सात्रुना
हीं जानि रहे अवलो वोठि जन क आपने को भारि डारो ॥ द्रुरद को
दंत उपटाय तुम लेत हे इहें वल आजु काहिन सभारो ॥ २ ॥ मलीन
ही करी तुम राखि राष्यौं उन ही हे वह कहि तुरत वाकों पठायो ॥ को
ध कछु त्रास कछु सोक कछु सोच करि मात्र हि सेकर त रंगभूमि आ
यो ॥ परस्पर कहि समवनि नृपति त्रास्यो मोहि सुनहु रे वीर अबलों
न मान्यो ॥ कांम यो कि मारि दुहूनि के हो इसो होइ वह कहत रान्यो ॥ ४ ॥
निरषि दोउ वीर तन डरे रैंक मन हि मन यह वुधि करों ज्यों नास
कीजें ॥ लखति पुरनारि प्रभु सूर दोऊ मारिहें कहत हें नृपति पशु
जमुल लीजें ॥ ५ ॥ राग कल्यान ॥ देखो री मल्ल इनें मारन कों देरे ॥ अंतक छि सु
दिकु मा रजन सुमति रोहनि वार विलखति व हक हति सवें लोचन ठो
रे ॥ १ ॥ कैसें हु वचे आज पठयें धों कोंन काज निठु रहीं यों मातम को

सू.सा. लाभह्नीपठायो ॥ एतोंबालकअजांनहैं कोउनकोंसयानकहोंकि
२२० योंग्यांनयहांकाहूकोंआयो ॥ २ ॥ कहांमल्लअमुष्टिकसेचानूरामल्ला
भंजनसेकहांतभुजाभारि परंकननेंरमुवनहरखे ॥ नगरनारि
व्याकुलजियजांनतप्रभुसूरस्यांमगर्वेहृततननामध्यांनकरि
करिवेहूरखे ॥ ३ ॥ राग धनाश्री ॥ कहतपुरनारीयहमनमोहमारे ॥
गजकमारयोंधनुषतोरिद्वैखंडपरयोंहतौगजन्योंइनहिंभारे ॥ १
त्रसितअतिवारीवेसमल्लज्योंज्योंकहेंलरतनहिस्यांमहमसं
गकाहू ॥ परसपरमतुकरतनारिइहरोंइनैंलखतिएचरितइहहू
निमुखचाहू ॥ २ ॥ कहांबाहेंइहहोंनचाहोंकहांअवहिमारनदुहू
निहमहिआगें ॥ सूरकरजेमिअंचरछोरिविनवेंवचेंएआजुवि
धिइहैंमागें ॥ ३ ॥ राग गौंड मलार ॥ सुनोहोवीरमुष्टिकचाणूरसवह
मल्हिनृपपासनहिंजांनदेंहों ॥ घेरिराखेंहमाहिनहीवूझतमेंजग
तमेंकहांउपहांसलैंहों ॥ १ ॥ सवेंकहेंयहेंभलीमानितुमपेंहेंनंदसु
वटोंऊमल्लवारे ॥ एहुनसलेंहुगेजानकहींदेहुगेवानहीपरो
अवतुमहमारे ॥ २ ॥ हमनहीकहेंतुमतमनहीमनजोइहैंवसि
करिकहतहैं कहांनोंकरैंनेंसी ॥ सूरहमततनतिरषिरेंषियेंआ
पकोंवानतुमममनयहवसीनेंसी ॥ ३ ॥ राग गौंड मलार ॥ गहेंकरस्यां
ममल्लअपनेंधायऊ ठांकिलीनोंतुरतेंपटकिधरनी ॥ भटवीअ
तिआवभयोंपटकिसिरपके हियेंअटकिप्रांननिपरयोंचटकिकर
नी ॥ १ ॥ लटकिकिसिरवनलग्योंमटकसवभूलिगाईहटकडारि
देहुइहैंलागी ॥ मटकिकुंडलनिरषिअटकहेकेंगयोंगटकिसल
सोंरह्योंमीचजागी ॥ २ ॥ मल्लजैजेरहे सवेंमारेतुरतअसुरजोधा
सवेंनोंसंघारे ॥ धायदूतनीकहेंमल्लकोउनारहें सूरवलिरांम
हरिसवपछारे ॥ ३ ॥ राग मारू ॥ मथुराकेलोगनिसुखपायो ॥ नट
वरभेषकाछिनंदनंदनसंगअक्रूरलेंआयो ॥ १ ॥ प्रथमहिरज
कमारिमनमोहनगोपन्हंरपहरायो ॥ धनुषतोरिलीलानट
नागरितवगजखेलखिलायो ॥ २ ॥ रंगभूमिमुष्टिकचानुरहीयु
जवलतारुवजायो ॥ नगरनारिरंगारिकंसकोंअजयुतजुरव
नायो ॥ ३ ॥ गानगंधर्वरेंवतेतीमोकौतुकअंवरछायो ॥ मारयोंकं
सकाजसवसारयोंउग्रसेंनिमनभायो ॥ ४ ॥ हरखेवसुदेवदेवकी
आनंदमंगलवधायो ॥ मातपितावंदीवेंदिछुडाईसुखसुजसरसु
गायो ॥ ५ ॥ राग धनाश्री ॥ आजुपरमदिनमंगलकारी ॥ लोकलोक

कौटिकों आयौं सुदितसकल नरनारी ॥१॥ शिवसुरेस शेष अरु वह
कौं गिनें चतुरानन करधारी ॥ कर हूंटया टवेंधनों छावरि करतर
तनपट सारी ॥२॥ बाजत ढोल निसान संखधुनि बहुन कुलाहल
भारी ॥ अपने अपने लोग चले सम सूरदास बलिहारी ॥३॥ रा
ग ना श्री ॥ जोपें राखतिहौं पहचांनि ॥ तौं अबकें वह मोहनमूरति
मोहि दिषाव हु आंनि ॥१॥ तुम रानी वसुदेव गेहनी हौंगवार ब्रज
वासी ॥ पठैदेहु मेरौ लाडलडैतो वारों ऐसी हांसी ॥२॥ भली करी कं
सादिक मारे सब सुरकाज किये ॥ अब इनि गैयनि कौंन चरावें
भरि भरि लेति हियें ॥३॥ खांनपान परिधांन राजसुख जो कोउ को
टि लडावें ॥ तदपि सूर मेरे बारे कन्हैया मांखन हीसचु पावें ॥४॥ रा
ग नट ॥ अथ श्री कृष्ण वचन नंद प्रति ॥ तें मेरी प्रभुता बहुत करी ॥ पर
मभावार ओपपसुपालक नीजर श्राजें ऊवधरी ॥१॥ रोग दोष संज्ञा
पजनमके प्रगट नहीं तुम सबें हरी ॥ असम महानिधि औरन बैनि
धिक स्जौरें मेरे द्वपषारी ॥२॥ तीनि लोक मुख भवन चतुर्दस बे
स्पुरानन निशाखि धरी ॥ सूरदास प्रभु अपने जनकों देत परम सु
खघरीघरी ॥३॥ राग बिलारों ॥ नाहु कहाकहुं फिरहु नंदराई ॥ हम
हि तुमहिं सुत तात कौ नातो और पर्यो है आई ॥१॥ तुम कियो प्र
तिपाल हमारो सूलन नित पनेनाई ॥ जहां जहां हम रहें जु तुम्हारें।
डारहुं जिनि बिसराई ॥२॥ ग्वालन नीज सोदा ग्वाल सखा सब मिलिय
हु कंठ लगाई ॥ सुधि काधि सोधिक रदेखौं मेरो ई गुन गाई ॥३॥
मायामोह मिलन और बिछुरन ऐसेंही रिनजाई ॥ सूरदास प्र
भु निठुर बचन सुनि नेंननि नीर बहाई ॥४॥ राग धनाश्री ॥ फिरि नं
द उतर न दीनों ॥ रोम रोम भरि गयो बचन सुनि मनहुं चित्र लि
खि कीनों ॥१॥ पहलें परंपरा बलि आई सुख दुख लाभ अरु हां
नि ॥ हम पर बवाम पाकरि रहियो सुत अपनों जिय जांनि ॥२
को जलपें निरखि बिकाके फल लागे निरषि बदन सिर नायो ॥ दु
ख समूह निंदोंपारि पुरके चलत कंठ भरि आयो ॥३॥ अधर पसु
बमई कोटि गिरिजों नगि गोकुल पेंठो ॥ सूरदास अस कवन कु
लिसहु ते अजहुं रहत तन नवेंठो ॥४॥ राग सोरठि ॥ नंद विदा कें
घोष सिधारे ॥ बिछुरन मिलन रची विधि ऐसें यह संकोच निवा
रें ॥१॥ कहियो जाय जसोधा आगें नेंननी रजनि निडारों ॥ सेवा क
रि जांनि सुत अपनो करो प्रतिपाल हमारो ॥२॥ हम महि तुम हि क

॥ सू॰सा॰ ॥ कछु अंतर नाहीं तुम जी ज्ञान विचारों ॥ सूरदास प्रभु वे विचारि कें
॥ २२५ ॥ दुरजन प्रीति विसारों ॥ ३ ॥ अपनें दास पश्री कृष्ण जी प्रति वचन ॥ रा
ग सोरठि ॥ गोपाल राय हों न चरनन तजि जेहों ॥ तुमें छांडि मधुवन मे
रे मोंहन कहां जाय ब्रज लेहों ॥ १ ॥ उलर कहां देहों जसुमति कों ज
वसन मुखराईं ॥ मात समें सोंवत उठि जननी काहि कलेउ देहों
२ वारह वर्ष दई हम ढीठों यह प्रताप न हि जांन्यों ॥ अव तुम प्र
गट भये वसुदेव सुत गार्ग वचन परवांन्यों ॥ ३ ॥ कंनहम काजम
हा रिपु मारे ब्रज आपदा विनासी ॥ इनि द्रोण कमल कारने गिरि
दृविम रते ब्रज वासी ॥ ४ ॥ वासर संग सखा सं वलीने रे एिन धेनु
चरावहु ॥ वैसो रहिहें यह प्रान द रसविनु संध्या समें न आवहूं ॥ ५ ॥
अव तुम राज करों कोटिक जुग मात पिता सुख देहों ॥ कवहु तात
तात मेरे मोंहन वा तें मोसों कहिहों ॥ ६ ॥ ऊरध स्वास चरन सिस
कानी नेंन निनी रवहाये ॥ सूरनंद विछुरन की विपदा मोपें क
ही न जाई ॥ ७ ॥ राग पूर्वी ॥ अपने गोपाल कहिहे चेरो ॥ जनम जनम
मुनि सुवल सुदामा निवघोय ह प्रांन मेरो ॥ १ ॥ ब्रह्मादिक इंद्रादि
आदि देंजा नन वल सव फेरों ॥ एक खास की त्रास चलन उठि
तजि तजि अपनो खेरो ॥ २ ॥ कहूं भयो जो दे स द्वारिका कोनों दूरि
वसेरो ॥ अपने ही या व्रज के कारन करि हें हरि फिरि फेरो ॥ ३ ॥ इ
हां उदार हम पि रतन सो पाही तक तिं श्रमाध श्रहेरो ॥ सूर हियें ते
टरसन गोकुल अंगा छुवत होंटेरो ॥ ४ ॥ श्री कृष्ण वचन नंद जसो
धा प्रति ॥ राग क 'ना नी ॥ कें रहियो जसोदा मैया ॥ आवेंगो दिन
रियां चमें हम हलधर दोऊ भैया ॥ १ ॥ वंसी वेंन विसारि हे वियों
औरें अवेर सवेरों ॥ लें जिनि जाय चुराय राधिका कछु खिलोंना
मेरों ॥ २ ॥ नारिन तें हम तुम तें विछुरे काहून कहे कंन्हैया ॥ प्रांन
समें उठि कियो न कलेऊ सांझ पियो नहि धेया ॥ ३ ॥ कहां कहों क
छु कहत न आवें जसुमति जें तो दुख पायो ॥ अव सुनियत वसु
देव देवकी कहत हमारो जायो ॥ ४ ॥ कहियो जाय नंद वावा सों
मंद निठुर मन कीनों ॥ सूरस्यांम पहुचाय मधुपुरी वहुरि संदे
सो न लीनो ॥ ५ ॥ राग मारू ॥ मेरे कांन्ह कमल दल लोचन ॥ अव
की वेर वहुरि फिरि आवहु कहां लगे जिय सोचन ॥ १ ॥ पहले लाल
सा वहुत मेरे जिय वेठे देखत रहिहों ॥ गाय चरावन जांन कुंवर
कों कवहूं भूलि न कहिहों ॥ २ ॥ कारत अठान न वस्यो कवहुं अ

हमांरखनकीचोरी ॥ अपनेजियतनेंनभरिदेखोंहीरारुकेंसीजोरी
३ ॥ एकबेरमिलिजायउहालोंअननकहुंकेउत्तर ॥ वारिहुदिवस
आयसुखदीजेंसूरपहुनाईसूल ॥ ४ ॥ राग धनाश्री ॥ पथिकतनीक
ह्यियोंवात ॥ तुमबिनुयहांकुवरवरमेरेहोतजितेउतपात ॥ १ ॥ व
कुअघासुरटरततनटारेबालकवनहिनजात ॥ ब्रजपंजरिरु
धिमानोंराखेनिकसनकोंअकुलात ॥ २ ॥ गोपीभायसकलल
घुदीरघपीनवरनकृशगात ॥ परमअनाथदेखियततुमबिनु
केहिअवलंबियेंतात ॥ ३ ॥ कांन्हकांन्हकेटेरततबधोंअबकेसें
जियमांनत ॥ यहव्यवहारआजुलोहेंब्रजकपटनाटछलठांन
त ॥ ४ ॥ दसहुदिसितेंउदितहोतहेंदावानलकेकोट ॥ आंखेमूंदि
रहतसनमुखहेंनामकवचदेंवोट ॥ ५ ॥ एसबदुष्टगनेअरिजी
तेभएएकहीपेट ॥ सूरसहायकरोअबसमुझिपुरातन
हेट ॥ ६ ॥ राग बिहागरो ॥ अबनंदगैयालेंहोसंभारि ॥ हमकौंतुम्हारें
आनिप्रगटेगायचराईदिनचारि ॥ १ ॥ दूधदहीसबओरेंखायो
तुमज्योंकियोप्रतिपार ॥ सूरकेप्रभुचलेअनेवाजिकपटकागद
फारि ॥ ३ ॥ अथजसोदावचननंदजूप्रति ॥ राग सोरठि ॥ नंदतुमछांडि
उकहांकुमार ॥ केसेंआनरहतविनदेखेंपूछतिगोपीगोवार
॥ १ ॥ करुनाकरतजसोदामेयातेंनवहेंआधार ॥ चितवततनदरि
गोसेंनाटअंगपहरेमनहरनेवार ॥ २ ॥ मुरलीधनुब्रजमेनहिसु
नियेंसुरजनसबकरतपुकार ॥ स्यांमसुंदरजादिनतेंबिछु
रेकोऊनफेरकेनंदकुमार ॥ ३ ॥ राग सोरठि ॥ मेरोमाईअतिप्यारोनंद
नंद ॥ कहांबिसारोनंदतुमआएचूकपरीमतिमंद ॥ १ ॥ बलिमा
धोंअंबुजलोचनकिएआतिआनंदकंद ॥ सखवरगोपकुमुद
कुमिलानेकानवदनबिनुचंद ॥ २ ॥ बलहुचरनगहेंवसुदेव
केमेलिपागगलफंद ॥ सूरदासप्रभुगोकुलपठवनवहुती
निलोकमुनिबंद ॥ ३ ॥ राग सोरठि ॥ हरिबिछुरनकाहोनहियों
भयोंकठोरवज्रतेंभारी यहांरहिकहांकियों ॥ १ ॥ बांटिहुला
हलसुनिमेरीसजनीओरसतिहिनपियों ॥ मनबुधिगईसा
सारनतनकीकूडोंसावरियों ॥ २ ॥ अबकहांकरोंकोनविधि
होंपरबसप्रानलियों ॥ निसदिनरटतसूरकेप्रभुबिनकेसें
परतजियों ॥ ३ ॥ राग सोरठि ॥ पुलटिपगकेसेंदीनोंनंद ॥ छांडें
कहांउभयसुतमोहनधृगजीवनमतिमंद ॥ १ ॥ केंतुमधनजो

सू.सा. वनमहमाते कैंतुमधुदेवंद ॥ सुफलकसुतवैरीभयोहमकों
२१२ लेंगयोंआनंदकंद ॥ २ ॥ रामकृष्णविनकेसेंजीजेंकठिनप्रीति
केफंद ॥ सूरदासअवभईअभागिनितुमविनगोकुलचंद ॥ ३
॥ रा ॥ सो ॥ रठि ॥ सराहियेंनंदतिहारोहियों ॥ मोंहनसोंसुतछांडि
मधुपुरीगोकुलआनिजियों ॥ १ ॥ होंपचिसोचवहुतकरिहारी
एकोंनाहिभयों ॥ जीवनप्रांनहमारोंब्रजकोंवसुदेवछीनिलि
यों ॥ २ ॥ कहांकरूंमेरेललितलाडिलेवरजतगवनकियों ॥ सू
रदासप्रभुस्यांमलालघनपरहूपजायपरियों ॥ ३ ॥ रा ॥ सो ॥ रठि
हैंकोईइतनीभांतिदिषावें ॥ किंकिनिशब्दचलतधनुरुनुझुनु
ठुमुकुठुमुकगहआवें ॥ १ ॥ कछुकविलासवदनकीसोभाअरु
नकोटिगानिपावें ॥ कंचनमुकरकंठमुक्तावलिभोरपूछछवि
पावें ॥ २ ॥ धूसरधूरिअंगमंगलीनेंग्वालवालसंगलावें ॥ सूर
दासप्रभुकहतजसोदाभागवडेतेंपावें ॥ ३ ॥ राग ॥ धनाश्री ॥ क
हांसुखब्रजकोंसोंसंसार ॥ कहांसुखदवंसीवटजमुनाइहम
नसदाविचार ॥ १ ॥ कहांवनधांमकहांराधासंगकहांवहब्रज
कीवांम ॥ कहांलतातरुतरप्रतिकुंजकुंजनवधांम ॥
२ ॥ कहांषगमृगावृंदावनसुंदरकहांवंसीवटठांम ॥ कहांविर
हसुखविनगोपिनसंगसूरस्यांममनकांम ॥ ३ ॥ राग ॥ धनाश्री
इहअद्भुतदरसीरंग ॥ सदांमिलिएकसाथवेंठतचलतवोल
तसंग ॥ १ ॥ वालकहूतनवनतयासोंनिठुरजोसीसंग ॥ प्रेमसु
निविपरीतिभावतहोतहेंरसभंग ॥ २ ॥ सदांब्रजकोंध्यांनमे
रेंरासरंगतरंग ॥ सूरवेहरसकहूंकाहूमिलिसभासभरंग ॥ ३
रा ॥ ग ॥ धनाश्री ॥ संगमिलिकहुंकासंगवात ॥ पहनोंकथतजोग
कीवातेंजामेंरसजरिजान ॥ १ ॥ कहतकहांपितुमातकोंनके
पुरुषनारिकहांनात ॥ कहांजसोदासीहोमैयाकहांनंदसमता
त ॥ २ ॥ कहांवृषभांनसुतासंगकेसुखयहवासरकहांप्रात ॥
सखीसखासुखनाहिभवनमेंनाहिवेकुंठसुहात ॥ ३ ॥ वहवातें
कहियेंकिहिकारनआगेंननइहहरिपाछितात ॥ सूरदासप्रभु
ब्रजमहिमाकहिलिखीवरतवलिआंन ॥ ४ ॥ राग ॥ धनाश्री ॥ ज
दुपतिसखाऊधोंजांनि ॥ लगेलगेमनमनयहसोचनभलीभ
हीयहवांनि ॥ १ ॥ अंसभुजधरिहोनठाढेनिठुरजैसोंकाठ ॥ सग
इहनहिवनतनीकोंहोइवैसेंनठाठ ॥ २ ॥ नोकहैनोंकरैंयोंइह

निरिहैं अरु मोहि॥ देषिवे कों परम सुंदर परम नैंननि जोहि॥३॥
कनक कलस अपान जैसें तैं सोई यह रूप॥ सूर कैसें हु प्रेम पा
वें तव हि ह्वै हि स्वरूप॥४॥ रा॥ धनाश्री॥ जदुपति जानि उद्धव रीति
जेहि प्रगट निज सखा कहियत करत भाव अनीति॥१॥ विरह दु
ख सुख जहां नहीं तहां सपने प्रेम॥ रेख न रूप न बरन जाकें यह
धरयौ यह नेम॥२॥ त्रिगुन तन करि लषत हम कों ब्रह्म मानत औ
र॥ बिना गुन क्यों पुहुमि उधरें यह करत मन डोर॥३॥ विरह रस के
हि मंत्र कहियें क्यों चलें संसार॥ कछु कहत इह एक प्रगटत अ
ति भरयो अहंकार॥४॥ प्रेम भजन न नेक याको जाय क्यों समुझाइ
सूर प्रभु मन इहैं आनी ब्रजहि देउ पठाइ॥५॥ रा॥ पर ज॥ पाछें ही
चितवत मेरे लोचन आगें परत न पाइ॥ मन हरि लियो माधुरी मू
रति कहां करों ब्रज जाइ॥१॥ पोन भई पताका अंबर भई न रथ को अं
ग॥ रेनु भई चरण लपटाती जाती उहां लों संग॥२॥ कहां विधि करें
कैसें करि सजनी कब जु मिलें गोपाल॥ सूरदास प्रभु पठए मधु
पुरी मुरछि परी ब्रजबाल॥३॥ रा॥ प र म॥ यातें वान हो इ कोई विरहि
नि नारी॥ अब यह पीउ पीउ रटन सु लागी कें ऊंडन मगन मुखवारी
॥१॥ सुनि कुंजन गान देखि सखी तोकों अह निसि रटत पुकारी॥ दे
खहु प्रीति बापुरे पसु की अजत तन मान न हारी॥२॥ अब पानि बिनु
ऐसी लागति ज्यों सोभित पावर खारी॥ तैसें सूर जानि सब गोपी
जो न कृपा करि मिलि हैं मुरारी॥३॥ रा॥ गं॥ ला॥ स्यांम चलन अब
सुनियत आजु कौन कुटिल यह आयो॥ नंद भवन में भनक सुनी
अब कैसें जु दूत पठायो॥१॥ ब्रज की नारि नियहैं विचारयो सकल
सिमिटि करि आई॥ सूरन समाचार आतुर ह्वै गह गह नें उठि धाई
॥२॥ प्रीति जांनि सो च मांनि विलखि वदन ठाढी॥ मोंन हु वे सखि चि
चित्र चित्र हु लिखि काढी॥३॥ ऐसी छबि ठौर ठौर कहत न बनि आ
वें॥ सूरदास विरह विथा कहे को कहि भावें॥४॥ रा॥ गं॥ ला॥ जब तें
हरि मधुवन हि सिधारे॥ कबहु कियों न फेरो भए वहाय के मन
मोहन उत हि ना हि चितेरो॥१॥ बिन देखें कल न परत है निसादिन
लगत उर फेरो॥ सूर स्यांम को ऊ आनि मिलावें आनंद ह्वै यह नैने
रो॥२॥ रा॥ गं॥ नट॥ मोकों नाह रिवार भई॥ जब तें हरि मधुवन हि सि
धारे तब तें सुधि न लई॥१॥ कहां कीजें ए गाति निवि को मन अति दु
खित भई॥ चंदन चीर अगिनि सम लागत सब ही सूलसई॥२॥

सू.सा. तेरी गति कोउ नाहि जानत अब कछु मोंन मई ॥ सूरदास प्रभु दर
२१३ सन दीजे नें कुजमयाठई ॥ ३ ॥ रा ग धना श्री ॥ कुबिजा हरि की दासी
आहि ॥ जैसें आप भाजि गोकुल रहे तैसें राखी नाहि ॥ १ ॥ रूप रतन
दुराय राख्यौं जैसें नहीं कपूर ॥ तैसें सी पत्र अमोल रतन परि कहा
जानें जो कूर ॥ २ ॥ वैसें विरही कुबरी दासी अविनासी को आहि ॥ सू
रदास प्रभु कंस मारि कें लई आनि तिसि काहि ॥ ३ ॥ रा ग धना श्री
सखा सुनों एक मेरी वात ॥ इहें ललना गहे संग गोपिन सुधि कर
त पाछिनात ॥ १ ॥ विधि लिखी नहि टरत कैसें दुहू कहत अकुला
त ॥ सूर प्रभु यह सुनत मोसों एक हीसों नात ॥ २ ॥ रा ग कल्यान ॥ सब
ऊधो एक बात कही ॥ तब जदुपति अति हि सुख पायों मांनि प्र
गट सही ॥ १ ॥ श्री मुख कह्यों जाहु ब्रज तुम ही मिलों जाय ब्रज लोग
मो बिन बिरह भरी ब्रजबाला जाय सुनाव हु जोग ॥ २ ॥ प्रेम मिटाइ
ज्ञान परमोधहु तुम हों पूरन ज्ञानी ॥ सूर उमापतु तमन हरखें ष
हुम हिमाइ हहु रतपलानी ॥ ३ ॥ पूरन ब्रह्म अलख अविनासी ता
के तुम हों ज्ञाता ॥ रेख न रूप जाति कुल नांही जाके पितु माता ॥ ४
इह मत देंगो पिनु कों आवहु विरह नदी में भासति ॥ सूर तुरत तु
म जाय कहों इह ब्रह्म बिना नहि आसति ॥ ५ ॥ रा ग बि हा गरो ॥ ऊधो ब्र
ज कों गमन करों ॥ हमहि बिना विरहिनी गोपिका तिन के दुख हि
रों ॥ १ ॥ ज्ञान ग्यांन परमोधि सबनि कों ज्यों सुख पावें नारि ॥ पूरन
ब्रह्म अकल अविकारी मोहि विसारे डारि ॥ २ ॥ सखा प्रवीन हमारे
तुम हों तुम सों नहीं महंत ॥ सूर स्याम कारन यह पठवत ह्वें आवें
गो संत ॥ ३ ॥ रा ग बि हा गरो ॥ तुरत ब्रज जाहु उपंग सुत आजु ॥ ग्यांन
बुझाय खबरि दें आवहु एक पंथ द्वे काज ॥ १ ॥ जब तें मधुबन कों
हम आए फेरि गयों नहि कोई ॥ जुवतिन कों ताही पंथ पठवें जो तु
म लायक होई ॥ २ ॥ एक प्रवीन अरु हम सखा हमारे ज्ञान तुमें सारि
कों न ॥ सोई कीजे जैसें वे बाला साधन सीखें यौंन ॥ ३ ॥ श्री सुख स्यां
म कहत यह बानी ऊधो सुनत सिहात ॥ आयसु मांनि सूर प्रभु
जेंहीं नारि मोनि हैं बात ॥ ४ ॥ रा ग टो डी ॥ उपंग सुत हाथ दई कर
पाती ॥ इह कहियों जसुमति मैया सों नहि विसरें हु दिन राती
॥ १ ॥ कहत तब कहां वसुदेव देवकी तुम कुं हम हें जायों ॥ कंस त्रास
सिसु अति हि जांनि कें ब्रज में जाय दुरायों ॥ २ ॥ कहिं है नाय को टि
कोइ बातें काहि बलिराम कन्हाई ॥ सूर काज करि कें कछु दिन

मेंवहुरिमिलेंगेआइ ॥ ३ ॥ राग आसावरी ॥ ऊधोमेरीहूंनीजननीसों
मिलियोंअरुकुशलातकहोगे ॥ वावानंदहिपालागनकहि
पुनिपुनिचरनगहोगे ॥ १ ॥ जादिनतेंमधुवनहमआए सोधनहि
तुमलीने ॥ देंदेंसोंहूकरोगेहित कीरिकहांनिठुराईकीने ॥ २ ॥ य
हूकहियोंवालिरांमस्यांमअवआवेंगेदोउभाई ॥ सूरस्यामकी
दुखमिटेंनहियहेंकहोंजदुराई ॥ ३ ॥ राग गौरी ॥ पातिलिखिऊधो
करदीनी ॥ नंदजसोधहिहितकरिदीजोंहमेउपगसुतलीनी
१ मुखवचननिकहेंहेंतुजनायोतुमहोहेतुहमारे ॥ वालजानि
पठाएनृपहरनेंतुमप्रीतिपालनहारे ॥ २ ॥ कुविजासुन्योजानव्र
जऊधोमहलनहिंलियोंवुलाई ॥ सेंहथपातिलिखीराधाकोंगो
पिनसहितवनाई ॥ ३ ॥ मोकोंतुमअपराधलगावतिकृपाभईविं
कुशास ॥ तुकनिकहांमोपरव्रजनारी सुनहुनसूरजदास ॥ ४ ॥ रा
गगौरी ॥ जदुपतिसखाऊधोजानि ॥ लगेलागेमनमनयहसोचन
भलीनहींयहवांनि ॥ १ ॥ अंसभुजधरिहोतनगाढनिठुरजैसोंकाठ
संगाउहनहिंवनननीकोंहोइकेसेंहसोठ ॥ २ ॥ जोवकहेतोकरेकों
यहनीरिहेंअरुमोहि ॥ देषिवेकोंपरमसुंदररहतनेंननिजोहि
३ ॥ कनककलसअपानजैसेंतेसोईयहरूप ॥ सस्केसेंहुप्रेम
पावेंतवहिंहोइस्वरूप ॥ ४ ॥ राग धनाश्री ॥ जदुपतिजानिउद्धवरी
ति ॥ जेहिप्रगटनिजसखाकहियतकरतभावअनीति ॥ १ ॥ वि
रहदुखसुखजहांनहीतहांनउपजेप्रेम ॥ रेखनरूपनवरनजा
केंयहधरयोंयहनेंम ॥ २ ॥ त्रगुनतनकरिलखतहमकोंब्रह्म
मांनतिऔर ॥ विनागुनक्योंपुहमिउधरेंयहकरतमनडोर
३ ॥ विरहरसकेंहिमंत्रकहियेंक्योंचलेंसंसार ॥ कछुकहतनइह
एकप्रगटअतिभरयोंअहंकार ॥ ४ ॥ प्रेमभजननेंकयाकों
जायकोंसमुझाय ॥ सूरप्रभुमनइहेंआनीव्रजहिंदेउपठाइ ॥ ५
राग धनाश्री ॥ नंदगोपसवसखानिहारतजसुमतिसुतकोंभा
वनहीं ॥ उग्रसेनवसुदेवउपंगसुतसुफलकसुतवैसेंहीसंगा
हीं ॥ १ ॥ वहीमनन्यारोंहूकीनोगोपनमनयहव्यापिगई ॥ वो
लिउठेइहिअंतरमुखहरिनिठुररूपजेव्रसमर्ई ॥ २ ॥ प्रतिप्रति
पालकियोंतुमहमरोंसुनतनंदजियफरुकिरहे ॥ सूरदासप्र
भुनेंवसुदेवसोंकीनीमोसोंवचनकहे ॥ ३ ॥ राग धनाश्री ॥ काहि
कहतप्रतिपालकियो ॥ मोसोंकहतहोहुजिनिएसीनेंनटरत

नहिं भरन हियौं ॥ १ ॥ मैं कित नंद त्रास बानी सुनि बिलम करत कह
बौन चले ॥ कंस मारि रजधानी दीनी ब्रज तें बहुरें आनि मिले
२ मनहीं मन एसी उपजावत बेउत ब्रम सब्रम सरसी ॥ सूर पिता
कौं नात कबन है रहत सबनि में बेपरसी ॥ ३ ॥ रा ग धना श्री ॥ कुबि
जासी भागिनि कौ नारि ॥ कंसहिं देन लए जात हीं बीच मिलि
ताकौं दई नारि ॥ १ ॥ क्रपा करि पटरानी कीनी कुब्जा मिटायौ डारि
यही बात मधुपुरी जहां तहां दासी कहत डरत जिय भारि ॥ २ ॥ कु
बिजा भूलि कहत जो कोऊ ताहि उठति सब दें हें गारि ॥ सुनहु सु
र रानी सुनि पावें त्रास होत जिनि डारें मारि ॥ ३ ॥ रा ग रा म कली ॥ ह
रि की क्रपा जो पर होइ ताही ॥ कछु वह बहुत नाहिं हृदय रे खोजा
हीं ॥ १ ॥ कहां संसय करत या कों कितिक है यह बात ॥ असुर सें
न संघारि डारें भगत जन सों नात ॥ २ ॥ हरन करन लई हैं समरथ
कहौं बारंबार ॥ सूर हरि की क्रपा तें खल तरि गए संसार ॥ ३ ॥ रा
ग रा म कली ॥ कुबिजा तौ बड़भागिनि है ॥ करुनाकरि हरि जाहि नि
बाजी आपु रहे तहां रानी है ॥ १ ॥ पूरब जप करि केल मन लागी म
न के भाव पुरावत हैं ॥ मथुरा नर नारी न सुख बानी रहौ मंहां तहां
जैजै हैं ॥ २ ॥ देत बिना मत रमत हां आये यह लीला जाने पेहैं ॥ सू
रदास प्रभु भावहि के बस मिलत क्रपा करि अति सुख हैं ॥ ३ ॥ रा
ग बि लाव ल ॥ तब बोले हरि नंद सों मधुरे कर बानी ॥ गर्ग बचन
तुम सें कही नाहिं निबहीं जानी ॥ १ ॥ मैं आयौ संसार में भुव भार उ
तारन ॥ तिन के तुम धनि धनि कहौं कीनो प्रतिपारन ॥ २ ॥ माता
पिता तुम्हरें नहीं तुम ते अरु कोऊ ॥ एक बेर ब्रज लोग सों मिलि
हौं सुनि सोऊ ॥ ३ ॥ मिलन नाहिं लन रिन च्यारि को तुम तौ सब जांन्यों
मो कों तुम अति सुख दयौ सो कहां बखांन्यौं ॥ ४ ॥ मथुरा नर नारी
सुनें ब्याकुल ब्रजवासी ॥ सूर मधुपुरी आय के एई अबिनासी
५ ॥ रा ग सो र ठि ॥ गोपाल राइ हौं न चरन तजि जैहौं ॥ तुमहिं छांडि
मधुबन मेरे मोहन कहां जाय ब्रज लेंहों ॥ १ ॥ कहिहों कहां जाय
जसुमति सों जब सुनि भूप उठि एहों ॥ प्रांत समय दधि मथन छां
डि कें काहि कलेऊ देहौं ॥ २ ॥ बारह बर्ष दई हम ढीठौ यह प्रताप
बिनु जांनौं ॥ अब तुम प्रगट भए बसुधौ सुत गरगा बचन परवां
नौं ॥ ३ ॥ रिपु हति काज सबे हम कीनौं कत आपदा बिनासी ॥ डार
नदियो कमल कर ते गिरि दबि मरते ब्रज बासी ॥ ४ ॥ बासर संग

सखासबलीनेटेरितुधेनुचरेहों ॥ कौरहिहूंमेरेप्रांनहरसखिजु
जवसंध्यानहिंएहों ॥५॥ ऊरधस्वांसकायगतिछांकीनेननी
रहाय ॥ सूरनंदविछुरेकीवेदनिमोपेंकहीनजाय ॥६॥१०॥ जैत
श्री ॥ कुवरीकोंन्याबरीजासोंगोविंदबोलें ॥ वेत्रैलोकनाथ
चाहतहेंकाहिनएडीवेंडीडोलें ॥१॥ जिनमोंकृपाकरीनंदनंद
नसोंकौनकरतकलोलें ॥ कपोंकारोंकुटिलअतिकान्हस्रे
तसंग्रपिनखोलें ॥२॥ हमबौरीवकवादिकरतहेंहृथाआरति
यहजोलें ॥ दीपकदेखिपतंगजरतहेंज्योंमीनजलबिनुभोलें
३॥ प्रीतिपुरातनपारिइनसोंनेहकसोंटीतोलें ॥ सूरस्यांमउपह
सचल्योब्रजआपआपनेटोलें ॥४॥११॥ रामकली ॥ ऊधोंजाके
माथेंभाग ॥ अबलनिजोगसिखावनआएचेरिहिंचपरिसुहा
ग ॥१॥ आएवबनयोगकीवेलीकाटिप्रेमकोंबाग ॥ सुन्याही
कसिआएपटरानीहमहिदेंनवैराग ॥२॥ जोडीकीरोरीबाजी
जगहरिदासीकोंराग ॥ कुबिजाकमलनेनमिलिखेलनवार
हमासीफाग ॥३॥ मिल्योंमुहायोंसाषस्यांमकहेंकहांहसकह्यं
काग ॥ सूरदासप्रभुऊषधांडिकेंचतुरचोरनआग ॥४॥१२॥ ध
नाश्री ॥ हरिसुतहरिकेसुतनआहि ॥ इहांकोकरेंकौनकीबातें
ग्यानध्यांनसुमिरोंकोकाहि ॥१॥ कोमुखसमरतासुनुवतीकों
जिनिनिंकेसहने ॥ हमरेंतोंगोपातिसुअधिपतिवनितात्रोरनि
ते ॥२॥ मोरजरंधरूपविकारीचितेचितेंहरिहोत ॥ कवहूंकेक
रनसमेतिलेंनेंकनमालकेनोन ॥३॥ तारिपकमेंसंगसिललीनें
एआवततनदोष ॥ सूरदासस्वामीमनमोंहनकनउपजावत
दोष ॥४॥१३॥ धनाश्री ॥ काहिकेंनाहिनसुखपायोंबालगोपालके
राज ॥ ऊधोंआपसंपदाउनकीहूंसबइनकेकाज ॥१॥ धनुषतोरि
गजमारिमल्लमषिनिडरिकियोंजदुबंस ॥ ऊकोंजायत्रोरसु
खदीनोंकरखिकेसगाहिकंस ॥२॥ कुबिजारूपदेखिसुखदीनों
सबकीनेमनकांम ॥ उग्रसेनवसुदेवदेवकीआनेअपनेधां
म ॥३॥ दिनप्रतिदीनदयालकृपानिधिवहेंहमारेंआस ॥ सूर
स्यांमहरिहीकृपाकरिइननिनेंननिकीआस ॥४॥१४॥ धनाश्री
अवहरिकौनकेरसगीधे ॥ संकतिनाहिनिरषतिऊधोंससि
यहरीज्योंवीधे ॥१॥ बरतहीनअबलहुलाईतजिसकलकुलकां
नि ॥ जमअंधकारछांडिएगाहिलवानलकुटविनपांनि ॥२॥ जब

सू.सा नधूपिनिर्गुनभएसबनरगुनेकोअभिलाख॥ मनमोंहूनसोहून
२१५ नहींदेषेंकैसेंरहूंसाख॥३॥ बिनाबरनसरोजदेखोंबरनकुसु
दनिवास॥ बिनापुष्पसनेंनकिहिबिधिजीवेंसूरजदास॥४॥ रा
बिलावल॥ माधोंइतनेजतननतवकाहिकिये॥ अपनेजांनिजानि
जदुनंदन अनेकभयसोंराखिलिये॥१॥ अघबकवृषभबरुनवं
धनतेंब्यालिदावानलजीतिपिये॥ इंद्रमांनमेंग्योगिरिकरध
रिछिनुछिनुप्रतिप्रानंदहिये॥२॥ हरिबिछुरनकीप्रीतिनजानी
बचनमांनिहूंमवारिजिये॥ सूरदासअवबालालनबिनुक
हिनसकतएकवीनहियें॥३॥ राग बिलावल॥ परेखोंकोंनबो
लकोंकीजें॥ नाहूरिजिंांतिनपांतिहमारीकहांमांनिदुषलीजें
॥१॥ नाहिनमोरचंद्रिकामाथेंनाहिनउरबनमाल॥ नाहिंसोभित
पुहूपनकेभूखनसुंदरस्यांमतमाल॥२॥ नंदनंदनगोपीजन
बल्लभकाहेकोंकांन्हकहावें॥ बासुदेवजादोंकुलदीपकबंदी
जनबिरमावें॥३॥ बिसरिगयेंगहूवनकोंसतोरहोंनएकोंअंग
सूरस्यांमकहागईसगाईबासुरलीकेसंग॥४॥ राग बिलावल
एसेंमाईहमनहिंजानेस्यांमहिसिवाकरतकरीउन एसीजा
तिगएकुलनांमहिं॥१॥ तनमनप्रीतिलायजोंतोरेंकोंनभला
ईतांमहिं॥ वेकहांपीरपराईजांनेंनुवथआपनेकांमहिं॥२॥ ना
गरिनारिदतेवेंनाहिंरतिकुबिजाकेठांमहिं॥ औरनारिहरि
कोंनमिलीवहुंकहूंगावाईलाजहिं॥३॥ जैसेंकागहंसकीएक
गतिलहसुतसंगकपूर॥ जैसेंकंचनकोंचबरावरिगेरूकाम
सिंदूर॥४॥ भोजनसाथसुद्रबाह्मनकेतेसोईउनकेसाथ॥ सुन
हुसूरहरिगायचरैया अबभएकुबिजानाथ॥५॥ राग नट॥ हरि
हीकेपिकुबिजाढीठ॥ दहलकरतिमहलमहलनिसंगखेठीपी
ठ॥१॥ नेंकहीमुखपायभूलीअतिहीगईगरवाय॥ जातआवत
रहीकोउयहेंकहें पठाय॥२॥ बेदिनागएभूलिताकोंदिवसदस
कीबात॥ सूरप्रभुदासीलुभानेब्रजवधूअनखात॥३॥ राग न
ट॥ देखोंयाकुवरीकेकांम॥ अबकहावतिहैंपटरानीबंडेराजा
स्यांम॥१॥ कहतनहिंकोउउनहिंदासीवेनहींगोपाल॥ वेकहं
नृतराजकंन्यावेभएभूपाल॥२॥ पुरुषकोंरीसबेंसोहेंकूवरी
केंहिकाज॥ सूरप्रभुकोंकहांकहियेंबोचपाईलाज॥३॥ राग नट
यहसुनिहमहिंआवतिलाज॥ जायमथुराकेंसमास्योंकूवरी

केकाज॥४॥ जोगपुरमेंवसतएसेसवनियहेंसुहात॥ कवहुकोउ
कहतनाहीस्यामश्रागेवात॥५॥ कहांहमसोवैरुकीनोकहंश्रा
पुनहोत॥ तुमवडेजरुवंसराजामिलेदासीगोत॥६॥ श्रजहुकहेंसु
नायकोऊकरेंकुविजादूरि॥ सूरदाहनिसरतिगोपीकूवरीकेभू
रि॥७॥ रा०॥ न०॥२॥ भामिनिकुविजासोंरंगराते॥ राजकुमारिहीजोपें
तैसोंनहीश्रंगसमाते॥१॥ रीझेजायतनकचंदनलेंमधुवनमार
गजाते॥ ताकीकहांवडाईकीजेंएसेरूपलुभाने॥२॥ एश्रहीरवे
कुस्मकीदासीजोरीकरीविधाते॥ ब्रजकीवनितात्यागिसूरप्र
भुवूझीउनकीवाते॥३॥ रा०॥ ध०॥ श्री॥ तवतेंमेटेसवश्रानंद॥ याब्रज
कोंसवभागसंपदालेंजुगएनंदनंद॥१॥ धेनुनहीएश्रवतिरुचि
मुखचरतनाहित्रनकंद॥ विषमवियोगदहतउरसजनीवाढि
रहेदुखदंद॥२॥ शीतलकोंनकरेंरीमाईनाहिंइहांहरिचंद॥ सूर
स्वांतिकीवूंदश्रासलगिसूकतरंगीकंद॥३॥ रा०॥ म०॥ गोपालहि
पावेंकेहिंदेश॥ सींगीमुद्राखपरलेंकरिहोंजोगनिकेभेष॥१॥
जारोंभस्मचढायविरहिनीकरोंगुरुउपदेस॥ सूरस्यामविनुह
महेंएसीजैसेंमनिविनुसेस॥२॥ रा०॥ का०॥ सो०॥ हंसकागकोसंग
भयो॥ कहांगोकुलकहांगोपमोपिकाविहियहसंगदयो॥१॥ जै
सेंकंचनकांचसंगफलचंदनसंगकुगंधि जैसेंखरीकपूरएक
एकसमयहभईएसीसोधि॥२॥ जलविनुमीनरहतकहुंन्यारी
सोईहरितचलावत॥ जवव्रजकीवातेंएकहियतनवहितवहि
उचटावत॥३॥ याकोंज्ञानथांपिव्रजपठऊंश्रोरनयहीउपाव
सुनहुसूरयाकोंश्रवपठऊंइहेंवनेंगेदाव॥४॥ रा०॥ का०॥ सो०॥
याकोंश्रोरकछुनउपाय॥ मेरोंप्रगटकह्योंनहिंवदिहेंव्रजहीदे
उपठाय॥१॥ गुपतप्रीतिजुवतिनकीकहिकेंयाकोंकरोंमहंत॥
गोपिनकाजप्रमोदनकारनजैहेंसुननतुरंत॥२॥ प्रीतिप्रभिमा
नकरेंगोमनमेंजोगिनिकीयहभांति॥ सूरस्यांममनयहनिह्वें
करिवैठतहेंमिलिपांति॥३॥ रा०॥ न०॥२॥ तवहीयहकहोगेयाहि
मोहिपरवतगोपिकनपेंहरखद्केंकेनाहिं॥१॥ जोगकोंप्रभिमा
नकरिहेंव्रजहिजैहेंधाय॥ कहेंगोमोहिस्यांममांननकरोंचर
चतुराय॥२॥ श्रायगयोतेंहिसमयऊधोसखाकहिलियोवोलि
केंसंधरिभुजभंएठाडेकरतेंवचननिठोलि॥३॥ वारवारउसास
डारतकहतव्रजकीवात॥ सूरकेप्रभुवचनमुनिसुनिउपगसु

सू.सा. तसुसिषांत॥४॥ राग कल्याण॥ ऊधौंमन अभिमांन बढायौ॥ जदुपति
२२६ जोगजांनि जिय सांचौं नैंन अकास चढायौ॥१॥ नारिनकौं मोकौं
पठवत हौ कहत सिखावन जोग॥ मन ही मन अब करत प्रसंसा
य है मिथ्या सुखभोग॥२॥ आयसु मांनि लियौं सिर ऊपर प्रभु आ
ग्या परवांन॥ सूरदास प्रभु पठवत गोकुल मैं क्यौं कहौं कि आंन
॥३॥ राग कान्हरौ॥ तुम पठवत गोकुल कौं जैहौं॥ गदगद बचन कह
त मुख प्रफुलित बारबार समुझै हौं॥१॥ आलस नहीं करौं तुव का
रनकौं न काज पुनि लैहौं॥ यह मिथ्या संसार सदाई यह कहिकैं उ
ठि ऐहौं॥२॥ सूरदिनाकैं ब्रजजन सुखकैं आय चरन पुनि गैहौं॥३
॥ राग गौरी॥ ऊधौ ब्रज जिनि गहरु लगावहु॥ तुम ब्रजनारि जांनि म
न सकुच न कहियौ जोग सुनावहु॥१॥ बांनी कहत समुझि पहलैं
हैं कही हमारी मांनौं॥ विरह सहत यह सुनत तबु मैं हैं मांनौं अनल
हि पांनौं॥२॥ अबही जाहु विकल सब गोपी नैंन बचन करि पोष
हु॥ सूर नंद बाबा अरु जसुमति जननि भलैं संतोषहु॥३॥ राग गौ
री॥ गहरु जिनि लावहु गोकुल जाय॥ तुमहि बिना ब्याकुल हम
द्वै हैं जदुपति करि चतुराय॥१॥ अपनौं ईरषा तुरत मगायौं दियौ
तुरत पलनाइ॥ अपनौं मुकुट पीतांबर अपनौं देन सबैं सुखपाइ
॥२॥ सूरस्यांम तर रूप उ सुत भगुपर एक बचाउ॥ अपने ही
अंग भूषन करिकैं आपुन हि पहिराइ॥३॥ राग बिहागरौ॥ स्यांम
कर पत्र लिखि बनाइ॥ नंद बाबासौं बिनय करि कर जोरि जसु
मति माइ॥ गोप ग्वाल सखानि कहि मिलि मिलन कंठ लगाइ
और ब्रजनर नारि जे हैं मांन प्रीति जनाइ॥२॥ गोपिनि ही प्रीति
कनि लिखि भाव जोग जनाइ॥ सूर प्रभु मन और यह कहि प्रेम
लेत दृढाय॥३॥ राग केदारौ॥ बिधना यह हैं लिष्यौ संजोग॥ कहां तें
मधुपुरी आए तज्यौ माखन भोग॥१॥ कहां वे ब्रजके सखा सब
कहां मथुरालोग॥ देवकी बसुदेव सुत सुनि जननि करि हैं सो
ग॥२॥ रोहिनी माता कृपा करि उछलि लेती रोग॥ सूर प्रभु मुख य
ह वचन कहि लिखि पठायौ जोग॥३॥ राग बिहागरौ॥ ऊधौं जात
ब्रजहि न सुनें॥ देवकी बसुदेव सुनि कैं हदै है तगनें॥१॥ आपसौं
पाती लिखी कहि धनि जसौमति नंद॥ सुत हमारौ पालि पठयौ
अति दियौ आनंद॥२॥ आय कैं फिलि जाय कतहुं न स्यांम अरु
बलि राम॥ यहौं कहति पठाय हौं अब तब हितन बिश्राम॥३॥

बालसुखसबतुमहिलूट्योमोहिमिलेकुमार॥सूरयहउपकार
तुमतेंकहतबारंबार॥४॥रागपरज॥कहांसुखब्रजकोसोसंसार
कहांसुखदवंसीवटजमुनायहमनसदांविचार॥१॥कहांवना
धामकहांराधासंगकहांसंगब्रजवांम॥कहांलतातरुतरुप्र
तिवृंदतिकुंजकुंजवनधांम॥२॥कहांविरहसुखविनगोपिनसं
गसूरस्यांममनकांम॥३॥रागपरज॥बहुसुखकहोंकाकेसाथ
कहांनंदकहांजसोमतिकहांराधानाथ॥१॥भावजनविनुनहीं
वनिसुखकहांप्रेमरुजोग॥कागहंसहिसंगएसेंकहांदुखकहां
भोग॥२॥जगतमेंयहसंगदेखोंवचनप्रतिकहिथलेखि॥सूरब्र
जकीकथाकासोंकहेंइहकरिदेखि॥३॥इतिश्रीदशमस्कंधेमथु
रालीलासंपूर्णम्॥अथप्रभुजीकेवचनउद्धवप्रति॥रागसारंग॥पहि
लेंकरिपरनामनंदरायसोंसमाचारसबदीजों॥औरवहांवृषभान
गोपसोंजायसकलसुधिलीजों॥१॥श्रीदामाआदिसकलग्वालनि
मेरोहूंतोंभेटिबो॥सुखसंदेससुनायहमारोगोपिनकोंदुखमेटि
बों॥२॥मंत्रीएकवनबसतहमारोताहिमिलेंसचुपाइबों॥साव
धानह्वेंमेरोहूंतोंताहीमाथोंनाइबों॥३॥सुंदरपरमकिसोरवय
क्रमचंचलनेंननविसाल॥करमुरलीसिरमोरपंखपीतांवरउरव
नमाल॥४॥जिनिडरपियोतुमसघनवनमेंब्रजदेवीरखवार॥वृं
दावनसोंवसतनिरंतरकबहुनहोतनियार॥५॥ऊधोंप्रतिसब
कहीस्यांमनअपनेमनकीप्रीति॥सूरदासप्रभुकृपाकरियठये
पहेंसकलब्रजरीति॥६॥रागमारु॥कहियोंनंदकठोरभये॥हम
दोऊवीरडारिपरघरमानोंथातीसोंपिगये॥१॥तनकतन
कतेपालिबडेकीयेबहुतेंसुखदिखराये॥गोचारनकोंचलतहम
हमारेपाछेंकोसकधाये॥२॥यहांवसुदेवदेवकीहमसोंकह
तअपुनेजाये॥बहुरिविधाताजसुमतिजूकेंहमनहिंनगोदखि
लाये॥३॥कोनकाजयहराजनगरकोकोसुखसोंसुखपाये॥सू
रदासब्रजसमाधानकरुआजुकाल्हिहमआये॥४॥रागविला
वल॥तबहिंउपंगसुतआयगये॥सखासखाकछुअंतरनाहीं
भरिभरिअंकलये॥१॥अतिसुंदरतनस्यांमसरीषोदेखतहरि
पछिताने॥एसेकूंवेंसीसुधिहोतीब्रजपठवततबआने॥२
याआगेंरसकाव्यप्रकासेंजोगवचनप्रगटावें॥सूरज्ञानदृढ
याकेहिरदेंजुवतिनजोगसिखावें॥३॥रागविलावल॥हरिगो

सू.सा. कुलकी प्रीति चलाइ ॥ सुनहु उपंगसुत मोहि न विसरत ब्रजवासी
२१७ सुखदाय ॥ १ ॥ यह चित होत जाउ में अबही यहां नहीं मन लागत
गोपग्वाल गाय बन चारत अति दुख पायो त्यागत ॥ २ ॥ कहं मा
खन चोरी कहां जसुमति पूत जेंवहु कहि प्रेम ॥ सूरस्याम के बचन
हसत सुनि व्यापत अपने नेम ॥ ३ ॥ ए ॥ राग कल्याण ॥ जदुपति लख्यो
तेहि मुसिक्यात ॥ कहत हम मन रही जोई सोई भई यह बात ॥ १ ॥ ब
चन परगट करन लागे प्रेम कथा चलाइ ॥ सुनहु ऊधो मोहि ब्रज
की सुधि नहीं विसराइ ॥ २ ॥ रैनि सोवत चलत जागत लगत मन
नहिं आंन नंदजसुमति नारि नर ब्रज तहां मेरो प्रांन ॥ ३ ॥ कहत ह
रि सुनु उपंगसुत यह कहत हों रसरीति ॥ सूर चित तें टरत नांही
राधिका की प्रीति ॥ ४ ॥ राग सारंग ॥ सखा सुनो मेरी एक बात ॥ वह
लतागान संग गोपी सुधि करत पछितात ॥ १ ॥ कहां वह वृषभान
तनया परम सुंदर गात ॥ सुरति आएं रास रस की अधिक जिय अकु
लात ॥ २ ॥ सदा हितु यह रहत नाहीं सकल मिथ्या जात ॥ सूर प्रभु
यह सुनो मोसों एकही सों नात ॥ ३ ॥ राग गौरी मलार ॥ ऊधो मन पहि
हुचें जानों ॥ मन क्रम वचमें तुम्हें पठावत ब्रज कों तुरत पलानों ॥ १ ॥
पूरन ब्रह्म सकल अविनासी ताके तुम हो ज्ञाता ॥ रेख न रूप जा
ति कुल नाहीं जाके नहिं पितु माता ॥ २ ॥ यह मत दै गोपिन कहुं आं
वहु बिरह नदी में भासति ॥ सूर तुरत यह जाय कहो तुम ब्रह्म बिना
नहिं आसति ॥ ३ ॥ राग नट ॥ ऊधो वेगि ही ब्रज जाहु ॥ सुरति संदेस सु
नाय मेंटो वल्लभिन को दाहु ॥ १ ॥ कांम पावक तूल तन में बिरह स्वा
स समीर ॥ भसम नाहिन होन पावत लोचनन के नीर ॥ २ ॥ अजों
लों यह भांति ह्वै है कछुक सजग सरीर ॥ एते पर बिनु समाधाने
क्यों धरें तिय धीर ॥ ३ ॥ कहो कहां बनाय तुमसों सखा साधु प्रवीन
सूर सुमति विचारिये क्यों जियें जल बिनु मीन ॥ ४ ॥ राग सारंग ॥ पथिक
सदेसो कहियो जाय ॥ आवहिंगे हम दोनों भैया मैया जिनि अकु
लाय ॥ १ ॥ याकों बिलगु बहुत हम मान्यो जो कहि पठयो धाय ॥ क
हं लों कीरति मानिये तिहारी बडे किये पै प्याय ॥ २ ॥ कहियो जाय
नंद बाबा सों अरु गहि पकरेहु पाय ॥ दोऊ दुखी होन नहि पावहिं धू
मरि धौरी गाय ॥ ३ ॥ जद्यपि मथुरा बिभौ बहुत है तुम बिन कछु न सु
हाय ॥ सूरदास ब्रजवासी लोगनि भेटत हृदौ जुडाय ॥ ४ ॥ ए ॥ राग सारं
ग ॥ नीके रहियो जसुमति मैया ॥ आवहिंगे दिन चारि पांच में हम

हलधरदेऊ भैया॥१॥नाहिनतेंहमतुमतेंबिछुरेकाहुनकह्योंक
न्हैया॥कबहूंग्वालनकियोंकलेवामांझनपीनोंघैया॥२॥वंसीवेंनु
सभाहिराखियोंअोरुअवेरसवेरों॥मतिलेंजाइचुरायराधिकाक
छुकखिलोंनामेरो॥३॥कहियोंजायनंदबाबासोंनिपटनिठुरजि
यकीनों॥सूरस्यांमपहुचायमधुपुरीवहुरिसंदेसोनलीनो॥४॥रा
ग॥कान्हरा॥ऊधोंमनअभिलाखबढायो॥जदुपतिजोगजानिजि
यसांचोंमेंनअकासचढायों॥१॥नाहिनपेमोकोंपठवनहोंकह
तसिखावनजोग॥मनहीमनअवचकरतप्रसंसाहेंमिथ्यासु
खभोग॥२॥आयसुमांनिलियोंसिरऊपरप्रभुआज्ञापरमांन॥
सूरदासप्रभुपठवतगोकुलमेंकोंवकहोंकिआंन॥३॥राग॥मलार
हैंकोईवेंसिहिंअनुहारि॥मधुवनतेंआवतसखीरीचितोंतु
नेंननिहारि॥१॥माथेंमुकटमनोहरकुंडलपीतवसनरुचिका
रि॥रथपरवेंठिकहूनसारथिसोंव्रजतनवांहपसारि॥२॥जानति
नाहिनपहिचाननिहुंमानोवीतेजुगच्यारि॥सूरदासस्वामीकेंवि
छुरेंजेसेंमीनविनुवारि॥३॥राग॥तोडि॥देखेंनंदद्वाररथठाढो॥व
हुरिसखीसुफलकसुतआयोंपरयोंसंदेहउरगाढो॥१॥प्राणहम
मारेंतवहिंगयेलेंअवकिंहकारनआयों॥जांनतिहुंअनुमांन
सखीरीकृपाकरनउठिधायो॥२॥इतनेंअंतरआंनिउपगसुत
तेहिंछिनदरसनदीनों॥तवपहचांनिसखाहरिजूकोंपरमसु
चितमनकीनों॥३॥तवपरनांमकियोंअतिरुचिसोंअोरसवहि
करजोरें॥सुनियतहि तेसेंदेखेहेंपरमचतुरमतिभोरें॥४॥ति
हारोदरसनपायआपनोंजन्मसुफलकरिजान्यो॥सूरऊधों
सोंमिलतभयोंसुखज्योंझखपायोपान्यों॥५॥राग॥सोरठि॥कहोंहो
कहांतेंआयेहों॥जांनतिहोंअनुमानमनोंतुमजादोंनाथपठा
येहों॥१॥वैसेंईवरनवसनपुनिवेंसेंईतनभूषनसजिल्याए
हो॥सरवसुलेंतवसंगसिधारेअवकापरपाहिरायेहो॥२॥
सुनहुमधुपएकोंमनुसवकोंसोतोंउहांलेंछायेहो॥मधु
वनकीमानिनीमनोहरतहींईजाहुजहांभायेहो॥३॥अवयह
हकोंनसयानपव्रजपरकाकारनउठिधायेहो॥सूरजहांलों
स्यांमगांतहेंजांनिभलेंकरिपायेहो॥४॥राग॥नट॥ऊधोंकोंउप
देससुनोंकिनिकांनदे॥सुंदरस्यांमसुजानपठायोंमांनदें॥१॥
कोऊआयोंइतअोरजितेनंदसुवनसिधारे॥वहहैंवेंनधुनि

सू॰सा॰ हौयमनोंआयेनंदप्यारे॥धाईसबगलगाजिकेंऊधौदेखेजाय
२१८ २ लेंआईब्रजराजमेंहोआनंदउरनसमाइ॥अर्घआरतीतिल
कदूबदधिमाथेंदीनो॥कंचनकलसभराइआनिपरिकर्माकी
नो॥३॥गोपअभीरआंगनभईमिलिबैठेजाइस्वजाति॥जलझारीआ
गेंधरीहोबूझतिहरिकुशलात॥४॥कुशलछेमबसुदेवकुशा
लदेवेकुबिजाऊ॥कुशलछेमअक्रूरकुशालनीकेंबलदाऊ
पूछिकुशालगोपालकीरहीसकलगहिपाय॥प्रेममगनऊधौ
भयेहोदेखतब्रजकीभाय॥५॥मनमनऊधौकहेंइहनबूझियेंगो
पालहि॥ब्रजकोंहेतुबिसारिजोगसीखतब्रजबालहि॥पातीबां
चिनआवईरहेनेंनजलपूरि॥देखिप्रेमगोपीनकोंऊधौज्ञानग
रबगयोदूरि॥६॥तबइतउतबहरायनीरनेंननिमेंसोरख्यो॥कां
नीकथाप्रमोधबोलिसबगुरुसमोरख्यो॥जोव्रतमुनिवरध्याव
हीनरपावहिनहिपार॥सोव्रतसीखोगोपिकाहोछांडिबिषैबि
कार॥७॥सुनिऊधौकेबचनरहीनीचेंदृगितार॥मनोंसुधासोंसी
चिआनिबिषज्वालाजारे॥हमअबलाकहांजांनहीजोगजुगत
कीरीति॥नंदनंदनब्रतछांडिकेंकोलिखिपूजेंभीति॥८॥अबि
गतअगाहअपारआदिअबिगतिहेंसोई॥आदिनिरंजननाम
ताहिरंजेसबकोई॥नेंननासिकाअग्रहेंतहांब्रह्मकोबास॥
अबिनासीबिनसेंनहींहोसहजजोतिपरकास॥९॥घटलागें
ओघूरुकहोंमनकहेंबधावे॥अपनोंघरपरिहरेंकहोंकोघ
रहिंबतावें॥मूरखजादवजातिहेंहमहीसिखवतजोग॥हम
कोंभूलीकहतहेंहोहमभूलीकिधोंलोग॥१०॥गोपिहिंजोभा
योंअंधताहिदृढुलोचनएसे॥ज्ञाननेंनजोअंधताहिसूझेंधों
केसें॥बूझेंनिगमबुलायकेंकहेंबेदसमुझाइ॥आदिअंतजा
केंनहीहोकोंनपिताकोमाइ॥११॥चरणनहींभुजनहींकहों
ऊखलकिनिबांधो॥नेंननासिकामुखनहीचोरिदधिकोंनें
खांधो॥कोंनखिलायोगोदकेकिनकहेंतोतरेबेंन॥ऊधौता
कोंन्याउहेहोजाहिनसूझेंनेंन॥१२॥हमबूझतिसतिभाउन्याउ
तुम्हारेमुखसांचो॥प्रेमनेंमरसकथाकहोंकंचनकोंकांचो॥जो
कोउपावेंसीसदेंताकोंकीजेंनेंम॥मधुपहमारीसोंकहोहो
जोगभलोंकिधोंप्रेम॥१३॥प्रेमुप्रेमसोंहोइप्रेमसोंपारहिंजे
यें॥प्रेमबंध्योंसंसारप्रेमपरमारथपैयें॥एकोंनहिंचोंप्रेमकों

जीवनमुक्तिरसाल॥ सांचौनिहचौंप्रेमकोहेजोरिमिलहिंनंद
लाल॥२४॥सुनिगोपिनुकोप्रेमनेमऊधौकौभूल्यौ॥ गावतगु
नगोपालफिरतिकुंजनिमेंफूल्यौ॥ छिनगोपिनिकेपगधरेंधन्य
तिहारोनेम॥ धायधायद्रुमभेटहीऊधोंछाकेप्रेम॥२५॥धनि
गोपीधनिगोपधन्यसुरभीवनचारी॥ धन्यधन्यसोभूमिजहांं
विहरेंवनवारी॥ उपदेशनआयोहुतौमोहिभयोउपदेस॥ऊधौ
जदुपतिपेंगयेहोंकियेंगोपकोभेस॥२६॥भूल्योजदुपतिनाम
कहतगोपालगुसाईं॥ एकबारब्रजजनाहुदेहुगोपिनाहिखबरा
ई॥ गोकुलकोंसुखछांडिकेंकहांवसेहोआइ॥ कृपावंतहरि
जांनिकेंहेऊधोपकरपाइ॥२७॥देखौब्रजकोप्रेमुनेमुकछुना
हिनभावें॥ उमड्योनेननिनीरवातकछुकहतनआवें॥ सूर
स्यामभूतलगिरेरहेनेंनजलछाइ॥ पोछिपीतपटसोंकहीं
हेआयेजोगसिखाइ॥२८॥ रागधनाश्री॥ हमसोंकहतकोंनकी
वातें॥ सुनिऊधोहमसमुझतनाहींफिरिपूछतिहोंतातें॥२॥
कोनृपभयोकंसकिनिमारयौंकोवसुदेवसुतआहि॥ यहांहम
मारेपरममनोहरजीजतुहेंमुखचाहि॥२॥दिनप्रतिजातसह
जगोचारनगोपसखालेंसंग॥ वासरगतरजनीमुखआवत
करतनेंनगतिपंग॥३॥कोव्यापकपूरनअविनासीकोविधि
वेदअपार॥ सूरवृथावकवादिकरतहोंयाब्रजनंदकुमार॥४॥
रागसारंग॥ तूंअलिकासोंकहतवनाय॥ बिनुसमुझेंहमफिरि
बूझतहेंवारकबहुरोंगाय॥१॥किनवगवनकीनोंसकटनिच
ढिसुफलकसुतकेसंग॥ किनवरजेंकलुटम्यनानापटपहि
रेंअपनेअंग॥२॥ किनहनिधापनिदरिगजमार्यो॥ किनिवेम
ल्लमथिजानें॥ उग्रसेनवसुदेवदेवकीकिनवनिगडहठिभा
नें॥३॥तूकाकीपरतीतिप्रसंसाकोनेंघोषपठायो॥ किनमा
तुलवधिलयोजगतजसुकोंनमधुपुरीछायो॥४॥माथेंमो
रमुकटवनगुंजामुखमुरलीधुनिवाजें॥ सूरदासजसुदाके
नंदनगोकुलकहांनविराजें॥५॥रागसारंग॥ हमतोंनंदघोष
कीवासी॥ नामगोपालजातिकुलगोपकगोपगोपालउपा
सी॥१॥ गिरिवरधारीगोधनचारीवृंदावनअविलासी॥ राजा
नंदजसोदारानीजलधिनदीजमुनासी॥२॥प्रानहमारेपर
ममनोहरकमलनेंनसुखरासी॥ सूरदासप्रभुकहेंकहांलों

सू॰सा अष्टमहासिधिदासी॥१॥ रा॰ केदारो॥ गोकुलसबैगोपालउपासी
२२६ जोगअंगसाधनकोंऊधोतेसबबसतईसपुरकासी॥१॥ जद्य
पिहरिहमतजीअनाथकरितदपिरहतिचरणनिरसरासी
अपनीसीतलतऊंनछांडतजदपिहैससिराहुगरासी॥२॥ का
अपराधजोगलिखिपठवतप्रेमभजनतजिकरतउदासी
सूरदासऐसीकोविरहनिमागतमुकतितजैगुणरासी॥३॥ रा
ग॰ श्री॥ जीवनसुहचाहीकौंनीकौ॥ दरसपरसदिनरातिक
रतहैकान्हपियारेपीकौ॥१॥ नैंननिमूंदिमूंदिकिनदेखौंबंध्यौ
ज्ञानपोथीकौ॥ आछेसुंदरस्यांममनोहरऔरजगतसबफी
कौ॥२॥ सुनोंजोगकहांलोंकीजेजहांज्यानहैजीकौ॥ खाटीम
हीक्योंकहींरुचिमानैसूरखबैयाघीकौ॥३॥ रा॰ काफी॥ आयोघोष
बडोब्योपारी॥ लादिखेपगुणज्ञानजोगकीब्रजमेंआनिउतारी
॥१॥ फाटकदेकरिहाटकमांगतभोरेनिपटसुधारी॥ धुरहीतेंखो
टौखायोहैलयेंफिरतसिरभारी॥२॥ इनकेंकहेंकौनडहकावै
ऐसीकौनअयानी॥ अपनोदूधछांडिकोपीवैखारकूपकौपा
नी॥३॥ ऊधोजाहुसवारइहांतेबेगिगहरुजिनिलावौ॥ मुंहमा
ग्योपैहौसूरजप्रभुसाहुहिआनिदिखावौ॥४॥ रा॰ काफी॥ जोग
ठगोरीब्रजनबिकैहै॥ यहब्योपारतिहारोऊधोऐसेईफिरिजैहै
॥१॥ जापैंलैआएहौमधुकरताकेउरनसमैहै॥ दाखछांडिकेंक
टुकनिबौरीकोअपनेमुखखैहै॥२॥ मूरीकेपातनकेकोऊनाको
मुकताहलदैहै॥ सूरदासप्रभुगुणहिछांडिकेंकोनिर्गुणनि
रबैहै॥३॥ रा॰ नट॥ आयोजोगसिखावनपांडे॥ परमारथीपुरा
ननिलादेंज्योंबनजारेटांडे॥१॥ हमरेगतिपतिकमलनैंनकी
जोगसिखैतेरांडे॥ कहोमधुपकैसेंसमाहिंगेएकम्यांनद्वैषांडे
॥२॥ कहोषटपदकैसेंखइयतहैहाथिनकेसंगगांडे॥ काकी
भूखगईबयारिभखिबिनादूधघृतमांडे॥३॥ काहेकौंझालालै
मिलवतकौनचारतुमडांडे॥ सूरदासतीनोंनहिउपजतध
नियधांनकहूकांडे॥४॥ रा॰ विलावल॥ एअलिकहांजोगमेंनी
कौ॥ तजिरसरीतिनंदनंदनकीसिखवतनिर्गुणफीकौ॥१॥
देखतसुनतनाहिकछुश्रवणनिजोतिजोतिकरिध्यावत
सुंदरस्यामदयालकृपानिधिकैसेंहोबिसरावत॥२॥ सुमिर
मालमुरलीसुरकीधुनिसोईकौतुकरसभूले॥ अपनीभुजा

ग्रीवपरमेलेंगोपिनुकेमुखफूलें॥३॥लोककांनिकुलकोंभ्रम
प्रभुमिलिमिलिकेंघरवनखेली॥अबतुमसूरखवावनआये
जोगजहरकीवेली॥४॥ राग मलार॥ हमरेंकोंनजोगव्रतसाधें
मृगछचभसमअधारिजराकोंकोइतनोंअवराधें॥१॥जाकी
कहूंथाहनहिंपैयेंअगामअपारअगाधें॥गिरधरलालछबी
लेमुखपरएतेवांधकोवांधें॥२॥आसनपवनविभूतिमृगछा
लाध्यांननिकोंअवराधें॥सूरदासमांनिकपरिहरिकेंराखगां
ठिकोवांधें॥३॥ राग धनाश्री॥ हमतोंदुहूभांतिफलपायों॥जोब्रज
नाथमिलैतोनीकोंनातरुजगजसुगायों॥१॥कहांवएगोकुल
कीगोपीवरनहीनलघुजाती॥कहांवेकमलाकेस्वामीसंगमि
लिवैठेएकपांती॥२॥निगमध्यानमुनिग्यानअगोचरतेभयेघो
षनिवासी॥ताऊपरअवसांचुकहोंधोंमुकतिकोंनकीदासी॥३॥
जोगकथापालागेंऊधोंनाकहुंवारंवार॥सूरस्यांमनजिअो
रभजेंजोंताकीजननीछार॥४॥ राग कांन्हरों॥ पूरननारनिनेंन
निपूरी॥तुमकहतअवणनिफुनिसमुझोयेआनियाहीदुखम
रतिविसूरी॥१॥हरिअंतरजामीसवजांनतबुद्धिविचारतवचन
समूरी॥वेरसरूपरतनसागरनिधिकोंपावैकेंखनावतधूरी॥२॥
रहुरेकुटिलचपलमधुलंपटकतवसंदेसकहतकटुकूरी॥कहु
मुनिध्यानकहांव्रजजुवतीकेसेंजातकुलिसकरचूरी॥३॥देखि
प्रगटसरितसागरसरसीतलसुभगस्वादरुचिरूरी॥सूरस्वांति
कोंवूंदवसेविनिचातककवितलागतसवरूली॥४॥ राग धनाश्री॥
हमनेंहरिसवहूंनउदास॥रातीस्वादपिवायअधररसक्योंवि
सरतव्रजवास॥१॥तुमसोंप्रेमकथाकोंकहिवोंमनहुकाटिवोघा
स॥वहिरोंतानस्वादकहांजानेंगूंगोंवातमिठास॥२॥सुनुरीसखी
वहुरिफिरिएहेंवहसुखविविधिविलास॥सूरदासऊधोंअ
वहमकोंभयोंतेरहोमपस॥३॥ राग धनाश्री॥ तेरोवुरोंनकोईमा
नें॥रसकीवातमधुपनीरससुनिरसिकहोयसोजानें॥१॥दादुर
वसेंनिकटकमलनिकेजनमनरसपहिचानें॥अलिअनुरा
गउडतमनवांध्योंकहतसुनतनहिंकांनें॥२॥सरिताचलीमि
लनसागरकोंफूलनमूलद्रुमभांनें॥कायरसकेंलोहतेभाजें
लरैंजोसूरवखांनें॥३॥ राग धनाश्री॥ घरहीकेवाढेरावरे॥नहिन
मीतवियोगवसपरेअनवेउगेंअलिवावरे॥१॥मेंकुमरिजाइ

चरैं नहीं तिनका सिंघ कोइ है सुभाव रे ॥ श्रवण सुधा मुरली के
पोषें जोग जहर न खवावरे ॥ २ ॥ ऊधो हम अहि सी खकहु देहो हरि
आनन तनकाँवरे ॥ सूरजदास कहा लोकीजें थाहीं नाइयां नांवरे
३ ॥ रा ॥ म ॥ ला ॥ र ॥ स्यांम सुख देखें ही परतीति ॥ जो तुम को हित ननक
रिसि खवत जोग ध्यान की रीति ॥ १ ॥ नाहिन कछू सयान ज्ञान में य
हहम कैसें मानहि ॥ कहो कहा कहिये पानभकों कैसें उरमें आ
नहि ॥ २ ॥ यह मनु एकु एक वह मूरति भृंग कीट सम मानें ॥ सूर
सपत दै वूझत ऊधो यह ब्रजलोग सयानें ॥ ३ ॥ रा ॥ ध ॥ ना ॥ श्री ॥ ल
रिकाई को प्रेम कहो अलि कैसें के छूटत ॥ कहा कहो ब्रजनाथ
चरित अंतरगति यों लूटत ॥ १ ॥ चंचल चालि मनोहर चित
वनि वे मुसिकानि मंद धुनि गावत ॥ नटवर भेख नंदनंदन को
वह विनोद गृह वनतें आवत ॥ २ ॥ चरण कमल की सपति कर
ति हों यह संदेस मोहि विषसम लागत ॥ सूरदास मोहि निम
ष न विसरत मोहन मूरति सोवत जागत ॥ ३ ॥ रा ॥ सो ॥ रठि ॥ अप
दी वात तिहारी ऊधो सुनें सु ऐसी को है ॥ हम अहीरि अवला सठ म
धुकर तिन्हें जोग कैसें सोहै ॥ १ ॥ बूचिहि खुभी आंधरी काजर नक
टी पहिरें वेसरि ॥ मुंडली पाटी पारन चाहै कोढ़ी अंगहि केसरि ॥ २
वहिरी सों पति मतौ करै सोउ तर कोन पैं पावै ॥ ऐसो न्याव है ताको
ऊधो जो हमें जोग सिखावै ॥ ३ ॥ जो तुम हम कों ल्याए कृपा करि सिर
वढ़ाय हम लीने ॥ सूरदास नरपि अरु ज्यों विपरि को करहि वंदना
कीने ॥ ४ ॥ रा ॥ वि ॥ गा ॥ रो ॥ वरु वे कुविजा भलो कियो ॥ सुनि सुनि स
माचार ऊधो मो कछुक सिरात हियो ॥ १ ॥ जाकौ गुण गति नाम रूप
हरि हस्यो सो फिरि न दियो ॥ तिन अपनो मन हरत न जान्यो हसि
हसि जोग जियो ॥ २ ॥ सूर तनक चंदन चढ़ाय तन ब्रजपति वस्य
कियो ॥ और सकल नागरि नारिन को दासी दाउ लियो ॥ ३ ॥ रा ॥ सा
रंग ॥ हरि काहे के अंतरजामी ॥ जो हरि मिलत नहीं हैं औसर अव
धि वतावत लामी ॥ १ ॥ अपनी चोप जाय उठि वैठे और निरस वेका
मी ॥ सो कहा पीर पराई जानें जो हरि गरुड़ गामी ॥ २ ॥ आई उधरि
प्रीति कलई सी जैसें खाटी आंमी ॥ सूर इते पर अमखमरत है ऊ
धो पीवत मांमी ॥ ३ ॥ रा ॥ सा ॥ रंग ॥ विलग जिनि मानहु ऊधो प्यारे
यह मथुरा काजर की कोठ जे आवहि ते कारे ॥ १ ॥ कारे भवर सु
फलक सुत कारे कारे रतन पखारे ॥ कारे हू संग अधिक छवि

पजलतिनें हमेंमनिआरे ॥२॥ मोंनहुनीलमाटतेंकांढलेंजमुना
ज्योंपरवारे ॥ वहांज्ञानकीकोंनचलावेसूरस्यांमगुनन्यारे ॥३॥ रा
गदेवगंधार ॥ हरिविनुकेसेंहीव्रजजीजें ॥ पंकजवरखिवरखि
खविउरपरऊपरसारसरिसुजलभीजें ॥१॥ तनपतिकेरिपुसिरल
ढीनिमेषनिचहनमिरीजें ॥ चंद्रचौथिजानगोपिनकोंमधुकरश्रा
फनसुलीजें ॥२॥ वण्यसफ्रजादेउशावकीमिलिनीताकारनमन
छूजें ॥ सूरदासप्रभुकोंजगजीवनवेगोंहरसनदीजें ॥३॥ रागसा
रंग ॥ अपनेस्वारथकोंसबकोउ ॥ चुपकरिरहोंमधुपरसलंपटतु
मदेखेअरुवोउ ॥१॥ औरोंकछुसंदेसकहनकोंकहिपठवोंकिनि
सोउ ॥ लीनेंहेंफिरतजोगजुबतिनकोंवडेसयानेदोउ ॥२॥ तवकनमों
हनरासखिलाईजोपेंज्ञानहुतोउ ॥ अवहमरेजियवेठोयहपर
हेंनीहोयसोहेउ ॥३॥ मिटिगयोमांनपरेखेऊधोहिरदेंहुतोसो
हेउ ॥ सूरदासप्रभुगोकुलनायकचितचिंताअवखोउ ॥४॥ रा
गसारंग ॥ तुमतोंकहतसंदेसोंआंनि ॥ कहांकरोंवानंदनंदनसोंहे
ननहीहितुहांनि ॥१॥ जोगजुगतिकिहिकांमहमारेंजदपिमहा
सुखखांनि ॥ सुनिसनेहस्यांमसुंदरकेहिलिमिलिकेंमनमांनि
॥२॥ सोहतलोहपरसपारसकेंसोसोचनवारेवानि ॥ पुनिवहचों
पकहांतुंवकज्योंलटपटासलपटानि ॥३॥ रूपरहितनिरासानि
रगुननिगामनपरतनजांनि ॥ सूरदासकोंनविधितासोंअबकी
जेंपहिचांनि ॥४॥ रागधनाश्री ॥ हमतोंकांनकोलेकीभूखी ॥ केसें
निर्गुनसुनिहेंहिविरहनिविरहविदूखी ॥१॥ काहियेंकहांय
हांनहिजांनतकाहिजोगुहेंजोगु ॥ पालागोंतुमहीसोंवापुरव
सनवावरोंलोगु ॥२॥ अंजनुअभरनुचीरचारुवरनेकुआपुतन
कीजें ॥ दंडकमंडलभस्मअधारीतोंजुवतिनकोंदीजें ॥३॥ सूर
देखिदृढतागोपिनकीऊधोयहव्रतुपायों ॥ कहेंकृपानिधिहें
कृपालहोप्रेमेंपढनपठायों ॥४॥ रागधनाश्री ॥ अखियांहरिदर
सनकीभूखी ॥ अवइनजोगुसदेसनिऊधोआनिअकुलानीद
खी ॥१॥ वारकवहुमुखफेरिदिखावहुदुहिपेंपिवतपतूखी
सूरसकतिमतिनाउचलावेंज्योंसरितामरसूखी ॥२॥ रागके
दारो ॥ नेहनहोतपुरानोंरेआलि ॥ जलप्रवाहज्योंसोभासागर
तटनवतनअंजनाप्पअहेंवलि ॥१॥ जीवनतेहेंप्रानंदरूपरस
रखिप्रतीतिकोंमीनचढेंपालि ॥ अमीअगाधसिंधुसरभरित

सू॰सा॰ रूपी षत हूंन अघात ए ते जालि ॥३॥ रैनि रैनि वढजनी रनलिनी
२२१ ज्यौं स्याम रंग में नैंन रहे रालि ॥ सूरगोपाल प्रीति जिय जागी छू
टत नाहीं नेंक सली सालि ॥४॥ रा॰ सारंग ॥ नायक हों वूझौं कुसला
त जाके ज्ञान होइ सो मोंनें कहौ तिहारी वात ॥१॥ काहे नाम रूप
फुनि काकौ कारे अंग सखा सव गात ॥ जो पैं भले होंन कहुं काये
तौ कत वदलि सुता लें जात ॥२॥ हमकों जोग भोग कुविजा कों
काके हिये समात ॥ सूरदास सो एसी पति के पालें जिनि ने हीं प
छितात ॥३॥ रा॰ सारंग ॥ कहा लौं कीजें वहुत वडाई ॥ अतिहि अ
गाध अपार अगोचर मंन मा तहां न जाई ॥१॥ जल विनु तरंग भी
ति विनु चित्र नि विन चित नहीं चतुराई ॥ अव व्रज में नई रीति कछू
पहुं ऊधौ आनि चलाई ॥२॥ रूप न रेख वरन वपु जाकें संग न स
खा सहाई ॥ ता निरगुन सों प्रीति निरंतर क्यों निवहें री माई ॥३॥ म
न चुभि रह्यो माधुरी मूरति रोम रोम अरुझाई ॥ हों वलि गई सूर
प्रभु ताके जाके स्याम सदा सुखदाई ॥४॥ रा॰ मलार ॥ काहे कों गो
पीनाथ कहावत ॥ जो पैं मधुकर कहत हमारे गोकुल काहे न आ
वत ॥१॥ सपने की पहिचांनि जांनि कें हमहि कलंक लगावत ॥ जो
पैं स्याम कूवरी रीझे सो कित नाम धरावत ॥२॥ ज्यौं गजराज काज
के औसर औरें दसन दिखावत ॥ कहिवे सुनिवे कों हम ऊधौ सूर
अंत विरमावत ॥३॥ रा॰ मलार ॥ अव कछु नसुरति है तहें राजनि दि
न दस प्रीति करी स्वारथ्य हित रहत आपने काजनि ॥१॥ सवें अयान
भई सुनि मुरली ठगी कपट की वाजनि ॥ अव मन भयो सिंधु के खग
ज्यों फिरि फिरि ॥२॥ कहूं नातें रहे ओता रिजितें सुफलक सुत भाजनि
गोपीनाथ कहाय सूर प्रभु कत मारत हो लाजनि ॥३॥ रा॰ सोरठि
लिखि आई व्रजनाथ की छाप ॥ वांधें फिरत सीस पर ऊधौ देख
त आवें ताप ॥१॥ नोंन नरी जिनें दिनें दिन की घर घर देहि जु थाप ॥ ह
रि आगें कुविजा अधिकारी तातें है यह दाप ॥२॥ आये कहन जो
गु अवराधौ अविगत कथा कें जाप ॥ सूर संदेसे सुनि पै न लागे
कहौं कौन के पाप ॥३॥ रा॰ सारंग ॥ फिरि फिरि कहा सिखावत वा
त ॥ प्रातकाल उठि देखत ऊधौ घर घर मांखन खात ॥१॥ जाकी वा
त कहत हो हमसों सो है हमसों दूरि ॥ इहां निकट जसोदा नंदन प्रा
ण सजीवन मूरि ॥२॥ वालक संग लयें दधि चोरत खात खवावत
डोलत ॥ सूर सीस सुनि चौंकत नावत अव काहे न मुख वोलत ॥३॥

रा॥धना॥श्री॥ अपनेसगुणगोपालेंमाईइहिबिधिकाहेदेत॥ ऊधोकें
इनिर्गुणबातेंमीठीकैसेंलेत॥४॥धर्मअर्थकामनामुनावत
सुखओमुकतिसमेत॥ काकीभूखगईमनलाडूसोदेषहुचितचेत
२ जाकेमुख्यविजितरवरसनतनिगमकहतहैनेति॥ सूरस्यांमत
जिकोंभुसफटकेंमधुपनिहारेहेत॥३॥राग॥सारंग॥ हमकोंहरिकी
कथासुनाऊं अपनोंज्ञानगाथाहीऊधोंमथुराहीलेंगाउ॥१॥ना
गरिनारिभलेंबूझहिंगीअपनेवचनसुभाउ॥ पालागोंइनिबात
निरेअलिउनहींजायरिझाउ॥२॥सुनिप्रियसखास्यांमसुंदरकेजो
पेंजियसतिभाउ॥ हरिमुखअतिआरतिइनिनेंननिवारकबहु
दिखाउ॥३॥जोकोईकोटिजतनकरेंमधुकरविरहिनऔरसुहा
उ॥सूरदासमीनकोंजलविनुनाहिनऔरउपाउ॥४॥राग॥कान्ह
रो॥अलीहोंकैसेंकहोंहरिकेरूपरसहि॥ मेरेतननमेंभेदवहुतवि
धिरसनानजानेंनेंनकीदिसाहि॥१॥जिनिदेखेतेआहिंवचनवि
नुजिन्हेंवचनदरसननतिसहि॥ किनवानीमनिमगिप्रेमजल
सुमनिवासगुणजसहि॥२॥बारबारपछितातइहेंमनकहूंकरों
जोविधिनवसहि॥सूरदासअंगनकीयहगतिकोसमझावेंपट
पसुहि॥३॥राग॥सारंग॥हमारेंहरिहारिलकीलकरी॥मनवचकर्म
नंदनंदनसोंउरयहदृढकरिपकरी॥१॥जागतसोवतसपनेकों
सुखकोंन्हकांन्हयहजकरी॥सुननहिंजोगलागतएसोंअलि
ज्योंकरूईककरी॥२॥सोईव्याधिहमहिंलेंआयेदेखीसुनीनक
री॥यहतोसूरतिनेंदीजेंजाकेमनवचकरी॥३॥राग॥सारंग॥फि
रिफिरिकहांसिखावतमोंन॥ दुसहवचनअलियोंलागतउर
ज्योंजारेपरलोंन॥१॥सिंगीभसमतुचामृगमुद्राअरुअवराध
नपोंन॥ हमअवलोंअहीरिसठमधुकरघरवनजानेंकोंन २
एमनिलेंनिनहीउपदेसोंजिन्हेंआजुसववसोहत॥ सूरआजुलों
सुनीनदेखीपोतसूतरीपोहत॥३॥राग॥जैतश्री॥प्रेमरहितयहजो
गुकोंनकाजगायो॥ दीनननिमोंनिठुरवचनकहेंकहांपायो २
जिनिनेंननिहमकमलनेंनसुंदरमुखहेरों॥ मूंदततनेंनक
हतकोंनज्ञानतेरो॥२॥तामेंकहुमधुकरहमकहांलेंनजांहि
जामेंप्रियप्रांननाथनंदनंदननांहिं॥३॥जिनिकेतुमसखासा
धुवातेंकहुतिनकी॥ जीवेंसुनिस्यांमकथादासीहमजिनकी
४॥अविनासीनिरगुनआनिआनिभाषों॥ सूरदासजियकेजि

उकहांकान्हारखो॥३॥ राग केदारो॥ जिनिचालो अलिबातपराई
नाकोउकहें सुनैया ब्रजमें नई की रतिसबजानि हिराई॥१॥ कहुं
समाचार सुखऊधोकुलकी आरतिबिसराई॥ भलेसंगबसिभ
ईभलीमतिभलेमेलपहचानिकराई॥२॥ सुंदरस्यामबहुकसीला
गतिउपजतउरपरेसपरखराई॥ उलटोन्पाउसूरकेप्रभुकोंबहे
जातमांगतउतराई॥३॥ राग मलार॥ याकीसीखसुनैब्रजकोरे॥ जा
कीरहनिकहनिमिलिअनमिलिकहतसमुझिअतथोरे॥१॥ आ
पुनपदमकरंदसुधारतहदैरहनितबोरे॥ हमकोंकहतबि
रहसमुजेहैं गगनकूपखनिखोरे॥२॥ ध्यानकौंगाउपयारसेंजा
नौंज्ञानविषैरसमोरे॥ सूरसोबहुतकहेंनरहें रसगूलरिकों
फलफोरें॥३॥ राग मलार॥ निरखतअंकस्यामसुंदरकेबारबारलें
लावतछाती॥ लोचनजलकागदमसिमिलिकेंहोइगईस्यां
मस्यामकीपांती॥१॥ गोकुलबसतसंगगिरिधरकेकबहुबया
रिलगीनाहिंताती॥ तबकीकथाकहांकहिऊधोजबहमबेनं
नारसुनिजाती॥२॥ हरिकेलाउगनातिनहिकाहूंनिसदिनसुदि
नरासरसमांती॥ प्रांणनाथतुमकबधोंमिलहुगेसूरदासप्रभु
बालसंघाती॥३॥ राग मारू॥ मोहिअलिदुहूंभांतिफलुहोनि॥ तब
अधरलेतिमुरलीअबभईकूबरीसोति॥१॥ तुमजोजोगमति
सिखवनआयेमसमबढावतअंग॥ इनबिरहिनिमेंकहूंकोंदे
खीसुमनगुनहेंमंग॥२॥ कांननिमुद्रापहरिमेखलीधरेंजटा
आधारी॥ इहांतरलतरिवनकाकेदेखेअरूतनसुखकीसारी॥
३॥ परमवियोगिनिरटतिरैनिदिनधरिमनमोहनध्यांन॥ तुम
तौं चलौबेगिमधुवनकौंजहांजोगकेज्ञांन॥४॥ निसदिनुजीज
तुहैंयाब्रजमेंदेखिमनोहररूप॥ सूरजोगलैंघरघरडोलौलेहु
लेहुधरिसूप॥५॥ राग सारंग॥ बिलगुजिनिमानहुहमरीबात॥
डरपतिवचनकठोरकहतमतिबिनपतिउठिजात॥१॥ जो
कोउकहतजरेअपनेकछुफिरिपाछेंपछितात॥ जोप्रसादपा
वततुमऊधोकृस्ननामलैंखात॥२॥ मनजोतिहारोंहरिचरण
नितरअचलरहततदिनप्रांत॥ सूरस्यांमतेंजोगुअधिककासों
कहिआवतयहबात॥३॥ राग मलार॥ बातननसबकोउसमुझावें
जेहिविधिमिलनिमिलेंवेमाधोसोविधिकोउनबतावें॥१॥ न
दपिजतनअनेकरचीपचिसारिअसनबिरमावें॥ नरपिहो

हमारेनैंनाऔरुनदेष्यौभावैं॥२॥नासरुनिशाप्राणवल्लभतनि
रसनाऔरुनगावैं॥सूरदासप्रभुप्रेमहिलगिकरिकहियेजोक
हिआवैं॥३॥ राग सारंग॥निर्गुणकोंनदेसकोंवासी॥मधुकरहसिस
मुझायसोंहदेंबूझतसांचुनहांसी॥१॥कोहैजनककजननिकोंकहि
यतकौननारिकोदासी॥कैसौबरनभेषहैंकैसोंचाहिरसमेंअभि
लाषी॥२॥पावैंगोंपुनिकियोंआपुनोंजोरेंकहैंगोंगासी॥सुनत
मौंनह्वैरह्योठगयोसोसूरसबैमतिनासी॥३॥ राग केदारो॥नाहिनर
ह्योंमनमेंठौर॥नंदनंदनअछतकैसेंआंनियेंउरऔर॥१॥चलत
चितवतदिवसजागतसपनसोवतराति॥हदेतेंवहस्यांममूर
तिछिननइततउतजाति॥२॥कहतिकथाअनेकऊधोलोकलोभ
दिखाय॥कहांकरोंतनप्रेमपूरनघटनासिंधुसमाइ॥३॥स्यांमगा
तसरोजआननललितगतिमृदुहास॥सूरएसेरूपकारनमर
तलोचनप्यास॥४॥ राग मलार॥ब्रजजनसकललालमब्रतधारी
विनगोपालऔरनहिंजाननआनकहैंविभिचारी॥१॥जोगमो
टसिरबोझआनिकेंकततुमघोषउतारी॥इतनीदूरिजाहुचलि
कासीजहांबिकांतपियारी॥२॥यहसंदेसनहिंसुनैंगिहारोंमंड
लीअनन्यहमारी॥जोपसारीनिबहीहमसोंसोकतजानबि
सारी॥३॥महाप्रभुकतिकोईनहिंपूजैजदपिपरमअपकारी॥सूरह
मस्वामीमनमोहनमूरतिकीबलिहारी॥४॥ राग धनाश्री॥ कहि
लिकहियोऊधोसोंबेरीजाकोंसुनतरहैहरिकेढिगस्यांमसखा
यहसोरी॥१॥कहियेंकहतुरीमेंपन्नातरीनहीसुनतकहनावत
हमकोंजोगसिखावनआएयहतेरेमनआवत॥२॥करनीभ
लीभलेईजानेंकपटकुटिलकीखांनि॥हरिकोंसखानहीरी
माईयहनिहचेंमनजांनि॥३॥कहांरासरसकहांजोगघरइतनें
अंतरभाषत॥सूरसबैंतुमकतभईबोरीयाकीपतिकहराखत
॥४॥ राग कली॥एसेईजनदूतकहांवत॥मोकोंएकअचंभों
आवतयामेंएकहुपावत॥१॥वचनकठोरकहतकहिदाहत
अपनीमहतिगमावत॥ऐसीअप्रकृतिपरतिछांहकोंजुवति
नज्ञानबुझावत॥२॥आपुननिलजरहतनखसिखलोंएतेप
रपुनिगावत॥सूरकरतपरसंसाअपनीहारेहुजीतिकहांव
त॥३॥ राग धनाश्री॥प्रकृतिजोईजाकेअंगपरी॥स्वांनपूंछिकोटि
कजोलागेंसूधीनकाहूकरी॥१॥जैसेंकागभछनहिछांरेंजन

सू॰सा॰ मतनोनधरी ॥ धोयेअंगजातकहूकैसेंकयोकारीकमरी ॥२॥ गोप्र
२२३ हिंसततउदरनहिंपूरनएसीधरानिधरी ॥ भाजिहैंतोंताकोंस
वगोपीमाहिंरहिहैवरुगारी ॥३॥ भूतसमानवतावतहमको
जरहुस्यांमविसारी ॥ सूरदासप्रभुएकअंगपरीफिरहीव्रज
नारी ॥४॥ रा॰ बि॰ ल॰ यहेंसुनतहींनेंनपराने ॥ जवहीसुनत
वाततुअमुखकीरोवततरमतडराने ॥१॥ वारंवारस्यांमघनघ
नतेंभाजतफिरतलुकाने ॥ हमकोंनहिंपतियातिनवहितें
जवव्रजआपुसमाने ॥२॥ नातरुयहांकाहुहमकांछत्तिवेय
हजांनिछपाने ॥ सूरस्यामहमरेसिरधरिहोंतुमहोवडेसयाने
३ ॥ रा॰ ध॰ श्री ॥ नेंननिवहेंरूपजोरेप्यों ॥ तौऊधोयहजीवनज
गकोंसांचसुफलकरिलेख्यो ॥१॥ लोचनचारुचपलखंजनम
नरंजनहृदेंहमारे ॥ रुचिरकमलमृगमीनहमारेसेतअरुन
अरुकारे ॥२॥ रतनजरितकुंडलश्रवणनिवरगंडकपोलनि
झाईं मांनोंरविकरप्रतिविंवमुकरमहंढूंढतयहछविपाई
३ मुरलीअधरविकरभोहिंकरिठाढेहोतत्रिभंग ॥ मुक्तमा
लउरनीलासिखरतेंधसिधरनीपोंगंगा ॥४॥ औरभेषकोक
हैवरनिसवअंगअंगकेसरिसोपि ॥ देषतवनेंकहततसना
सोंसूरविलोकतऔर ॥ रा॰ ॥ नट ॥ नेंननिनंदनंदनध्यांन ॥ त
हंलेउपदेससदीजेंजहांनिर्गुणज्ञांन ॥१॥ पांणिपल्लवरेषगनि
गुनअवधिविधिविधान ॥ एतेपरकहिकहककवचननिहनत
जेसेंप्रांन ॥२॥ चंदकोटिप्रकाशमुखअवतंसकोटिकभांन ॥ को
टिमनमथवारिछविपरनिरखिदृजितदांन ॥३॥ भृकुटकोटि
कुअरुरुचिअवलोकनिसंधान ॥ कोटिवारिजवंकनेंनाकटा
छकोटिकभांन ॥४॥ कंवुग्रीवारलहारसुदारसुदरनिमनिअजान
आजानवाहुउदारअतिकरपदसुधानिधान ॥५॥ स्यांमतनप
टपीतकीछविकरेंकोंनुवखांन ॥ मांनहुंनिर्तततनीलघनमें
तडिततरेतीमांन ॥६॥ रासरसिकगोपालमिलिमधुअधरकर
तीपांन ॥ सूरएसेरूपविनकोईकहांरक्षकप्रांन ॥७॥ रा॰ नै॰ ते॰
श्री ॥ हैंनआएऊधोमततनीकों ॥ आंवहुरीसवसुनहुसयानीलेहु
नजसकोटीकों ॥१॥ तजनकहतअंवरआभूषनगेहनेहसव
हीकों ॥ सीसजटासवअंगभसमअतिसिखवततनिर्गुणफीकों
२ तेहिसरपंजरभयेस्यांमतनअवनहूतडरुजीकों ॥ मेरेजा

नयहैं जुवतिनकों देतफिरत दुखपीरो॥४॥ जाकी प्रकृतिपरी
प्राणनिसों सोचनपोचभलीको॥ जैसें सूरव्यालडसि भाजत
कामुखपरतश्रमीकों॥४॥ राग सारंग॥ प्रीतिकरिदीनीगरेंछु
री॥ जैसें बधिकचुगायकपटकनपाछेंकरतबुरी॥१॥ मुरलीम
धुरचौपकरिकांपोंमोरचंद्रठटवारी॥ बंकविलोकनिलूक
लागिसबसकीनतनहिसभारी॥२॥ तलफतछांडिचलेमधुब
नकोंफिरिकेंलईनसार॥ सूरदासवाकलपतरोवरिफेरिन
बैठीडार॥३॥ राग धनाश्री॥ कोऊब्रजनांहिनबांचतपांती॥ कत
लिखिलिखिपठवतनंदनंदनकठिनविरहकीतांती॥१॥ नैनस
जलकागलअतिकोमलकरअंगुरीअतिताती॥ परसतजरे
बिलोकतभीजेदुहुभांतिदुखछाती॥२॥ क्योंसमुझेंएअंकस
रसुनुकठिनमदनसरघाती॥ देखेंजियहिंस्यामसुंदरकेहरिच
दननदिनराती॥३॥ राग जैतश्री॥ मुकुंदआनिमंदिरमेंमेली॥ स
मुझिसगुनलेचलेनऊधोएसबतुम्हरेंपूजीअकेली॥१॥ कैलैंजा
हुअननहींबेचनकैलैंजाहुजहांविषबेली॥ याहिलागिकोमरें
हमारेंबृंदावनपाइनतरवेली॥२॥ सीसधरेंघरघरकतडोलत
एकमतेसबभईसहेली॥ सूरदासगिरिधरनछबीलोंजिनकी
भुजाअंसगहिमेली॥३॥ राग कान्हरो॥ हमअलिगोकुलनाथ
अराध्यो॥ मनबचक्रमहरिसोंधरिपतिव्रतप्रेमजोगतपसा
ध्यो॥१॥ मातपिताहितप्रीतिनिगमपथतजिदुखसुखभ्रम
नाख्यो॥ मानअपमानपरंपरतोष्युअस्थ्यलेपितिमनराख्यो॥
२॥ सकुचासनकुलसीलकरसिकरिजगतबंदकरिबंदन
मोनपवारदपवनअपारोधनहितक्रमकामनिकंदन॥३॥ गुरुज
नकानिअगनिचहुंदिसिनिभरतापररविदेखे॥ पिवतधूमउ
पहासजहांतहांअपजसश्रवनिअलेखे॥४॥ सहजसमाधि
बिसरिवपुवानिकनिरखिनिमेखनलागत॥ परमज्योति
तिअंगमाधुरीधरनयहैनिशिजागत॥५॥ त्रकुटिसंगभ्रुवि
भंगजरासककनेंबनेंनलगिलागे॥ हसनिप्रकाससुमुखकुं
डलमिलिचंदनसूरअनुरागे॥६॥ मुरलीअधरमधुरसुरसों
सुनिबदनदेहसुनिकांनें॥ बरखतरसरुचिपवनसंगसुख
पदआनंदसमानें॥७॥ मंत्रदियोमनजातभजनसुणधांन
ध्यानहरिहीकों॥ सूरकहेंगुरुकोनकहांअलिकोनसुनेंम

तपकीकों ॥ ५ ॥ रा ॥ धनाश्री ॥ मीठीबातनिमेंकहलीजें ॥ जोपेंहमहिं
तुहींहिहमारेकरनकहौमोकीजें ॥ १ ॥ नायसुगंधवनायश्रभूष
नयोंकीनीश्ररधंग ॥ तेकेसेंश्रवलिखिपठवहिंगेभसमचढा
वनश्रंग ॥ २ ॥ एकवारविहरतवृंदावनवेंनीविविधिवनाई
तेकैसेंकहतजटामाथेकोंपलकोंनामकन्हाई ॥ ३ ॥ कानननिमें
करकांनश्रापनेकरनफूलपहिराये ॥ तिनमाधोंमाटीकेमु
द्रामधुकरहाथपठाये ॥ ४ ॥ कासोंकहोंदूरिनेंदरनंदनभुमजो
मधुपमधुपांती ॥ सूरनहोइस्यामकेमुखकीजाहुनजारहुछाती
५ ॥ रा ॥ धनाश्री ॥ हरिसोंभलोंसोपतिसीताकों ॥ जाकेहेतनवाजव
हुकीनेंखियोंसिंधुवीताकों ॥ १ ॥ रावनमार्योलंकाजारीमुख
देख्योभीताकों ॥ दूतहाथउनलिखिनपठायोंनिगमज्ञानगी
ताकों ॥ २ ॥ श्रवधोंकहापरेखोकीजेंकुविजाकेमीताकों ॥ सेज
चढतसबैसुखभूलीज्योंपिताचीताकों ॥ ३ ॥ बानीकृपाजोगु
लिखिपठयोंनिरखिपत्रीताकों ॥ सूरदासप्रेमकहांजानेंलो
भीनवनीताकों ॥ ४ ॥ रा ॥ सोरठि ॥ निरमोहीश्रासोंप्रीतिकीनीका
हेनादुखहोइ ॥ कपटकरिकरिप्रीतिकपटीलेंगयोमनुगोइ ॥
१ ॥ कालमुखतेंकाढिश्रांनोंवहुरिदीन्होंढोउ ॥ मेरेजियाकीसोई
जानेंजाहिवीतीहोइ ॥ २ ॥ सोकिश्रालमजोढकानीनिपटश्रांची
पोइ ॥ सूरगोपीमधुपश्रागेंदरकिरोनीरोइ ॥ ३ ॥ रा ॥ सारंग ॥ वि
नगोपालवेरिनभईकुंजें ॥ तवएलतालगतश्रतिसीतलश्रव
भईविषमज्वालकीपुंजें ॥ १ ॥ वृथावहतजमुनाखगवोलत
वृथाकमलफूलेंश्रलिगुंजें ॥ पवनपांनिघनसारसंजीवन
दधिसुतकिरनिभानभईभुंजें ॥ २ ॥ ऊधोंकहियोंमाधोसोंवि
रहकरनकरिमारतलुंजें ॥ सूरदासप्रभुकोमगजोवतश्रंखि
श्रांभईवरनज्योंगुंजें ॥ ३ ॥ रा ॥ नट ॥ संदेसोंकेंसेंकेंश्रवकहों
इननेंननिपातनिकोंपहरोंकवलागेंरतरहों ॥ १ ॥ जोकछुवि
चारहोयउरश्रंतररचिपचिसोंचगहों ॥ मुखश्रानतऊधोंतन
चितवेंननसोंविचारनहों ॥ २ ॥ श्रवसोईसिखदेहुसयानीजातें
सुखहिलहों ॥ सूरदासप्रभुकेसेवकसोंविनतीकेंनिवहों
३ ॥ रा ॥ कांन्हरो ॥ वहुरोंव्रजवातननाली ॥ वहजोएकवारऊ
धोंकरकमलनेंनपातीदेंश्राली ॥ १ ॥ पथिकतिहारेपालागति
होंमथुराजाहुजहांवनमाली ॥ कहियोंप्रगटपुकारिद्वारकें

कालिंद्रीफिरिआयोंकाली ॥२॥ जबहूंनीक्रूपाजदुनाथकीहम
पररहीरुक्मिनिजोप्रीतिप्रतिपाली ॥ मांगनकुसमरेपिहुमउंवेगा
रपकपिलेनेगहितुल्ली ॥३॥ हमएसीउनकेंकेनिकहेंअंगअसंग
सुनहुरीआली ॥ सूरदासप्रभुप्रीतिपुरातनसुमिरिसुमिरिरा
धाउरसाली ॥४॥ रागनट ॥ मोहनलालकेसंगआंखि ॥ प्रथमऊ
धोंआनिरेंहमसगुनडारेंनाखि ॥१॥ होइनीनिसातअनंनजैसेंक
हतसुमनसोंभाखि ॥ हदेंविद्याधर्मज्ञानसोंलोचननिअभिलाखि
॥२॥ उडहिजहांकेकेलिसखिरीसुमिरिचकोरीपांखि ॥ हरिहरेहरि
हेरिआलोंरहीफुकिवाकिफांखि ॥३॥ निरखिजलप्रतिबिंबबिहं
सतउडतछोरतराखि ॥ छूटिपटुमपुरेंनिबनजनुजलपिकुहि
कुहिकांखि ॥४॥ रेंनिजोअंकुरततनिपिआलिमदनरहिमइसां
खि ॥ हुंदुडुगनकमलकुमुदिनिमिलेंसूरजमांखि ॥५॥ रागमला
र ॥ सदेसनिमधुबनकूपभरे ॥ जेकोईपथिकगयेजोह्यांतेफिरि
नहिगवनकरे ॥१॥ केंवेस्यांमसिखायसमोधेकेंवेबीचमरे ॥ अ
पनेनहिपठवतनंदनंदनहमरेउफेरिधरे ॥२॥ मसिखूटीकाग
रजलभींजेसरदौलागिजरे ॥ पातीलिखेंकोकरिजोप
लककेपाटअरे ॥३॥ रागनट ॥ नेंदनंदनमोंहनसोंमधुकरका
हेकीप्रीति ॥ जोकीजेंतोहेंजलजधररचिकोएसीरीति ॥१॥
जैसेंमीनकमलचातिककोंएसेंहीगईबीति ॥ नलफनजरत
पुकारतसुनुसठनाहिनहेंयहरीति ॥२॥ मनदूषणहोंकबंधजु
ह्योंहारेंहूंभईजीति ॥ वधननप्रेमसमुद्रसरखलबरखाह
हिकीभीति ॥३॥ रागनट मधुबनिपांलोगनिकोंपतिआई ॥ मु
खऔरेंअंतरगतिऔरेंपतिपांलिखिपठवततनबनाई ॥१॥ मो
कोयलसुनकागजिआवतभाउभक्तिभोजननखवाई ॥ कुहु
कुहाइआपावंसंतऋतुअंतमिलेंकुलअपनेजाई ॥२॥ जैसेंम
धुकरपुहपनासूलेंफेरिनबूफीवाततनआई ॥ सूरजहांलोंसां
मगांतहेंतिनसोंकीजेंसगाई ॥३॥ रागनट ॥ हरिहेंराजनी
तिपढिआये ॥ समुकीवातकहतमधुकरकेसमाचारकछुपाये
॥१॥ एकअतिचतुरहुतेपहिलेंहीअरुकरिनेहदिखाये ॥ मांनी
बुद्धिंबडीजुवतिनकोंजोगसंदेसपठाये ॥२॥ भलेलोगआगें
केसखिरीपरहितजेनधाये ॥ वेअपनेमनफेरिपायहेंजेंहें

सू.सा बलतंबुरायो ॥३॥ नेकौनीतिकरतग्रपुनजेग्रौरनिरीतिछुडा
२२५ ये ॥ राजधर्मसबभयेसूरजहां प्रजानजायसताये ॥४॥ रा॰ न॰ २
जोगकीगतिसुनतमेरेग्रंगग्रागिबई ॥ सुलागसुलगिहुमर
ह्यीतननमेंफूंकिग्रानिदई ॥१॥ जोगहमकोंभोगकुबजाहिकोंनें
सिखसिखई ॥ सिंधुगजगतित्रणहिखंडितसुनीबातनई ॥२॥
कर्मरेखामिटनाहीजोविधिग्रांनिठई ॥ सूरहरिकीकृपाजा
परसकलसिद्धिभई ॥३॥ रा॰ ध॰ ना॰ श्री ॥ ऊधोंजान्योंजानतिहारो जा
नैंकहांराजगतिलीलाग्रंतग्रहीरविचारों ॥१॥ हमसवैंग्रयां
नीएकसयांनीकुविजासोंमनुमान्यों ॥ ग्रावतनहीलाजकेमा
रेंमानहुकोनूखिस्यानों ॥२॥ ऊधोंजाहुबांहुरेल्यावहुसुंदरस्यां
मपियारों ॥ व्याहोंलाखधरोंदसकुबरीग्रंतहुकानूहमारो ॥३॥
सुनिरीकछूसाखीनहिकहियेंमाधोंग्रावनदीजें ॥ जबहीमिल
हिसूरकेस्वामीहांसीकरिकरिजीजें ॥४॥ रा॰ स॰ ना॰ श्री ॥ ऊधोंकहीं
कहनजोपारों ॥ नाहिनबालिकछूदोसतिहारोसकुचिसाधजिनि
मारों ॥१॥ नाहिनब्रजवासिनंदलालगोपालबिनोदनिहारों ॥ ना
हिनरासरसिकरसचाखोंचोंडेलोंसोंउरारो ॥२॥ जोनहिगयोसुर
प्रीतमसंगप्राणत्यागितनुमारों ॥ ग्रवतोंबहुतदेखिबोंसुनि
वोंकोंनकरमसोंचारों ॥३॥ रा॰ ध॰ ना॰ श्री ॥ ऊधोंहमहिस्यांमकोंय
हैंपरखोंग्रावें ॥ तसबहुप्रीतिचरणजावकुसिरग्रवकुविना
मनभावें ॥ पानहुमलाउलडायलरेतेहासिहसिकंठलगावें
ग्रबबहुरूपग्रनूपकृपाकरिनेननिक्योंनदिखावें ॥२॥ जाणु
खसमीपरेनिदिनक्रीडतसोग्रबजोगसिखावें ॥ जामुखग्रम
तपियोभरिरसनासोकेसेंविसुभावें ॥३॥ करमीडतपछितात
धुननसिरक्रमक्रममनसमुझावें ॥ सूरदासप्रभुविकलवि
रहिनीएसीविधिदुखपावें ॥४॥ रा॰ सा॰ ग॰ ऊधोंकरहुतनकछु
बनिग्रावें ॥ सिरपरसोंनिहमारेकुविजाचामकेदांमचलावें ॥१॥
उनिकछुमंत्रपढ्योंचंदनिमेंतातेंस्यांमहिभावें ॥ ग्रपनेरंगब
हिरंगेसांवरेसुकज्योंवेंछिपढावें ॥२॥ विसहीसोसुग्रसुरनकी
दासीग्रबकुलवधूकहावें ॥ ज्योंनटिनीलघुहापलकुटिलें
कपिज्योंनांचनचावें ॥३॥ सरदासप्रभुजरीवहुतदुखतापरलों
नलगावें ॥४॥ रा॰ ध॰ ना॰ श्री ॥ ऊधोंजोगुसि[illegible]वनग्रायें ॥ कैसेंधी

ञ्जधरों हरि पाती। लिखि ज्यों जोग सिधाये॥ १॥ एक समें हरि अ
पने कर नकानन फूल पहराए। ताकारन मारी के मुङ्तमधुक ३
रहाएपठाए॥ २॥ जोपि जोरि चित जोरि जो रानों जोपि जोरी नमांनों
तव को प्रेम कहां भयो ऊधो अब यह जोग दृढानो॥ ३॥ हरिजी ह
मसों प्रीति जो कीनी जैसें मीन अरु पांनी॥ तलपि तलपि जि
य निकसन लाग्यो पानी पीर न जानी॥ ४॥ निसि वासर मेरी प
लक न लागत को रिजतन करि हारी॥ जैसें भुवंगम तजी कां
चुरी सो गति भई हमारी॥ ५॥ वेंनी सुभग गुही कर अपने चरण
निजावुक रीनों॥ कहियो जाय सूरस्वामी सों निपट निठुर जिय
कीनों॥ ६॥ रा॰ धनाश्री॥ ऊधो जिनि मधुवन तन देखो वसु करि
वस श्रोर रहि गो कुल जनम सुफल करि लेखो॥ १॥ कहां जाय
लेहो प्रभु नामें राजकाज की वात॥ बालकुमार किशोर निरखु जे
घर घर मांखन खांत॥ २॥ तुम निरगुन नित कहत निरंतर नि
गम नीति यह नीति॥ प्रगट रूप मदन मन माने को छांडत प्रेम ५
प्रतीति॥ ३॥ जाको सिव सनकादि सनातन छिनु छिनु मन धरि
ध्यांवत॥ सूर सो प्रभु ब्रज गोप सखनि सग गोधन संग चरावत
॥ ४॥ रा॰ मलार॥ ऊधो तुम हो अति बडभागी॥ अव रस रहत सनेह
तगाते नाहिन मन अनुरागी॥ १॥ पुरइनि पात रहत जल भीत
र ताल रस रहत न दागी॥ ज्यों जलमांह तेल की गागरि बूंद न ताकें ला
गी॥ २॥ प्रीति नदी में पाउ न बोर्यो दृष्टि न रूप परागी॥ सूरदास अ
वलो हम वौरी गुर चींटा ज्यों पांगी॥ ३॥ रा॰ मलार॥ ऊधो यह मन औ
र न होय॥ पहिलें ही चढि रह्यो स्याम रंग छुट न तन देखो धोय॥ १॥ कैतव
वचन छांडि हरि हमसों सोई करें जो मूल॥ जोग हमहि ऐसो ला
गत हे ज्यों तोरि चंपक फूल॥ २॥ अव कैसें मिटत न हात की कहो कों
न विधि कीजें॥ सूर स्याम मुख आनि दिखावो जाहि निरखि कर
जीजें॥ ३॥ रा॰ गौड मलार॥ ऊधो ना हम विरही ना तुम दास॥ कहत सु
नत घट प्राण रहत हें हरि तजि भजहु अकास॥ १॥ विरही मीन म
रत जल विछुरें छांडि जीवन की आस॥ दास भाउ नहि तजत प
पीहा वरु सहि रहत पियास॥ २॥ प्रगट प्रीति दसरथ प्रतिपाली
प्रीतम के वनवासी॥ सूर स्याम सों दृढ व्रत कीनों मेटि जगत उ
पहासी॥ ३॥ रा॰ सोरठि॥ ऊधो कही सो वहुरि न कहियो॥ जो तुम ह
महि जिवायो चाहो अनबोले ह्वै रहियो॥ १॥ हमरे प्राण अघात हे

तऊ तुम जानति हौं हांसी ॥ बाजी बनते मरन भलो है करवर लें
हौं कासी ॥ ४ ॥ जब हरि गवन कियो पूरब लौं तब लिखि जोग प
ठायो ॥ यह तन जरि कैं भस्म ह्वै निबर्यो बहुरि समान जगायो ३
कै रे मनोहर आनि मिलावौ कै लै चलु हम साथैं ॥ सूरदास अब
मरन भयो है पापु तिहारे माथैं ॥ ५ ॥ रा॰ सारंग ॥ ऊधौ तुम अपनौ
जतन करौ ॥ हित की कहत कुहित की लागै किन बेकाज ररौ १
जाय करौ उपचार आपनो हम जो कहत हैं जी की ॥ कछू कहत
कछुवे कहि डारत धुनि देखियत नहिं नीकी ॥ २ ॥ साधु होय तेहि
उत्तर दीजे सुभ सों मानी हारि ॥ याही तें तुम नंदनंदन जी पठये
इहां हैं टारि ॥ ३ ॥ मथुरा बेगि गहौ इन पाइन उपज्यो है तन रोगु
सूर सो बैद बेगि किन ढूंढौ भये अर्ध जल जोगु ॥ ४ ॥ रा॰ सोरठि
ऊधो जाके माथे भागु ॥ कुबिजा को पटरानी कीनी हमहिं देतु
बैरागु ॥ १ ॥ तलफत फिरत सकल ब्रज बनिता चेरी चपरि सुहा
गु ॥ बन्यो बनायो संग सखी री बैरे हंस न कागु ॥ २ ॥ लौंडी के घर
डौंडी बाजी स्याम राग अनुराग ॥ हांसी कमलनैन संग खेलति
बारहमासी फागु ॥ ३ ॥ जोग की बेलि लगावन आए कांटे प्रे
म को बागु ॥ सूरदास प्रभु पछोडि के चतुर चबोरत आगु ॥ ४ ॥
रा॰ सारंग ॥ ऊधौ अब यह समुझि भई ॥ नंदनंदन के अंग अंग प्रति
उपमा न्याय दई ॥ १ ॥ कुंतल कुटिल भवर भरि भांवरि मालति भु
रयि लई ॥ तजत न गहरु कियो कपटी जब जानी निरस गई ॥ २ ॥
आनन इंदु बिमुख संपुट सजि करखे तें न नई ॥ नवनेहा नवनें
मों कुमुदिनि अंतहु हेम मई ॥ ३ ॥ तनु घन स्याम सेइ निसि बासर
रटि रसना छिजई ॥ सूर बिवेकहीन चात्रक मुख बूंदौ तौ न लई
॥ ४ ॥ रा॰ धनाश्री ॥ ऊधौ हम अति निपट अनाथ ॥ जैसे मधु तोरे की
मांखी त्यौं हम बिनु ब्रजनाथ ॥ १ ॥ अधर अमृत की पीर मुई हम बा
लरसा तें जोरी ॥ सो तौं बधिक सुफलकसुत लैं गयो अनायास ही
तोरी ॥ २ ॥ जब लगि पलक पानि मीड़तु रही तब लगि गये हरि दू
री ॥ के निरोधु निबहैं तौ हि औ मारैं पग रथ की धूरी ॥ ३ ॥ सब दिन
करी कृपिन की संगति कबहुं न कीनो भोगु ॥ सूर बिधाता रचि
राख्यो है कुबिजा के सुख जोगु ॥ ४ ॥ रा॰ सोरठि ॥ ऊधौ ब्रज की दसा बि
चारौ ॥ ता पाछें यह सिद्धि आपनी जोग कथा बिस्तारौ ॥ १ ॥ जे हि कार
न पठये नंदनंदन सो सोचहु मन माहीं ॥ केतिकु बीच बिरह परमार

पजातनह्लोंकिधोंनांही॥२॥तुमबिनुदासजोसषास्यांमकेसंत
ननिकटरहतहो॥जलबूंदतअवलंबफेनकोंफिरिफिरिकहांग
हतहो॥३॥वेअतिललितमनोहरआननकेसेंमनहिबिसारौं
जोगजुगतिअरुमुकतिबिबिधिबिधियामुरलीपरवारौं॥४॥जे
हिउरबसेंस्यांमसुंदरघनकोनिर्गुणकहिआवें॥सूरदासमो
ईभजनबहावेंजाहिदूसरोंभावें॥५॥राग सारंग॥ऊधोयहहितु
लगोंकाहे॥निसदिननैंननयनदरसनकोंतुमजोकहतनहेरे
माहे॥१॥नीदनपरतचहूंदिसचितवतबिरहअनलकेदाहे॥
उरजेनिकसिकरतकोंसीतलजोपेंकांन्हउहांहैं॥२॥पालागो
एसेंहिरहनदेंअवधिआसजलथाहें॥मतिलेंडारोनिर्गुणा
सिंधुमेंफिरिनपायवोंचाहें॥३॥जाकोंमनजाहीसोंराच्योंतासों
बनेंनिबाहें॥सूरकहांलेकेरेंपपीहाएनेसरसरितांहें॥४॥राग
नट॥ऊधोंजोगजोगिहिदेहु॥हमअबलाकहाजानहिसप
नहमसोंलेहु॥१॥जैसेंचंदचकोरचाहतमोरचाहतमेह॥हम
हुचरणसरोजचाहतस्यांमसंगसनेह॥२॥कनकखंभबिसारि
केसेंकरतकाननिग्रेह॥छोडिचंपककुसुमकेसरिकोंबढाव
तिखेह॥३॥स्यांमगातसरोजआननकरतपावकगाह॥सूरके
प्रभुदरसदुर्लभपानिहूंसमुझह॥४॥राग धनाश्री॥ऊधोंब्रजमें
पैठकरी॥यहनिर्गुणनिर्मूलगाठरीअबकिनकरहुखरी॥१॥
नफांजांनिकेंधांलेंआयेसवेंबातअकरी॥यहमोंदाऊहांलों
बेचोंजहांबडोंनिगरी॥२॥हमग्वालिनिगोरसदधिबेचोंलेंहि
अबेंसबरी॥सूरइहांकोउगांहकनांहीदेखियतुगरेंपरी॥३॥
राग सारंग॥ऊधोंतुमजोनिकटकेवासी॥यहपरमारथबूझिक
हंधोंनामबडोंकेंकासी॥१॥जेमागयांनध्यांनअवराधनसा
धनमुकतिउदासी॥आनप्रकारकहांरुचिमांनीजेगोपाल
उपासी॥२॥परमारथीजहांलोंजेतेबिरहिनकेदुखदाई॥सूर
दासप्रभुरंगीप्रेमबसनाशेंजोगसगाई॥३॥राग बिलावल॥ऊ
धोंतुमअतिचतुरसुजान॥जेपहिलेरंगरंगीस्यांमरंगतिन्हेंन
चढेंरंगआन॥१॥द्वैलोचनजोबिराटकियेश्रुतिगावतएं
कसमान॥भेदचकोरकियोंताहूमेंबिधुप्रीतमरिपुभांन॥२॥
बिरहिनिबिरहभजेंपालागोंतुमहोपूरनग्यांन॥दादुरजल
बिनुजीवेंपवनभषिमीनतजेंदहिप्रांन॥३॥वारिजवदननैं

सू॰ सा॰ न मेरे षरपट्कव करिहैं मधुपान ॥ सूरदास गोपीन प्रतिज्ञा
२२१ छुवत तनु जो गुविरान ॥ ५ ॥ रा॰ बि॰ बल ॥ ऊधो कोकिल कूजति
कानन ॥ तुम हम कों उपदेश करत हौ भसम लगावन आन
न ॥ ॥ ओरो सखी सखा संग लें लें चेतत चटत पखानन ॥ बहु
रो आनि पपीहा के मिस मदन हनत निज बानन ॥ २ ॥ हम तो नि
पट अहीरि बावरी जोग दीजियें ज्ञानन ॥ कहा कथत मासी
के आगें जानत नानी नानन ॥ ३ ॥ सुंदर स्याम मनोहर मूरति
भावत नीके गानन ॥ सूर मुकति कैसें पूजति है वा मुरली
की तानन ॥ ४ ॥ रा॰ सा॰ ग॰ ॥ ऊधो हम अजान मति भोरी ॥ जान
ति हैं ते जोग की बातें नागरि नवल किशोरी ॥ १ ॥ कंचन कों मृ
ग कोनें रख्यौं कोनें बांध्यो डोरी ॥ कहि धों मधुप बारि मथि मा
खनु कोनें भरी कमोरी ॥ २ ॥ बिन ही भीति चित्र किनि कांढ्यो
किनि नभ बांध्यो कोरी ॥ कहौं को पैं कटक नृपा जिनि हठि
भुसी पछोरी ॥ ३ ॥ यह ब्यौहार तिहारो बलि जाउ हम अबला
मति थोरी ॥ निरखहि सूरस्याम मुख चंद्र हि अखियां लगनि
चकोरी ॥ ४ ॥ रा॰ गौरी ॥ ऊधो कमल नैन बिन रहियें ॥ एक हरि
हमें अनाथ करि छांडी दूजे बिरह कैसें सहियें ॥ १ ॥ जैसें ऊज
र खेरे की मूरति को पूजै को मानें ॥ ऐसी हम गोपाल बिन ऊधो
कठिन बिथा को जानें ॥ २ ॥ तन मलीन मन कमल नैन सों ता
मिलिबे की आस ॥ सूरदास स्वामी बिनु देखें लोचन मरत पि
यास ॥ ३ ॥ रा॰ सा॰ ग॰ ॥ ऊधो कोनु आहि अधिकारी ॥ लैन जाहु यह
जोग आपनो कत तुम होत दुखारी ॥ १ ॥ यह तो बेद उपनिषद म
तहै महापुरुष ब्रत धारी ॥ हम अहीरि ब्रजबासिनि अबला
नाहि न परत सभारी ॥ २ ॥ को है सुनत कहत को कासों कौन कथा
अनुसारी ॥ सूरस्याम संग जात भई मनो अहि केचुली सी डा
री ॥ ३ ॥ रा॰ नै॰ ॥ श्री ॥ ऊधो जो तुम हम हि सुनायो ॥ सो हम निपट
कठिनई हृदु कें या मन कों समुझायो ॥ १ ॥ जुगति जतन निजि जो
ग आराहु गहि अपथ्य पंथ लों लायो ॥ भटकि फिर्यो बोहित
के षग ज्यों पुनि फिरि हरि जी पें आयो ॥ २ ॥ हम कों सबे आहि न
लागति हैं तुम आति हि तहि बतायो ॥ सरसलिता जल होम कि
ये ते कहां अगिनि सचु पायो ॥ ३ ॥ अब कैसों उपाय उपदेसों जे पि
जियजो तजि आयो ॥ बारक मिलहि सूर के प्रभु तन कीजें अप

नौंभायौ ॥ ४ ॥ राग सारंग ॥ ऊधौ जोग बिसरि जिनि जाहु ॥ बांधहु गांठि
कहूं जिनि छूटैं फिरि पाछें पछितांहु ॥ १ ॥ ऐसी वस्तु अनूपम मधु
कर मरमु न जानैं और ॥ ब्रजबासिन के नांही कांम को तुम रैं ही है
ठौर ॥ २ ॥ जो हरि हित कै हमकौं पठयौ सो हम तुम ही दीनौं ॥ सूर
दास नरहरि रूप्यौ विप्र कौं करहिं वंदना कीन्हौं ॥ ३ ॥ राग सारंग
ऊधौ प्रीति न मरन विचारैं ॥ प्रीति पतंग जरैं पावक परि जरत
अंग नहि टारैं ॥ १ ॥ प्रीति परेवा उरत गगन चढि गिरत न आपु
सभारैं ॥ प्रीति मधुप केतकी कुसुम वसि कंटक आपु सभारैं
॥ २ ॥ प्रीति जांनि जैसें पय पांनी जांनि अपन पौ जारैं ॥ प्रीति कुरं
ग नाद रस लुब्धक तानि तानि सर मारैं ॥ ३ ॥ प्रीति जांनि जननी सु
त कारन कौंन अपन पौ हारैं ॥ सूर स्यांम सौं प्रीति गोपिन की कहु
कैसें निरुवारैं ॥ ४ ॥ राग गौरी ॥ ऊधौं वैरी राखे ऐनें न ॥ सुमिरि सुमि
रि गुण अधिक तपत हैं सुनत तनिहुं रैं बैंन ॥ १ ॥ ये तौ मनोहर वदन
चंद के मार रवुसुर चकोर ॥ परम त्रिषारत सजल स्यांम घन ति
न के चात्रिक मोर ॥ २ ॥ मधुप मराल चरण पंकज के गति बिलास
जल मीन चक्रवाक मनि द्युति दिनकर के मृग मुरली आधीन
॥ ३ ॥ सकल लोक सूनौं लागत है बिन देखें वा रूप ॥ सूरदास प्र
भु नंदनंदन के नखसिख अंग अनूप ॥ ४ ॥ राग रामकली ॥ ऊधौं
जाहु तुमें हम जांनें ॥ स्यांम तुमें ह्यां नाहि पठाये तुम हो बीच भुला
नें ॥ १ ॥ ब्रजबासिन सौं जोगु कहत हौ बातन कहत न लजांनें ॥ बडे
लोगन विवेक तुम्हारे ऐसें नये अयांनें ॥ २ ॥ हमसौं कही लई सो
सहिकें जियगुनि लेहु अयांने ॥ कहं अबला कहां दसा दिगंबर
समुख करौ पहिचाने ॥ ३ ॥ सांच कहौ तुमकौं अपनी सौं बूझति
बातनि दांनें ॥ सूर स्यांम जब तुमें पठाये तब नेंकहु मुसिकांने
॥ ४ ॥ राग धनाश्री ॥ ऊधौं स्यांम सखा तुम सांचे ॥ कैं करि लयौ स्वांग
बीच ही तें वैसें हि लागत कांचे ॥ १ ॥ जैसी कही हमहिं आवत ही
औरनि कहि पछितांते ॥ अपनो पति तजि और बतावत महि
मांनी कछु खांते ॥ २ ॥ तुरत गावन कीजें मधुवन कौं यहां कहां
यह ल्याये ॥ सूर सुनत गोपिन की बांनी ऊधौं सीस नवाये ॥ ३ ॥
राग नट ॥ ऊधौं वेगि मधुवन जाहि ॥ जोग लेहु सभारि अपनौ वे
चियें जहां लाहु ॥ १ ॥ हम बिरहिनी नारि हरि बिनु कौंन करैं निबा
हु ॥ तहां दीजें मूरु पूजें न फा तुम कछु वांहु ॥ २ ॥ जौं न ही ब्रज मैं वि

सू०सा० कानोंनगरनारिबिसाहु॥ सूरखेसवसुनतलेहैं जीयकहूपछि
२२९ ताहु॥ ३॥ रा॥ नट॥ ऊधौवकछुकसमुझिपरी॥ तुमजोहमकोंजोग
ल्यायेभलीकरनिकरी॥ १॥ एकविरहजरिरही हरिकेसुनन
ग्रातिहिजरी॥ जाहुजनिग्रवलोंनलावहु देखितुमहिडरी॥ २
जोगपातीदई तुमकरवडेजांनहरी॥ ग्रानिग्रासनिरासकी
नी सूरसुनिहहरी॥ ३॥ रा॥ धनाश्री॥ ऊधोंसुनतनिहारेवोल
ल्याएहरिकुसलातधन्यतुम घरघरपारोंगोल॥ १॥ कहन
देहुकहकरेंहमारो वसिउडिजेहैंझोल ग्रावतहीयाकोंपहि
चान्योंनिपटहिग्रोछोंतोल॥ २॥ जिनिकेसोंवुनरही कहि
वेकोंतेवहुगुणनिग्रमोल॥ जानीजातिसूरहमइनकीन
वचलचंचललोल॥ ३॥ रा॥ नट॥ ऊधोंजानिपरयोंसयानु॥ ना
रियहकोंजोगलाए भलेजानसुजान॥ १॥ निगमहूंपहपार
पायोंकहतजासोंग्यानु॥ नेंननिकुटीजोरिसंगमजेहिकरत
ग्रनुमानु॥ २॥ पवनधरिरविततननिहासिमनहिराख्योमारि
सूरसोमनुहाथनाही गयोंसंगविसारि॥ ३॥ रा॥ धनाश्री॥ ऊधों
मननहिहाथहमारे॥ रथचढाइहरिसंगगयेलेंमथुराजव
हिसिधारे॥ १॥ नातरुकहांजोगहम छांडेहिग्रतिरुचिकेतुम
ल्याये॥ हमसोंतोंझुखतिपामकीकरनीमननलेंजोगुपठाये २
ग्रजहूंमनग्रपनोंहमपावेंतुमतेंहोइतहोइ॥ सूरसपत
हमेंकोटितिहारीकहांकरेगीसोइ॥ ३॥ रा॥ धनाश्री॥ ऊधोंजो
गसुन्योंहमदुर्लभ॥ ग्रापुकहतहमसुनतग्रचंभितजांनत
होंजियसुलेभ॥ १॥ रेखनुरूपवरनजाकेनहिताकोंहमहिव
तावत॥ ग्रपनीकहोंदरसवेसेकों तुमकवहूंहोंपावत॥ २॥ मु
रलीग्रधरधरतहेंसोपुनिगोधनवनवनचारत॥ नेंननवि
शालभोंहवंकटकरिदेख्योंकवहुनिहारत॥ ३॥ तनत्रिभंग
करिनटवरवपुधरिपीतांवरतहिसोहत॥ सूरस्यामसोदेत
हमहिसुखतेंतोतुमकोंसोउमोहत॥ ४॥ रा॥ रामकली॥ ऊधोंह
मलायकसिखदीजें॥ यहउपदेसग्रगिनितेंतातोंकहोंकोंत्र
विधिकीजें॥ १॥ तुमहींकहोंयहांइतननिमेंसीखनहारीकोहें
जोगीजतीरहितमायातेंतिनकोंएमतुसोहें॥ २॥ जेकपूरवेंइन
तनलेपनतेंविभूतिकोंछाजें॥ सूरकहांसोभाकोंपावेंग्रां
खिग्रांधरीग्राजें॥ ३॥ रा॥ रामकली॥ ऊधोंकहांकथतविपरीति

जुवतिनजोगसिखावनआयेयहतौउलटीरीति ॥१॥ जोनत
धेनुदुहतपयपत्रमखकोंकरनलगेजोअनीति ॥ चक्रवाकस
सिकौकैसोजानेंरविचकोरकहप्रीति ॥२॥ पाहुनतेरेमोहनहो
वूझेंतोहममानेंनीति ॥ सूरस्यामप्रतिअंगमाधुरीरहीगोपि
कांजीति ॥३॥ रा॥ रामकली ॥ ऊधोजुवतिनओरनिहारो ॥ तबयह
जोगमोटहमआगेंहियेंसमुझिविस्तारो ॥१॥ जेकचस्यामआप
नेकरकरिनितहिसुगंधरचाये ॥ तिनकोंतुमजोविभूतिघोरि
केंजटालगावनआये ॥२॥ जेहिमुखमृगमदमलयजउबटति
छिनछिनधोवतिमांजति ॥ तेहिमुखकहतखेहलपटावनसो
केसेंहमछाजति ॥३॥ लोचनआंजिस्यामससिदरसतिवेहीभये
त्रिपताति ॥ सूरतिनेंतुमरविदरसावतयहसुनिसुनिकरुआ
ति ॥४॥ रा॥ धनाश्री ॥ ऊधोनैंननिमिषहूव्रतलीनो ॥ कांतिविनासव
ऊसरभरियतग्रीवरंध्रतुमकीनों ॥१॥ मुरलीगरजतानसुकला
नतनुमेघध्यानजलचुरीनो ॥ वरयेप्राणजाहिलोंहीवचनहे
हिकैसोदीनो ॥२॥ तुमआयेलेंजोगमिसखालकेसुननमहादुख
दीनो ॥ कैसेंसूरअगोचरल्हैहियेंनिगमनपावतचीनों ॥३॥ रा
गधनाश्री ॥ ऊधोइननेंननिअंजनदेहु ॥ आनहुकोनस्यामरंग
काजरुजासोंजुरयोसनेहु ॥१॥ तपतरहतनिसिवासरमधुक
रनहिसुहाततनुगेहु ॥ जैसेंमीनमरतजलविछुरततबकहांकहो
दूषणएहु ॥२॥ सबविधिवानिठानिकेंराखोखरिकपूरकोंरेहु
वारकमिलवहुस्यामसूरप्रभुकौनसुजसजगलेहु ॥३॥ रा
ग॥ रामकली ॥ ऊधोभलीकरीतुमआये ॥ यहबातेंकहिकहियादुख
मेंव्रजकेलोगहसाये ॥१॥ कौनकाजवृंदावनकौसुखदही
भातकीछाक ॥ अववेकान्हकूवरीराचेवनेएकहीताक ॥२॥
मोरमुकटमुरलीपीतांवरपठवोसौंजहमारी ॥ अपनीजटाजू
टअरुमुद्रालीजेंभसमअधारी ॥३॥ वेतौबड़ेसखातुमउनकेतु
मकोंसुगमअनीति ॥ सूरसवेंमतिभलीस्यामकीजमुनाजल
सोंप्रीति ॥४॥ रा॥ सारंग ॥ ऊधोवूझनिगुपिततिहारी ॥ सवकाहूके
मनकीजानतवांधेंमूठिफिरतठगवारी ॥१॥ पीतधजाउनके
पीतांवरलालधुजाकुविजाविभचारी ॥ मनकीध्वजास्वेतव्रज
ऊपरअपजसहैंऊधोकीप्यारी ॥२॥ उनकेप्रेमप्रीतिमनरंजन।
पैतासकलसीलव्रतधारी ॥ सूरवचनमिथ्यालगराईऐसेऊ।
ऊधोकीन्यारी ॥३॥ रा॥ धनाश्री ॥ ऊधोमनमानेकीवात ॥ जरत

सू.सा.
२२९

पतंगमरीपकमेंजैसेंज्योंफिरिफिरिलपटात ॥ १ ॥ रहतचकोर
पुहुमिपरमधुकरससिप्रकासभरमात ॥ एसोंध्यांनधरोंहू
रिजीपेंछिनइततउतनहिंजात ॥ २ ॥ दादुररहतसदाजलभीतर
कमलहिनहिंनियरात ॥ काठुफोरिघरुकियेंमधुपजिमि
बंधेअंबुजकेपात ॥ ३ ॥ वरखावरखतनिसदिनऊधोंपुहुमीपू
रिअघात ॥ स्वांतिबूंदकेकाजपपीहाछिनुछिनुरटतरहात
४ ॥ सेहिनखातअम्रतफलभोजनतोमरिकोंललचात ॥ सूर
जकृष्णकूबरीरीझेगोपिनदेखिलजात ॥ ५ ॥ रा ॥ धनाश्री ॥ मधुक
ररह्योंजोगलयेंनातों ॥ काहेकोंबकवादबकतहोंहोयनहींते
नहांतों ॥ १ ॥ जबहिंमिलिमिलिपयपांनकरततेतबकहूंहूनोंकहां
तों ॥ अबआयेनिर्गुणउपदेसनजोनाहिंहमेंसुहातों ॥ २ ॥ कांचे
गुणलैकरितृणहिंलपेटतकमिखाप्रेनकोंतातों ॥ मेरेजांनगह्यों
चाहतहोंवहुरिकिमेंगलमातों ॥ ३ ॥ अवतौहमरताहिलेंरीझे
जाकेपेटसमातों ॥ जबचहिंहेंतवमांगिपठेंहेंजोकोईआवत
जातों ॥ ४ ॥ रा ॥ सारंग ॥ मधुकरहममजानोंहिंवेवेली ॥ जिनकोंतुम
तजिभजतप्रीतिबिनुकरतकुसुमरसकेली ॥ १ ॥ वारेंतेवलबा
ढिवारिअरुपोषीप्याईपांनी ॥ बिनपीअरसप्रातउठिफूलतहो
तसदाहिनहांनी ॥ २ ॥ येवजबिरहतवंदावनअरुझीस्यांमत
मालहिं ॥ प्रेमपुहुपरसवासहमारेंविलसतमधुरगोपालहिं
३ जोगसमीरधीरनहिंडोलतरूपडारढिगलागी ॥ सूरपरागन
तजततहियेंतेंकमलनेंनअनुरागी ॥ ४ ॥ रा ॥ सारंग ॥ मधुकरस्यां
महमारेईस ॥ जिनकोंध्यांनधरेंउरअंतरआनहिंनेंनवेनंईस
१ ॥ जोगिनिजापजोगउपदेसोंजिनकेमनदसबीस ॥ एकेंमनएा
केंबहमूरतिनिनचितबतहरिनतीस ॥ २ ॥ काहेनिर्गुणज्ञानआ
पनोंजितिततडारतखीस ॥ सूरप्रभुनंदनंदनहेंउनहींतेकोजगा
दीस ॥ ३ ॥ रा ॥ मलार ॥ मधुकरतुमहोस्यांमसखाई ॥ पालागोंय
हदेंमुखकामियोंसनमुखकरतढिठाई ॥ १ ॥ कोंनेरंकसंपदा
विलसीसोवतसपनेपाई ॥ किनसोनेकीउडतचिरैयाडोरीबां
धिखिलाई ॥ २ ॥ धांमधुआंकेकहोंकोनकेवेंठीकहांअघाई ॥ कि
निअकासतेंतोरितरैयाआंनिधरीघरमाई ॥ ३ ॥ वोरनकीमाला
गुहिकोनेंअपनेकरनिवनाई ॥ विनजलनाउचललतकिनिदेखी
उतरिपारकोंजाई ॥ कोनेंकमलननेंनुअनछांड्योंजोसमाधिहिल
गाई ॥ सूरदासतूंफिरिफिरिआवतियामेंकोंनुवडाई ॥ ४ ॥ रा ॥

५ ॥ श्री ॥ मधुकर मन तौ एकै आहि ॥ सो तौ लै हरि संग सिधारे जो
गु सिखावत काहि ॥ १ ॥ रे सठ कुटिल वचन रस लंपट अवलानि
तन धौं चाहि ॥ अब काहू कौ ऐन लौन है विरह अनल तन दाहि ॥
२ ॥ परमारथ उपचार करत हौं विरह विथा नहि जांहि ॥ ना कौं रा
ज रोग कफु व्यापै दही खवावत ताहि ॥ ३ ॥ सुंदर स्यांम सलौंनी
मूरति पूरि रही हिय मांहि ॥ सूर ताहि तजि निर्गुण सिंधुहि कौंन
सकै अवगाहि ॥ ४ ॥ राग सारंग ॥ मधुकर छांडु अटपटी बातें ॥ फि
रि फिरि वारि वार सोई सिखवत हम दुख पावत तातें ॥ १ ॥ अनुदि
न देत असीस प्रात उठि अरु सुख सोवत न्हांते ॥ तुम निसा दिन
उर अंतर सोचत ब्रजजुवतिन कौं घातें ॥ २ ॥ पुनि पुनि तुम्हें कहत
त कौ है आवें कछु जानें वहि नातें ॥ सूरदास जोग ही स्याम रंग पि
रि न चटत अब रातें ॥ ३ ॥ राग सारंग ॥ मधुप पराव री पहचानि वा
सुरस लै अन तवैठे पुहुप की तजि कांनि ॥ १ ॥ वारिजा वहु विपि
न जाके एक वौ कुमिलानि ॥ फूले फूले मधुप कांननि कौंन ति
न के हांनि ॥ २ ॥ कांम पावक जरत छांडी लौन लाये आनि ॥ जोग
पाती हाथ दीनी विष चढायौ सानि ॥ ३ ॥ सीस तें मनि हरी जिन के
कौन तिन में वांनि ॥ सूर के प्रभु निरखि हिरदै अज तज्यौ यह जा
नि ॥ ४ ॥ राग सारंग ॥ मधुकर स्याम हमारे चोर ॥ मन हरि लियौ मा
धुरी मूरति चितै नैन की कोर ॥ १ ॥ पकरे तौ हिरदै उर अंतर प्रेम प्री
ति के जोर ॥ गए छुडाय छोरि सब बंधन दै गये हसनि अकोर
२ ॥ सोवत तें हम उचकि परी हैं दूत मिल्यौ मोहि भोर ॥ सूर स्यांम
मूसि कें मेरो सर्वसु लै गयौ नंदकिशोर ॥ ३ ॥ राग सारंग ॥ मधुकर स
मुझि कहौ मुख बात ॥ परमसुरूपिये मान नाहि हूजनु काहू कौ इत
रात ॥ १ ॥ बीकनो परै सत्य पैं भासैं वौ लैं सत्य सरूप ॥ सुर देषत
कौं याचन कीजै वहां रंक कहां भूप ॥ २ ॥ कछु कहत कछु यै सु
खनि कसत परानै हक विधि चपी ॥ ब्रजजुवतिन कौं जोग सि
खावत की रति आनि पसारी ॥ ३ ॥ हम जान्यो सो भवर रस भोगी
जोग जुगति कहां पाई ॥ परमसुरू सिर मूडि वा पर कर सुख छा
रलगाई ॥ ४ ॥ पहें गनी नि विधाता कीनी तउ समुझत नाही
जो कोई पर हित कूप खनावै परै सो कूपहि मांही ॥ ५ ॥ सूरसो वे
प्रभु अंतरजांमी कासौं कहौ पुकारी ॥ तन वश क्रूर अवें डानिऊ ॥

सू॰सा॰ धोंर दूमिलि छातीजारी ॥ ३ ॥ राग सारंग ॥ मधुकर हम सें कहां करें
२३० पठाए हैं गोपाल कृपा कें आसन तें न टरें ॥ १ ॥ रसना बारि फेरि
नव खंड कै दें निरगुन के साथ ॥ इतनौं तन कुविलगु जिनि मोनहु
अखियां नाहीं हाथ ॥ २ ॥ सेवा कठिन अपूरब दरसन कहत अ
बहु गोपी फेरि ॥ कहियो जाइ सूर के प्रभु सों केरापाम ज्यों बेरि ॥ ४ ॥ रा
ग धनाश्री ॥ मधुकर तोऔर निसि खदेहु जानो गेजब लागेगी
होबरो कठिन है नेहु ॥ १ ॥ मनज्यो तिहपों हपि चरन न नर तन ध
रि गोकुल आयो ॥ कमलनैन के संग तें बिछुरे कहु कोनें मनु पायो
२ इहं इहां जाहु जिनि मधुराकौं माया मोहु ॥ गोपी सूर कहत ऊ
धो सों हम महा मतुम हो हु ॥ ३ ॥ राग धनाश्री ॥ मधुप कहि जानन नाहि
न बात ॥ फूंकि फूंकि हियरा सुलगावत उठि न इहां तें जात ॥ १ ॥ जा
उर न समत जसोधानंदन निर्गुन कहा समात ॥ कत भटकत डो
लत कुसुमनि कों तुम कि न पान न पात ॥ २ ॥ जदपि सकल बल्ली
बन बिहरत जाय बसत जलजात ॥ सूरदास ब्रज मिलबन आ
ये दासी की कुशलात ॥ ३ ॥ राग सारंग ॥ तिहारी प्रीति किधौं तरवा
रि दृष्टि धार करि मारी सांवरे आइल सब ब्रजनारि ॥ १ ॥ रही सुखे
त ठौर ब्रजजन रन हु न मानति हारि ॥ बिलपति रही संभारति छि
नु छिनु बदन सुधाकर बारि ॥ २ ॥ सुंदर स्यांम मनोहर मूरति रहिहैं
छबि हि निहारि ॥ रंचक सेस रह्यौ सूर के प्रभु अब जिनि मारौ मारि
३ ॥ राग धनाश्री ॥ मधुकर कौन मनायो मानें ॥ अविनासी अति अ
गम अगोचर कहा प्रीति रसु जानें ॥ १ ॥ सिखबहु जाहु समाधि की
बातें जे हैं लोग सयानें ॥ हम अपने ब्रज ऐसें हि बसिहैं बिरह बा
इ बौरानें ॥ २ ॥ सोवत जागत सपने सोतु षि रहि है सूपन मानें
बालकुमार किसोर बीली लासिंधु सुता में सानें ॥ ३ ॥ एरोयो
पयनिधि बूंद अलप सो को जो अब पहिचानें ॥ जाके तन धन प्रा
ण सूर हरि मुख मुसकांनि बिकानें ॥ ४ ॥ राग मलार ॥ मधुकर ये म
न बिगरि परे ॥ समुझत नाहि ज्ञान गीता कों मृदु मुसकांनि अरे
१ ॥ बालमुकुंद रूप रस राचे तातें बक्र खरे ॥ सधीन होइ स्यांन पू
छ ज्यों को टिक जतन करे ॥ २ ॥ हरि पद नलिन बिसारत नाहीं ॥
सीतल उरसं चरे ॥ जोग गंभीर अंधकूप कत देखत दूरि डरे ॥ ३
हरि अनुराग सुहाग भाग भरे अमियतें गरल गरे ॥ सूरदास ब

रएसेंहिर हिहूंकांनू वियोगभरे॥४॥ राग मलार॥ मधुकरजौ तुमहि
तू हमारे॥ तौयह भजनसुधानिधिमें जनि डारोजो गजलखारे
॥१॥ सुनुसठरीति सुरभि पयदायक कौ बछलेन हलफारे॥ जोम
गभीत होत रजु देखत कौ बछुव नग्रहि कारे॥२॥ निजकृत बु
द्धिविना दसननि हूति सजति धामन हिहारे॥ सोबल अधघंत
निसापंकजमें दलकपाट नहि टारे॥३॥ रेअलि चपल मोदरसलं
पट कित हिवकत बिन काज॥ सूर स्याम छविक्यौं विसरत हैं न
खसिसकर्प्रंगोविराज॥४॥ राग सोरठ॥ मधुकर कौन गांवकीरीति
ब्रजजुवतिनकों जोगकथा तुम कहत सबै विपरीति॥१॥ जासि
रफूल फुलेलमेलिकें हरिकर ग्रंथेमोरी॥ तासिर भसम समा
नपैंसेवनजटाकरत अघोरी॥२॥ रतनजटिततांटक बिराजत अ
रुकमलनकी जोति॥ तिनश्रवणनि पहिरावन मुद्रा तोहि दया
नहिं होति॥३॥ वेसरि नाक कंठमनिमाला मुरलीधार अरवास
तिन सुखसिंगी कहांवजावन भोजन आकलिनास॥४॥ जानन
कोंमृगमद घसि चंदन सुखमपटपहिराये॥ तानन कोंरचिवि
रचुरातन दें ब्रजन आयपठाये॥५॥ वे अवनासी ज्ञान घटैंगो ए
हिविधिजोगुसिखाये॥ करोभोगभरिपूरि सूर प्रभु जोग करों ब्र
ज आये॥६॥ राग मारु॥ मधुकर राखि जोगकी बात॥ कहिकहि क
थास्याम सुंदरकी सीतल करूसव गात॥१॥ नेनिर्गुणगुन हीन
गनेंगों सुनि सुंदरिअकुलात॥ दीरघनरी नाउ कागरकी कोरें
खेवादि जात॥२॥ हमतन हेरि चितै पटु अपनी दीखिपसारहि
लात॥ सूरदास प्रभु वास बन बसिकें कैसेंकलपविहात॥३॥
राग नट॥ मधुकर ये नैंनापैंहारे॥ निरखि निरखि मगु कमलनैंन
कों प्रेम मगन भये भारे॥१॥ ताहिनतैंनीदंपुनि नासी चौंकि प
तिअधिकारे॥ सपनतुरी जागत फुनिओई वसत जो हृदें हमारे॥
२॥ यह निर्गुन लेंताहि बतावो जो जानैं याकीसारे॥ सूरदासगो
पालछांडिकें चूसें टेंटी खारे॥३॥ राग धनाश्री॥ मधुकर कहूंका
हेकीन्यांति॥ ज्यौं जलमीन मधुप कमलनिकें छिनु नाहि प्रीतिघ
टांति॥१॥ कोकिल कुटिल कपट वायस छलि फिरि नाहि वहि ब
नजांति॥ तैसेंहि राजके लिरस अचयों बैठि एक ही पांति॥२॥ सु
तोहेत जोग जग पवन तकी जनु बहु विधि नीकी भांति॥ देखहु अ
हिमन मोह मया तजि ज्यों जननी जनरवाँति॥३॥ तिनकों कौं मन

सू॰सा॰ विसमो कीजे अेभुन लें सुख मांनि ॥ तैसेई सूर सुनें जदूनंदन व
२३१ जी एक रसु तांनि ॥ ४ ॥ राग रामकली ॥ मधुकर ल्यायो जोग संदेसो
भली स्यांम कुसलात सुनाई सुनत तहि भयो अंदेसो ॥ १ ॥ आस
नहीं जियक बहु मिलनकी तुम आवत तहि नासी ॥ जुवतिनिक
हूं तजटां सिर बांधन तो मिलिहें अविनासी ॥ २ ॥ तुम कों जिनि
गोकुलहि पठायो तेवसुदेवकुमार ॥ सूरस्यांम मनमोहनवि
हूरत ब्रजमें नंदकुलाय ॥ ३ ॥ राग सोरठ ॥ स्यांम विनोदी रे मधुव
नियां ॥ अब हरि गोकुल काहे कों आवहि चाहत नवजोवनियां
॥ वे दिन माधो भूलि विसरि गये गोद खिलाये कनियां ॥ गुहि
गुहि देते नंद जसोदा तनक कांच के मनि आं ॥ १ ॥ दिना च्यारि तें
पहरन सीखे पाटपीतांवर तननियां ॥ सूरदास प्रभु तजी कांम
री अब हरि भये चिकनियां ॥ ४ ॥ राग धनाश्री ॥ ऊधौ हम अति वो
री ॥ हरि हि दोषु नहि जानें री ॥ १ ॥ सुभग कलेवर कुमकुम खोरि
गुंजमाल अरु पीतपिछोरी ॥ २ ॥ रूप निरखि दृग लागे नेरी ॥ चि
तचुराय लयो मूरति सारी ॥ ३ ॥ गहि गज सोन्यों समाय अकोरी
या हित नें कछु बुधि कहि यत बोरी ॥ ४ ॥ सूरस्यांम सों काहे कें कने
री ॥ ५ ॥ राग धनाश्री ॥ कहां लगु मनियें
अपनी चूक ॥ विनगोपाल ऊधौ मेरी छाती ह्वै न गई द्वै टूक ॥ १ ॥
तनमन जोवन धृथा जात है ज्यों भुवंग की फूंक ॥ हृदें अगिनि की
दवा वरत हैं कोड़ि न विरह की हूक ॥ २ ॥ जिनि की मानि हरि लई
सीस तें कहि कों आहि मूक ॥ सूरदास ब्रजवास वसी हम मनहु
दाहिने मूक ॥ ३ ॥ राग कल्यान ॥ कहें हैं कोई परदेसी की वात ॥ मंदिर
भाग अधर करि दैं गये हरि भखु देखों जात ॥ १ ॥ ससिरिपु चरखि
सूररिपु जुगवर करि दैं गये हरिभखु देखों जात ॥ मघपंचक
लें गये स्यांमघन तातें मन अकुलात ॥ २ ॥ मनमोहन विनु रहि
नु पर तहें वार वार बिलखात ॥ सूरदास वस भई विरह के क
र मींजें पछितात ॥ ३ ॥ राग कल्यान ॥ ऊधो जो गुजानें कोनु ॥ हम अब
ला कहा जोग जानें जिय तजा कों रोनु ॥ १ ॥ जोग हम पें होइ न श्र
वें धरि न आवें मोनु ॥ बांधिहे क्यों मन पवन कों साधिहे क्यों पोनु ॥
२ ॥ लाल अंवर पहरि कें मृगछाल ओटें कोनु ॥ गुरु हमारे कूव
री कर मंत्रमाला जोनु ॥ ३ ॥ मदनमोहन विनु रहिन परिहें आन
वात के कोनु ॥ सूरप्रभु कव आय हें वे स्यांम दरस के रोनु ॥ ४ ॥ रा

ग ध नाश्री ॥ फूलविननननहिजाउसखीरीहरिविनुकैसेंवीनोंफू
ल॥सुनिरीसखीमोहिरामदुहाई फूललगततिरसूल॥१॥केसो
देखियतरातेरातेफूलनिफूलीडार॥हरिविनुफूलछरीसीला
गतझरिझरिपरतअंगार॥२॥कैसेंकेंपनघरजाउसखीरीसेज
भईघरनाउ॥चाहतिहोंयाहीपरचढिकेंस्यांमामिलनकोंजाउ
३॥प्रांनहमारेविनहरिप्यारेरहेअधरनिपरआइ॥सूरदास
केप्रभुसोंसजनीकोंनकहेंसमुझाय॥४॥राग विहागरो॥ऊधों
जीमेंतिहारेचरननिलागों वारकयांब्रजकरनिभांवरी॥निशि
ननीदआवेंदिनुभोजनुभावेंमगजोवतभईदृष्टिझांवरी
॥१॥वहेहेंवृंदावनस्यांमसघनवनवहजमुनावहेंसुभगसांवरी
एकस्यांमविनस्यांमनभावेंसुधिनरहीजेसेंवकनवावरी॥२
लाजछांडिहमउहईआवतीचलिनसकतआवेंविरहतांवरी
सूरदासप्रभुवेगिदरसुदीजेंहोइहेंजगमेंकीरतिवावरी॥३॥रा
ग विहागरो॥ऊधोजीजवहिंजाहुगोकुलमनिआगेंभेटअंकवा
रीपैयालागनुकहिवों॥अवमोहिविपतिपरीदरसनविनुसहि
नसकततनदारुनदुःखसहिवों॥१॥सूर[illegible]मोहिवेदिमहाभयो
अनिलसहिनपरेंयाविधिरहिवों॥सूरस्यांमविनुग्रहवनस
नोंविनमोहनकाकोंसुखलहिवों॥२॥अथश्रीजसोदाजीकेवा
काउद्धवप्रति॥रागसोरठि॥संदेसोदेवकीसोंकहियों॥हमनोंधा
यतिहारेसुतकीकृपाकरतहीरहियों॥१॥उवटनुतेलअोरता
तोजलुदेखतहीभजिजाते॥जोईजोईमांगतसोईसोईदेतीकर्म
कर्मकेनाते॥२॥तुमनोंटेवजांनतनहींहोइहोंतऊमोहिकहि
आवें॥प्रातउठतमेरेलाललडेतेंमाखनरोटीभावें॥३॥अ
वयहसूरमोहिनिसिवासरवडोरहतजियसोचु॥अवमेरे
अलवलडेतेलालनहोइहेंकरतसकोचु॥४॥रागसोरठि॥
जद्यपिमनुसमुझावतुलोगु॥सूलहोतनवनीतदेखिकेंमो
हनकेमुखजोगु॥१॥प्रातसमेंउठिमाखनरोटीकोविनमागें
देहें॥कोमेरेवालककुवरकांन्हकोंछिनछिनआगेंलेंहें॥
२॥कहियोजायपथिकघरआवहिरांमस्यांमदोउभैया॥सू
रइहांकतहोयदुखारीजिनिकेंमोसीमैया॥३॥रागसारंग
जोपेंराखतिहोंपहचांनि॥तोवारेकमेरेमोहनकोंमोहूदेहु
दिखाईआंनि॥१॥तुमरानीवसुदेवकिगेहिनीहमअहीरव्रज

सू.सा. वासी॥ पठें रहूमेरौ लाडुलडेनौ वारो एसी हांसी॥२ भली करी कंस
२३२ रिकमारे औसर काज कियौ॥ अवइतनु गायन कौं तु बरावें भरि
भरि लेत हियौ॥३॥ खांनपांन परधान राजसुख जो कोउ लाडुल
डावें॥ तरुपि सूर मेरो यह बालकु मांखन ही सचु पावें॥४॥ रा
म॥ ला र॥ मेरे मन इतनी सूल रही॥ वे बतियां छतियां लिखि राखी
जे नंदलाल कही॥१॥ एक द्यौस मेरे गृह आये में ही मथति दही
रति मांगत में मांन कियो सखि सो हरि गुसा गही॥२॥ सोचति अ
ति पछिताति राधिका मुरछित धरनि ढही॥ सूरदास प्रभु के बि
छुरें तें विथा न जात सही॥३॥ रा ग सा रंग॥ देखी माधों की मित्राई
आई उघरि कनक कलई स्यों दे तिन गये दगाई॥१॥ हम जाने ह
रि हितू हमारे उनके चित ठगाई॥ छांडी सुरति सबें व्रजकुल की
निठुर लोग मिलि माई॥२॥ प्रेम बिना हि कहां कोने सांचे ईश्व
हि राई॥ सूरदास आवे रहिनी बिकल मति कारमीजे पाछितांई॥३॥
रा ग सो र ठि॥ में जान्यों मोकों माधों हितु करि कियो॥ अति आरस अ
लिज्यों मिलि कमल हि मुख मकरंद लियौ॥१॥ बरुव ह भली पू
तना जाकों पे संग प्राण पियो॥ मन मधु अंचे निकट सूने तनु॥
यह दुख अधिक करियो॥२ देखि अचेत अमृत अवलोकनि चा
लजु सीचि हियौ॥ सूरदास प्रभु वा अधार तें ता तें परत जियौ॥३
रा ग सो र ठि॥ अब या तन राखि का कीजे॥ सुनि री सखी स्याम सुं
दर बिनु बांटि बिषम बिष पीजे॥१॥ के गिरिये गिरि चढ़ि हूं सजनी
के सुकर सीस सिव दीजे॥ के दहिये दारुन दावानल के तौ जाइ
जमुन धसि लीजे॥२॥ दुसह बियोग बिरह माधो के कौन दिनहि
दिन छीजे॥ सूरदास प्रीतम बिनु राधे सोचि सोचि मन खीजे॥३॥ ध
प भगवान प्रति उद्धव वाक्य॥ रा ग ध ना श्री॥ माधों सुनो व्रज कों प्रे
म॥ बूझि हम षटमास देख्यौ गोपिकन कों नेम॥१॥ हृदें तें नहि टि
रत उनके स्याम रांम समेत॥ अश्रु बस लिल प्रवाह उर पर अ
रघु नेंन निदेत॥२॥ चीर अंचल कलस कुच मनों पांणि पद सुव
ढाइ॥ प्रगट लीला देखि हरि के कर्म उठनी गाइ॥३॥ देह गेह समे
त अरपण कमल लोचन ध्यांन॥ सूइ उनके भजन आगें फीको
लागें ग्यांन॥४॥ रा ग ध ना श्री॥ कहां लों कहियें व्रजकी बात॥ सुनहु
स्याम तुम बिनु लोगन जैसें दिवस बिहात॥१॥ गोपी गाय ग्वाल गो
सुत सब मलिन बसन कृशगात॥ परमदीन जनु सिसिर हेम हत

प्रभु जगत विख्यात ॥२॥ मोकौं कहूं आवत देखत हौं मिलि कूजत
कुसलात ॥ चलन न देत प्रेम प्रति व्याकुल पिक पिय चरननि लप
टात ॥३॥ पिक बातिक वन वसन न पावत वायस वलि नहिं खात
सूरदास संदेसनि के उर पाति कन वाम गजात ॥४॥ राग केदारो
उनमें पांच दिवस जो वसिये ॥ नाथ तिहारी सौं जिय उपजत फे
रि अपुन पांव कसिये ॥१॥ वह लीला विनोद गोपिन के देखें ही व
नि आवे ॥ मोकौं बहुरि कहां वैसो सुख वडभागी सो पावे ॥२॥ म
नसि वचन कर्मना कहूं तहां नाहिंन कछु अवराखी ॥ सूरका
टि उरसौं हौं सजतें दूध माफ की मांखी ॥३॥ राग केदारो ॥ चितैं सु
नो स्याम प्रवीन ॥ हरि तिहारे विरह राधे मैं जो देखी छीन ॥१॥ क
हन कौं संदेस सुंदरि गवन मो तन कीन ॥ छुटी छुद्रावलि चर
न अरुझे गिरी वलत न हीन ॥२॥ वहुरि उठी सभारि सुभट ज्यौं ।
परम साहस कीन ॥ हौं क तकौं पठये वेकाज हरि पठावा वरां अ
पानौं ॥ तुम कहूं वौफ वहुत वात निकौं उहां गाउ नौ जानौं ॥३॥ वि
नु देखें मन मो हन सखि री सव सुख उनकौ दीन ॥ सूर हरि के वद
न अंबुज रही आसा लीन ॥४॥ राग केदारो ॥ माधौ यह ब्रज कौं व्यौ
हार ॥ मेरौ कह्यौ पवन कौं मुख भयो गावत नंद कुमार ॥१॥ ए
क ग्वारि गोधन लै रेंगति एक लकुट कर लेति ॥ एक मंडली
कौं वैठारति छाक वांटि के देति ॥२॥ एक ग्वारि नटवर बहु ली
ला एक कर्म गुन गावति ॥ कोटि भांति कैं मैं समुझाई नैं कुन
उर मैं ल्यावति ॥३॥ निसि वासर या हीं ध्यान सब व्रज जन दिन दिन नौत
न प्रीति ॥ सूर सकल फीकौं लागत है देखत वह रस रीति ॥४॥
राग केदारो ॥ कहिवे मैं न कछू सक राखी ॥ बुद्धि विवेक अनुमा
न आपने मुख आई ने भाखी ॥१॥ हौं पचि कहत एक पहर में वे
छिन मांह अनेक ॥ हारि मानि उठि चल्यो दीन ह्वै छांडि आपनी
टेक ॥२॥ कंठ वचन न वोलि आयो हृदै परिहस भीन ॥ नैन भ
रि जे रोइ दीनौं ग्रसन आपद दीन ॥३॥ श्री मुख कौं सिख ई ग्रं
थो कथि ने सव भई कहांनी ॥ एक होइ तौ हि उन रहीं जैं सूर
मठ प्रवु हांनी ॥४॥ राग केदारो ॥ कहौं तौ सुख आपनौ सुनाऊं
व्रज जुवतिन कौं कथा जोग की क्यौं न एतो दुख पाऊं ॥१॥ हौं
एक वात कहत निर्गुन की ताही मैं अटकाऊं ॥ वेउ मटी वा
हित रंग ज्यौं ता पर व्याहन पाऊं ॥२॥ कौन कौन कौं उत्तर दी

सू॰सा॰ जेंता ले भज्यों अगाऊं ॥ वे मेरे सिर पारी पारहि कें षाका हि उठाऊं
२३३ ३ ॥ एक आंधरों हियेकी फूटी दोरें पहरि खराऊं ॥ सूरस कल ब्र
जपट रस सी हों बारहि खरी पढाऊं ॥ ४ ॥ राग केदारो ॥ नवतें इन्ह
सब हूं न सचु पायो ॥ जबतें हरि संदेस तिहारो सुनत तांवरो आ
यो ॥ १ ॥ फूले ब्याल दुरे ते प्रगटे पवन पेट भरि खायो ॥ भूले मृगा
चौक चरणनि तें हुतो ज्यो जिय बिसरायो ॥ २ ॥ ऊंचे बैठि बिहंग
सभा में उठि कोकिल मंगल गायो ॥ निकसि कंदरा तें केहरि मा
थें पर पूंछ हिलायो ॥ ३ ॥ ग्रह बन तें गजराज निकसि अंग अंग
गरब जनायो ॥ सूर बहुरि हो इहें राधा कों बैर नहीं कों भायो ॥
४ ॥ राग केदारो ॥ फिरि फिरि मोपर कनहर खपावत ॥ अब कें औरइ
तुरको ई पठवो बाल नहे इहें आवत ॥ १ ॥ मेंपर मार श्रु सब समु
झायो रूखे राह तब को पी ॥ सुफलक सुत कों कहां मांनिहें आ
गनि करनिहें गोपी ॥ २ ॥ इतनी सुनत कमल दल लोचन खेंचि
सुकर रव कलि लीनों ॥ सूर स्याम सुसिष्य जांनि जिय नरकें जांनि
हरि दीनों ॥ ३ ॥ उद्धव प्रति भगवान वाक्य ॥ राग धनाश्री ॥ ऊधो मो
व्रज बिसरत नाहीं ॥ हंस सुता की सुंदर कूलें अरु कुंजन की छां
हीं ॥ १ ॥ वे सुरभी वे व छरे दोहन खरिक दुहावन जाहीं ॥ ग्वाल बा
ल सब करत कुलाहल नाचत गहि गहि बाहीं ॥ २ ॥ यह मथुरा पु
री कंचन की मणि मुक्ता हल जांहीं ॥ जबहिं सुरति आवति वा सु
ख की जिय उमगत तनु नांहीं ॥ ३ ॥ अनन बन भांति करी बहु लीला
जसोदा नंद निबाहीं ॥ सूरदास प्रभु रहे मौन ह्वै यह कहि कहि प
छिताहीं ॥ ४ ॥ गोपी वाक्य उद्धव भगवान प्रति कहें ॥ राग सारंग
देषि री हरि जू के नैनन की छबि ॥ यह अनुमान मन मानि मांनि भो
अंबुज मेघ न रवि ॥ १ ॥ खंजरीट अति चिपल चपल भये बनमृग
जल मह मीन रहे दबि ॥ इते मान तन न कछू कहत हैं कोकवि २
इन सोंनों ठई हरि आवें न कछू फबि ॥ सूरदास उपमा जु गई सब
ज्यों होमत हवि ॥ ३ ॥ राग केदारो ॥ फिरि व्रज बसहु गोकुल नाथ
बहुरि न तुमहि जगाय पठवों गोधननि के साथ ॥ १ ॥ बरजों न
माखन खात कबहूं देहों देत लुटाइ ॥ कबहूं न दैहों उराहनों जसो
मति आगे जाइ ॥ २ ॥ दौरि दाम न देहुंगी लकुटी न जसोमति पानि
चोरी न देहुं उघारि कें औगुन न कहिहों आनि ॥ ३ ॥ करोंगी न तुम मा
सों मांन हठ हठि हों न मांगत दान ॥ कहिहों न मृदु मुरली बजाव

नकरनतुमसोंगोन॥४॥ कहिहौंनचरननिहंनजावकगुहन
वेनीफूल॥ कहिहौंनकरनसिंगारबरनरबसनजमुनाकूल
५॥ भुजभूषनजुनकंधधरिकेंरासनत्यनकराउ होंसंकेतनि
कुञ्जवासिकेंदूतीमुखनबुलाउ॥६॥ कोटिनारिसोंविलसिश्रा
वहुभ्रकुटिरिसनिचढाउ॥ दंतदेउनपियनमुखमुखश्रवणसों
सचढाउ॥७॥ घोषनारिश्रयानिचावरिसुमसरीकूनकाज॥ तु
मचतुरसुजांनसांवरेप्रीतिलागोलाज॥८॥ चरनमदृनरकुब
कठिनसोकरिहेंनहीसजोगु॥ दरभुजाभरिसमरकरिभरि
तुलटोंनुकरिहेंभोगु॥९॥ एकबारसुदरसदिखावहुप्रीतिपंथ
बसाइ॥ चवरकरोंचढायश्रासननेंनश्रंगश्रंगलाय॥१०॥ देहु
दरसननेंदनंदनमिलनहीकीश्रास॥ सूरप्रभुकीकुवरछवि
कोंमरतलोचनप्यास॥११॥ उद्धवप्रतिकुविजाकेवाक्य॥ राग
सारंग॥ सुनियेंएकसंदेसोऊधोतुमगोकुलकोंजात॥ ताप्राछें
तुमकहियोउनसोंएकहमारीबात॥१॥ मातपिताकोंहेतजा
निकेंकांन्हमधुपुरीआये॥ नाहिनस्यांमतिहारेप्रीतमनाज
सुदाकेजाये॥२॥ समुझोबूझोंअपनेमनमेंतुमजोकहाभलों
कीनों॥ इहबालकतुममतवारीनीसबेंआपवसकीनों॥३॥
औरजसोदामाषनकाजेबहुतनकत्रासदिषाई॥ तुमहिसबेंमि
लिदांवरिदीनी रंचदयानहिआई॥४॥ औरवृषभांनसुताजो
कीनीसोतुमसबजियजांनो॥ याहीलाजतजीव्रजमोहनअ
बकाहेदुखमांनो॥५॥ सूरदासयहसुनिसुनिबातेंस्यांमरहेसि
रनाई॥ इहकुविजाउतप्रेमबावरीनीकहतनकछुवनिआई
॥६॥ राग मलार॥ कोउआवतहैतनस्यांम॥ वैसेइपटवैसेइरथवें
ठनिवैसीयेंउरदांम॥१॥ जैसेंउठितैसेंईदौरीछांडिसकलगृ
हकांम॥ रोमपुलकगदगदभईतिहुंछिनसोचिश्रंगश्रभिरा
म॥२॥ इतनीकहतश्रायगयेऊधोरहीठगीतिहिठांम॥ सूरदास
प्रभुह्यांक्योंश्रावेंवधेकुविजारसभाम॥३॥ राग सारंग॥ कबहुं
सुधिकरतगोपालहमारी॥ पूछतनंदपितासोंऊधोश्ररुजसु
मतिमहतारी॥१॥ कबहूंतोंचूकपरीहमजांनतकहांश्रबकें
पछितानें॥ वासुदेवघरभीतरश्रायेहमश्रहीरनाहिजांनें॥२॥
पहलेंगररगकह्योहेहमसोंयोदेखेंजिनिभूले॥ सूरदाससखा
मीकोंविछुरेंरातिदिवसउरशूले॥३॥ राग बिलावल॥ भवीवा

सू॰सा नसुनियतहैं आजु ॥ कोऊक मलनैं नपठयो हैं तनवनाय अपनों
२३५ सों साजु ॥ ५ ॥ कूझों सखा कहौ कैसें कें अबनाही कें वेक छु काजु
कंस मारि वसुदेव गहू आने उग्रसेंनि कों दीनों राजु ॥ राजाभये
कहां है इह सुख सुरभि संग वन गोपसमाजु ॥ अब जो सूर कर
हू कोउ कोटिक नाहिन कान्ह करत ब्रजवाजु ॥ ६ ॥ रा॰ ॥ नट ॥ ऊधों
हम आजु भई वडभागी ॥ जैसें सुमन सुगंध लें आवत पवन म
धुप अनुरागी ॥ १ ॥ अति आनंद वढ्यौं अंग अंगमें परें न पहसुख
त्यागी ॥ विसरी सब दुख देखत तुमकों श्यामसुंदर हम लागी
॥ २ ॥ ज्यौं दरपन मध्य दृगनि रखत दृष्टि तहां नहि जाई ॥ त्यौंही सूर
हम मिली सांवरे विरह विथा विसराई ॥ ७ ॥ रा॰ ॥ सारंग ॥ पाती मधु
वनतें आई ऊधों हरि घस्योमलि लिख पठई आय सुनहु मेरी माई ॥ १
अपने अपने गृहनतें दौरी लें पाती उर लाई ॥ नेंननि नीर निमिष
नाहि खंडित प्रेमन विथा वुझाई ॥ २ ॥ कहांवह्यामसूने इह सूने गोकु
लहरि विनु कछु न सुहाई ॥ सूरदास प्रभु कोन चूक ते स्याम सु
रति विसराई ॥ ८ ॥ रा॰ ॥ नट ॥ सुनु गोपी हरिको संदेसु ॥ करि समाधि
अंतर गति चितवन प्रभु कौ यहु उपदेसु ॥ १ ॥ के अविगत अवि
नासी पूरन घट घट रहे समाई ॥ तिहि निह्चें कें ध्यावहु एसें म
न विनत कमल मन लाई ॥ २ ॥ यह उपाय कें विरह तजहु गी मिलें
ब्रह्म तव आई ॥ तत्व ज्ञान विनमुकति न होई निगमसुनावत
गाई ॥ ३ ॥ सुनत संदेस दुसह माधौ के गोपीजन विलखांनी ॥ सू
र विरह की कौन चलावैं नेंन ढरत अति पांनी ॥ ९ ॥ रा॰ ॥ सारंग ॥
हों तुमपें ब्रजनाथ पठायो ॥ आतमज्ञान सिखावन आयो ॥ १
आपुहि पुरुष आपुहि नारी ॥ आपुहि वान प्रस्थ ब्रतधारी ॥ २
आपुही पिता आपुही माता ॥ आपुहि भगिनी आपुहि भ्राता ॥ ३
आपुहि पंडित आपुहि ज्ञानी ॥ आपुहि राजा आपुहि रानी ॥ ४
आपुहि धरती आपु अकासा ॥ आपुहि स्वामी आपुहि दासा ॥ ५
आपुहि ग्वाल आपुही गाइ ॥ आपुहि आपु चरावन जाय ॥ आपु
हि भवर आपुही फूल ॥ आतमज्ञान विनाजग भूल ॥ ६ ॥ रंकराउ
दूजों नहि कोई ॥ आपुहि आपुनि रंजन सोई ॥ एहि प्रकार जाको
मन लागें ॥ जरा मरन जीतें भ्रम भागें ॥ ७ ॥ सुनि ऊधौ पहकोतुक
पांनी ॥ तुम तो महा पुरुष बड ज्ञानी ॥ जोगी होइ सो जोगु हि जा
नें ॥ नवधा भक्ति सदां मन मांने ॥ ५ ॥ भाव भगति हरि जन चित था

हैं ॥ जोतिरूपसिवसनकविचारें ॥ तुमकहुं रचिरचिकहतसयां
नी ॥ अवलाहरिके रूपदिवानी ॥ ९ ॥ जोतपीरवें ध्यानहिजोंनें
विनुदेखें कैसें रुखिमांनें ॥ फिरिफिरिकहें उहेंसुखिआवें ॥ स्याम
रूपबिनकौरनभावें ॥ १० ॥ जोगिसमाधिजोतिचितलावें ॥ परमा
नंदपरमपदपावें ॥ नवकिशोरकोंजवहिनिहारें ॥ कोटिजोति
ताछविपरवारें ॥ सजलमेघघनस्याममरीर ॥ रूपठगीहलध
रकेवीर ॥ सिरसिखंडकुंडलवनमाल ॥ कौंविसरेंवेनेंनविसा
ल ॥ ११ ॥ मृगमदतिलकअलकघुंघुरारे ॥ अनमोंहनमनहरेहमा
रे ॥ भकुटीविकटनासिकाराजें ॥ अरुनअधरमुरलीकलवाजें
॥ १२ ॥ दाडिमदसनदमकदुतिसोहें ॥ मंदसुमिकानिमदनमन
मोहें ॥ चारुचिवुकउरपरगजमोती ॥ दूरिकरतउडगनकीजो
ती ॥ १३ ॥ कंकनकिंकिनिपारिकुविराजें ॥ चलतचरनकलनूपुर
वाजें ॥ वनकीधातुचित्रतनकीयें ॥ वहछविनिरखिजुरहीहमही
यें ॥ १४ ॥ पीतवसनछविवरनिनजाई ॥ नवसखिवसुदरकुंवरक
न्हाई ॥ रूपरासिग्वालिनिकोंसंगी ॥ कवदेखेंवहरूपत्रिभंगी ॥ १५
जोतुमहितकीवातसुनावहु ॥ मदनगोपालहिक्योंनमिलाव
हु ॥ ताहिभजहुकिनिसबेंसयांनी ॥ खोजतनाहिमहामुनिज्ञानी
॥ १६ ॥ जाकेंरूपरेखकछुनांही ॥ नेंनमूंदिचितवहुचितमांही ॥ हरें
कामलमेंजोतिविराजें ॥ अनहदनादनिरंतरवाजें ॥ १७ ॥ इडापिं
गलासुखमनानारी ॥ सून्यसहजमेंवसेंमुरारी ॥ मातपितानहि
दाराभाई ॥ जलथलघटघटरहेसमाई ॥ १८ ॥ इहप्रकारभवदु
स्तरतरिहों ॥ जोगपंथक्रमक्रमअनुसरिहों ॥ तबमधुकरसुखमू
दहुजाय ॥ हमरेचितवितरहेजदुराइ ॥ १९ ॥ ब्रजवासिनिगोपाल
उपासी ॥ ब्रह्मज्ञानसुनिआवेंहांसी ॥ अवलोंजोगकवहुंनहि
आयौ ॥ मानहुकुवजारूपमेंपायौ ॥ २० ॥ वोलिसुगाहककपाय
दिखायौ ॥ माथेंमधुकरहांपपठायौ ॥ अवलागीअलपरनदे
री ॥ सौछ्याछगपोंकें सक्कीचेरी ॥ २१ ॥ रामजनममतपसाजुदराई ति
हिफलवधूवरीपाई ॥ सीताविरहवहुतदुखपायौ ॥ अवकुवि
जामिलिहियोंसिरायौ ॥ २२ ॥ ग्यानतिरासकहालेंकीजें ॥ जोगमो
टदासीसिरदीजें ॥ वहअद्भुतअविगतअविनासी ॥ त्रिगुणर
हितवपुधरेंनदासी ॥ २३ ॥ काहेंमधुकरसुनिवातहमारी ॥ इह
वहस्वत्पसुनहुव्रजनारी ॥ नाहिंदासीकुंराउनिकोइ ॥ जहंदेख

सू॰सा॰ दुनहीं ब्रसहि सोई ॥ २४ ॥ आपुहि औरहि ब्रसहि जानें । ब्रसविना दु
२३५ सरनहि मांनें ॥ बारबार एवचननिवारो । भक्तिविरोधी ज्ञानतुमा
रो ॥ २५ ॥ होतकहां उपदेश्यों तेरो । नेंनसुखसनाहिं अलिमेरो ॥ हरि
पथजोवत निमिषनलागे । कृष्णवियोगिनिनिशदिनजागे
२६ ॥ नंदनंदनकेदेषेजीवें ॥ रुचिवहरूप पवननहिपीवें ॥ नवह
॥ आवेंतवसुखपावें ॥ मोहनमूरतिनिरषिसिरावें ॥ २७ ॥ हम
हवबन अलिहमहिनभांवहि । जोगकहांओढेंकिनिलांवहि
ऊधोंकहें धन्यब्रजबाल ॥ जिनिकेसरवसमदनगोपाल ॥ २८
बहमनन्यमोंयहमतिआई ॥ तुम्हरे दरसभगतिमेंपाई ॥ तु
मममगुरुमेंदासतुम्हारो ॥ भगतिसुनायजगतनिस्तारो ॥ २९
भ्रमरगीतजेसुनेंसुनावें ॥ प्रेमभक्तिसोप्राणीपावें ॥ सूरदास
गोपीवडभागी ॥ हरिदरसनकीडोरीलागी ॥ ३० ॥ राग सारंग ॥
मधुकरभली सुमतिमतिखोई ॥ हांसीहोंनलगीयाब्रजमेंजो
गहिसाखहुगोई ॥ १ ॥ आतमरामलखावतडोलतघटघटब्या
पकजोई ॥ चापेंकांखफिरतनिर्गुणकोंयांगाहकनहिकोई ॥ २
प्रेमकथासोईपेंजांनेंजापेंबीतीहोई ॥ तूनीरसएतीकहांजांनें
बूझिदेखिवेवोई ॥ ३ ॥ बडोंदूततूंबडेठोरकोवहियेंबुद्धिवडोई ॥ सू
रदासपूरीषहिषटपदकहतफिरतहेंसोई ॥ ४ ॥ राग सारंग ॥ सुनि
आतज्ञानकथाअलिगात ॥ जिहिमुखसुधाबेणुरवपूरितअबति
हीछिनहिसुहात ॥ १ ॥ जहांलीलारसमखीसमाजहिकहत
कहतदिनजात ॥ विधनाफेरिकियोंअबदेखियतनहांषटप
दसमुझात ॥ २ ॥ विद्यमांनरसरासलईतेचकतमनइतअरुझात
रूपरहितकछुवकतवदनतेंमतिकोउठगभुरकात ॥ ३ ॥ सा
धुवादअजितिसाहजांनिकोउजिनितनमनविसरात ॥ नंदनंद
नकरकमलसुनिरी छविमुखउरपरसात ॥ ४ ॥ एकएकतेंस
वेंसयांनी ब्रजसुंदरिनसकात ॥ सूरस्यांमरससिंधुगामिनीन
हिंवहहदसाहिरात ॥ ५ ॥ राग सारंग ॥ ऊधोंइतनीकहियोंजाउ ॥ अ
तिकृशगाततभईहेंतुमबिनुबहुतदुषारीगाय ॥ १ ॥ जलसमूह
वरखतअंखियनतेंहूंकतलेंलेंनाउ ॥ जहांजहांगोदोहनकर
तेंढूंढतिसोईसोईठांउ ॥ २ ॥ परतिपछाररवायतेहीछिनुअति
व्याकुलहेदीन ॥ मांनहुसूरकाढिडारेहेंवारिमधतेंमीन ॥ ३ ॥ रा
गसारंग ॥ ऊधोजोगसिखावनआए ॥ सिंगीभसमअधारीमुद्रा

लेंब्रजनाथपठायें॥४॥ जोपैंजोगलिख्योगोपिनकोंकतरसरा
सखिलाए॥ तबहिंजानकाहेनउपरेस्योंअधरसुधारसप्याए
२॥ मुरलीसबदसुनतबनगवनतिसुतपतिगृहबिसराये॥ सू
रदासमंगछांडिस्यांमकोंमनहिंरहेपछिताये॥३॥ रा॥ सारंग
ऊधोंलहेनेंअपनोंपैयें जेवकछुबिधनारचीसुभैयेंआनंदे
घनलीयें॥४॥ कहियेंकहेसुकहतनबनई सोचिहदेंपछितै
यें॥ कुबिजावरुपावेंमोहनसोंहमहींजोगबतैयें॥२॥ आज्ञा
होइसोईतुमकहिवोंबिनतीयहेंसुनैयें॥ सूरदासप्रभुकृपाजा
नियेंदरसनसुधापिवैयें॥३॥ रा॥ सारंग॥ ऊधोंहमेंस्यांमसुंद
रबिनुसबकोऊसमुझावें॥ जिहिंबिधिमिलाहिंस्यांमघनसुंदर
सोबिधिकोउनबतावें॥१॥ यद्यपियतनकियेअनेकपरिनहिं
नमनथिरमांवें॥ तद्यपिदृष्टिहमारेलोचनऔरनदेख्योभावें॥२
बासरनिशाप्राणवल्लभबिनुरसनाऔरनगावें॥ सूरदासप्र
भुप्राणहिंलगतेंकहियेंजोकहिआवें॥३॥ रा॥ सारंग॥ ऊधोंकहां
करेंलेपांती॥ तोंलगिनाहिंगोपालहिलिखतिबिरहदहतुमे
रीछांती॥१॥ निमिखएकमोंहिंबिसरतनाहीनसरदसमेंकीरा
ती॥ मनतोंतबहींतेंहरिलीनोंजबभयोंमदनबराती॥२॥ पीर
पराईकातुमजानोंतोनोतोमसघाती॥ सूरदासस्वामीसों
तुमफुनिकहिहोंछकरसुहाती॥३॥ रा॥ सारंग॥ ऊधोंइतनीजा
यकहीं॥ सबबल्लभीकहतहरिएदिनमधुपुरीहिरहों॥१॥
आजिकालतुमहूंदेखतहोंतपतितरनसमचंद॥ सुंदरस्यां
मपरमकोमलतनुक्योंबसहेंनंदनंद॥२॥ मधुरमोरपिक
परखप्रबलअविबनउपबनचढिबोल॥ सिंहबकसमगा
यबछब्रजबीथ्यनिबीथिनिडोलत॥३॥ आसनअसनबस
नबिषअहिसमभूषनभवनभंडार॥ जितकितफिरतदुस
हदुमद्रुमप्रतिधनुषलयेंसतमार॥४॥ तुमतोंपरमसाधुको
मलतनुजांननहींसबनीति॥ सूरस्यांमकोंकैसोंबोलेंब्रजबि
नदेंपैंदईहईति॥५॥ रा॥ मलार॥ जोपैंऊधोंहृदयामांझहरी॥ तो
पैंइतीअवज्ञाउनपैंकैसेंसहीपरी॥१॥ तबहिंदवादुमदहन
नपाएअबक्योंदेहजरी॥ सुंदरस्यामनिकसिउरतेंहमशीत
लक्योंनकरी॥२॥ इंद्रहिसातबरषनिजिनेंनखमघटनलक
घरी॥ भीजतसीतनीततनुकांपतरहेंगिरिक्योंनकरी॥३

सू.सा कारंकेंबाणसरापनलेंहोंअवइहिअनखमरी॥ एतेमानसर
२३६ मुनिजोगजुविरहिनिविरहभरी॥४॥राग मलार॥ ऊधौइहिब्र
जविरहबढ्यौ॥ घरबाहिरसरितावनउपवनबल्लीद्रुमनि
चढ्यौ॥१॥बासररयनिसधूमभयानकदिसिदिसितिमिरब
ढ्यौ॥ इंदुकरनअतिप्रबलहोतपुरपयसोंअनलडढ्यौ॥२
जरिकिनहोतभस्मछिनमहियांहांहरिमंत्रपढ्यौ॥ सूरदास
प्रभुनंदनंदनबिनुनाहिनजानिकढ्यौ॥३॥राग मलार॥ बहुर
हिकुबिजाभलौकियौ॥ सुनिसुनिसमाचारऊधौअधिक
जुड़ानौहियौ॥१॥जाकौंगुणहूपरिरूपनामहरिहरयौसोफिरिन
दियौ॥ तिहिंअपनौमनहरनजानंन्यौहसिहसिजोगुलियौ
२॥सरनननकेचंदनचढायकेअधरामृतजोपियौ॥ औरसक
लनागरनारीकौदासीदाउलियौ॥३॥राग धनाश्री॥ ऊधौअब
जोकौंनलहेंहैं॥ जियजानौंअरुहरैबिचारौहमनइतौदुखसे
हैं॥१॥बूझौजायकौनकेढोटाकाऊतातकहेंहैं॥ खायोखेल्योसं
गहमारेतहांकौकहांबनेहैं॥२॥गोकुलमणिमथुराकेबासी
कोलैभूरीकेहैं॥ हमअबलिखिपठवनचाहतजिहूंउहांपाति
नहिपेहैं॥३॥इनिगैयनितजिबोछांड्यौहैजोनहिलालुचरेहैं॥
एतेपरनहिमिलतसूरप्रभुफिरिपीछैपछितेहैं॥४॥राग ध
नाश्री॥ ऊधौहमसेंबहुतकठिनपरी॥ जोगीवहितौंसुनिसहज्ञा
नीतनतजिसपहरी॥१॥गुणभावहितौंशुकसनकादिक
संगध्यावतौलीलाफुरी॥ आसाअवधिसंतोषधरहितौ
धर्मनब्रजसुंदरी॥२॥अपामाहेसबसखीसुजानीपेसबविर
हभरी॥ सोकसिंधुनरिविकौनौकाजिहिमुखमुरलिधरी॥३
निसदिनफिरतनिरंकुशआनिबडमानेमदनकरी॥ ढाहंगौ
सबधामसूरजोबिनतनबहकेहरी॥४॥राग धनाश्री॥ ऊधौव
हतनकछूबनें॥ अधरामृतआस्वादिनिरसनाकैसेंजोग
भनें॥१॥जिहिंलोचनअबलोकेनखसिखसुंदरनंदतनें॥ ते
लोचनक्यौंजायऔरपथलेपठयेअपनें॥२॥रागिनिमाया
तरंगतानघनजेश्रुतिमुरलीसुनें॥ तेश्रुतिजोगसंदेसक
ठिनकहिंकांकरमोलिहनें॥३॥सूरदासएामामोहनकेरह
गुनविविधिगनें॥ कनकेलतानेंउपजेंनमुकतापटपदरं
गचुनें॥४॥राग केदारौ॥ ऊधौहरिकेऔरढंग॥ जहांनअनंग

रसने हू रूप कों तहां रई गति रई अनंग ॥१॥ जिहि अनंग वपु
असुर रासि कों ते भई नौन न अंग ॥ आसु विषमता तमि रेऊ
सम भए वान कलित त्रिभंग ॥२॥ कनक वेलि सन रलसि
रमंडित दृढ नरलनाल वंग ॥ स्यामास रन विसारि भए जा
इं चंचल नारि पलंग ॥३॥ ते मुख वहुत न वहुत पावहिं जे क
रहिं अंग संग ॥ काकाईं जो नहीं व्रज के सूरप्रभु श्री रंग ॥४॥
रा॥ केदारो ॥ ऊधो व्रज रिपु वहुरि जिये ॥ जे हमरे कारन नंदनं
दन हनि हनि दूरि किये ॥१॥ निशि के वे सुख कीहें आवति अ
ति उर करत ने सुकंपा हिये ॥ तिन पें ते तन प्राण हमारे रवि हो
छिन कछि नम्यालिये ॥२॥ वन्नव करूप अघासुर सम य हु
कि तहू तौ न विनोस कियो ॥ कोटिक काली सम कालिंद्री
षत सलिलन जान पिये ॥३॥ अरु ऊंचे उस्वास तरण वर्त ति
हिं सुख सकल उडाय दिये ॥ केसी सकल कपट सों विन स
रस रएं कान्हो तन्कि ये ॥४॥ रा॥ सारंग ॥ इहिं कहियें कान्हि सु
नाए हरि विछुरत जे तौ सहियत तें इतौ विरह के घाए ॥१॥
वरु मांधो मधुवन नहीं रहते कत जसुदा के आए ॥ कत प्रभु
गोप भेष व्रज धार्यो कत सुख उपजाए ॥२॥ कत गिरि
धारि इंद्र मद मेट्यो कत वन रास वनाए ॥ अव कहूं निठुर
भए हम ऊपर लिखि लिखि जोग पठाए ॥३॥ परम प्रवीन स
वैं जानत हौं ताते यह कहि आये ॥ अपनी कौन कहूं सुनि स
जमातु पिता विसराए ॥४॥ रा॥ सारंग ॥ हम हूं तौं ऊधो अपनौ
सों कछिन वे रत मन निशि दिनु ॥ मधुपक या के हि सम फाव
त तद पि नरहू न नंदनंदन विनु ॥१॥ वरजति अव निशार
धा नयन जल मुख वचन निकस्यो ओर चलावति ॥ अनेक
भांति चित धरति निठुरता सव मिटि सुरति इहैं जिय आवति
॥२॥ कोटि शक्र सम सुख अनुमानति हरि समीप सम तानहि
पावति ॥ थकित सिंधु नौका के षग ज्यों फिरि फिरि ओहि गु
ण गावति ॥३॥ नोई वचन विचारति अंतर नेई ते ई अनल अ
धिक उर दाहति ॥ सूरदास परिहरति सकत तनु वार वार
हरि मिल्यो ई चाहति ॥४॥ रा॥ सारंग ॥ ऊधो भली करी गोपाल
आपन तौ आंवत नांही यहां उहां रहे हु [illegible] काल ॥१॥ चंदन
चंद हुतौ तव सीतल कोकिल सबद रसाल ॥ अव समीप

सू॰सा॰ बकैसमलागतेसबव्रजउलटीचाल॥२॥सूरश्यामकैंचुनि
२३१ कंरककभाललसुभितिलकभयोभाल॥सेजसिंधुगहतिमि
रकंररासर्पसुमनमनिमाल॥३॥हमतोंन्याइसहैंएतोंसुख
वनवासीसुगुवाल॥सूरदासस्वामीसुखसागरभोगीभ्र
मरभुवाल॥४॥रा॰सो॰रठि॥अपनेमनसुरतिकरतिरहिवी
ऊधौइतनीवांतस्यांमसोंसमोपायकहिवी॥१॥घोषवसना
कीचूकहमारीकछूनजियगहिवी॥परमदीनजदुनाथजांनि
कैंगुणविचारसहिवी॥२॥एकवारस्यालुरदरसदैंविरहगा
सिरहिवी॥सूरदासप्रभुवहुतकहांकहोंवचनलाजवहिवी
३॥रा॰सारंग॥ऊधौहूरिकरिपठवतजेती॥जोमनहांपाह
मारेहोतोंतोकतसहतीएती॥१॥हृदेंकठोरकुलिसहूतेंश्र
तितामैंचेनअचेती॥तबकुचवीचश्रचलनहिसहतीअव
जमुनाकीरेती॥२॥सूरदासप्रभुतुमरेमिलनकोंसरणरहु
अवसेती॥विनुदेखेंमोहिकलनपरतहैनाकोंवेरगावत
हैंनेती॥४॥रा॰सारंग॥एसीवातकहौजिनिऊधौ॥न्योत्रिदोस
उपजेंजकलामातिनिकसतवचननसूधौ॥१॥आपुनपोंउ
पचारकरोंप्रतितबकोंरनिसुखरेहु॥मेरेकहेंबजासत
राखोंसिरकेवारेगेहु॥२॥जोतुमपनपरागछांडिकेंकरहु
ग्रामवसिवासतौहमसूरइहांकरिदेखेंनिमपछांडहि
पास॥३॥रा॰सोरठि॥ऊधौनूदेखेहोव्रजजात॥जायकहियो
स्यांमसोंयाविरहकोंउतपात॥१॥नेंनकछूनसूझईकछुश्र
वणसुननतनचात॥स्यामविनआसवबुंदतुहेंदूसहधुनि
भईगात॥२॥आइवेतोंआइजोबहुरेंशरीरसमान॥सूरकेप
भुवहुरिमिलिहोंपाछेंहूंपछितान॥३॥रा॰सोरठि॥ऊधौंप
हहरिकहांकरयौ॥राजकाजचितदियोसांवरेगोकुलक्योंपो
विसरयौ॥१॥जोलोघोषरहेतोलोहमसंतनसेवाकीनी॥वा
रककवहुंउलखलपरसेंसोईमानिजियलीनी॥२॥जोहम
सोंकोटिकरोंव्रजनायकवहुतेंराजकुमारि॥तोएतंदक
हांमिलिहेंअरुजसुमतिमहतारि॥३॥कहांगोधनकहांगोप
वृंदसवकहांगोरसकोंखेवों॥सूरदासअवसोईकरोजि
हिहोइकानहकोंआवों॥४॥रा॰सारंग॥ऊधोअंोरेंकंपाकहें
तजिनसतानसुनेंतावतुनवरूगाहिमोंनरहों॥१॥सविहु

मप्रीतिरीतिनैंननिर्जलसीचिधांनधरलागी ॥ ताकेवीचऋ
तिसुबनमनपरबतस्यांमसूलअनुरागी ॥ २ ग्रीषमअलिञ्ञा
येप्रगटहीब्रजकठिनजोगरविहेरे वनसुरझानसूखोरा
खेंमेहूनेहबिनुतेरे ॥ ३ ॥ रागसारंग ॥ ऊधोंमांनकहेंहमआगें
घरमेंकहांवचेंकहितांकेप्रगटआगिकेलागें ॥ १ जासिन
तेंगोपालसिधारेस्वासअनिलतनजार्यौ ॥ रिषीहरेंमुख
चंदसुगंधुभयोंकाढिनाहिरोंउराह्यो ॥ २ एतेपरलोहिसूलता
नाहिजोगसिखावनआए ॥ पिपिलेजाहुसूरकेप्रभुपेंजि
हिंहूंयहांपठाए ॥ ३ ॥ रागसारंग ऊधोंसबस्वारथकेलोग ॥ आ
पुनकेलिकरतकुविजासंगहमहिसिखावतजोग ॥ १ भ्रमभ
नजातसांवरीमूरतिजितितितवहिवहरूप ॥ अवरसरासपु
लिनजमुनाकेकरतलाजभएभूप ॥ २ ॥ अनुदिननैंननिमे
षनलागतभयोविरहअतिरोग ॥ मिलहूकाहकुमासअ
बनीमिटेसूरसबसोग ॥ ३ ॥ रागसारंग ॥ ऊधोंदीनीप्रीतिदि
नाई ॥ बातनिसुहृदकरमकपटीकेचलेचोरकीहाई ॥ १ ॥ विर
हबांचबघंबारूसलिलमानोंअधरमाधुरीप्याई ॥ सोहिना
यखगीअंतगतिओषधिलेनवसाई ॥ २ ॥ गरलदांनदी
बोपेंनीकोंयाकहनहीमपाई ॥ केंमरेंकेंकाजसरेंतिहिदुख
देष्यौंनाहिनाई ॥ ३ ॥ वरसिपैंसोसूरकहावेंमित्रद्रोहनभला
ई ॥ सूरदासअैसेंमर्जसिजगमेंतिनकोंगतिनाहिकाई ॥ ४ ॥ रा
गसारंग ॥ ऊधोंजोहरिआवेंतोंप्रांणरहें ॥ आवतजातउठत
फिरिवैंठतजीवनअवधिगहें ॥ १ ॥ नवहेंदांमऊखलसोंबां
धेवदननबाहररहें ॥ सुमिजुरहीनवनीतचोरछविकोंभू
लतग्यांनगहें ॥ २ ॥ तिनसोंएसीक्योंकहिआवेंजेकुलपति
त्राससहें ॥ सूरस्यांमगुणरसनिधितजिकेंकोंपधरनीखव
हें ॥ ३ ॥ रागसारंग ॥ ऊधोंहमहेंतुमरीदासी ॥ काहेकोंकटुवच
नबोलतहोंकरतआपुनीहांसी ॥ १ ॥ हमरोंगुणगांठिकि
निबांधोंहमकहाविचयोंविचार ॥ जैसीतुमकीनीसोसबहूं
जानतुहेंसंसारू ॥ २ ॥ जोकछुभलीबुरीतुमकहिहोंसोसब
हमसहिलेंहें ॥ आपुनकियोंआपभुगतागेदोषनकाहूं
देहें ॥ ३ ॥ तुमतोंवडेवडेकेपठयेअरुसबकेसिरराय ॥ यहदु
षभयोंसूरकेप्रभुसुनिकहतलगावनघाय ॥ ४ ॥ रागसारंग

ऊधौं तुम हीं हो सब जांन ॥ हमकों सोई सिखावन दीजे जें नंद सु
वन की आंन ॥ १ ॥ आमिषु भोजन हि तुहें ताकें सो कैसो सांग प्र
वांन ॥ ता सुख सें मो पात न कैसो भावत जा सुख खाए पांन ॥ २ ॥
किं गिपि सुर कें सें सुख मांनत सुनि मुरली की गांन ॥ ता ऊपर
कैसो निर्गुण आवत जा उर स्यांम सुजांन ॥ ३ ॥ हम विनु रूपा मवि
योगि निरहि हैं जब लगि इहि घट प्रांन ॥ सुखतारि नहीं यसू
र सु प्रभु व्रजवासिन के भांन ॥ ४ ॥ ८ ॥ सारंग ॥ ऊधो इहैं विचार
गहौं ॥ कें तनु गयें भलो मानों वे हरि व्रज आयर हों ॥ १ ॥ कांन्ह
देहु विरह दैलागी ईई जी व जरों ॥ वूझें स्यांम घन कमल
प्रेम सुख मुरली वूं दपरो ॥ २ ॥ वरणा सरोवर मीन मनु रहें ए
कर सरीति ॥ तम निर्गुण वा हम हडारों सूर कोंन यह नीति
॥ ३ ॥ ए ॥ सारंग ॥ ऊधो कत वे बातें वाली ॥ अति [illegible] मधुरी हरि
मुख की हे उर अंतर साली ॥ १ ॥ स्यांम सघन तन सीची वेली
हुलक मल धरि पाली ॥ अव वे वेली सूखन लागी छांडि द
ई हरि माली ॥ २ ॥ तव तें कृपा करी व्रज ऊपर संग लता व्रज
वाली ॥ सूर स्यांम विनु मधु [illegible] गाई कों विरह विथा की घाली
॥ ३ ॥ ९ ॥ नट ॥ ऊधो जोग [illegible] ति सुन तमेरे अंग आगि वई ॥ सि
लगि सिलगि हम रही तन में फूंक आनि दई ॥ १ ॥ जो गहम
कों भोग कुविजा कों कोनें सी खासि सई ॥ सिंघ निजु काच
न लागे [illegible] वान नई ॥ २ ॥ मिटें नाहि न कर्म रेखा जो विधि
ठाठ ठई ॥ सूर प्रभु की कृपा जा पर सकल सिद्धि मई ॥ ३ ॥ १० ॥
केदारो ॥ ऊधो जो हरि हित हमारे ॥ जो तुम कहियो जाय कृपा
कीजे दरस दवें हमारे ॥ १ ॥ उर तर वस्यो जरत विरहिनी तु
मरे जो हम जारे ॥ नहि सिरा तनहि जरत छार के सुलगि
सुलगि भये कारे ॥ २ ॥ जदपि उमगि प्रेम जल भिजवत वर
खि वरखि घन तारे ॥ जो सीचें इहि भांति जतन करि तोंइ
तने प्रति पारे ॥ ३ ॥ कीर कपोत को किला खंजन वधिक वि
योग विडरे ॥ इन दुखनि कों जि गहि सूर प्रभु व्रज के लोग
विचारे ॥ ४ ॥ ११ ॥ धनाश्री ॥ ऊधो कहत सरे सों आनि ॥ कहा
करों वानें दर्न दन सो हो तनहि न चित हांनि ॥ १ ॥ जोग जु
गति किहि काम हमारे जदपि महा सुख खांनि ॥ सनी भने
हु स्यांम सुन्दर सों हिलि मिलि कें मन मांनि ॥ २ ॥ सोह तलो

हूपरसपारसकेज्यों सुवरनवरवांनि ॥ पुनिवहुवारुचुंब
कसोंनलटपटाघलपटांनि ॥ ३ ॥ परहितनिर्गुणनीरसनि
तनित निगमनपर तिनजांनि ॥ सूरदासकोनजाकाज
किरितिनसोंकीजेंपहिचांनि ॥ ४ ॥ राग विलावल ॥ ऊधोंतु
मकहियोंहरिसोंजायहमारेजियकेदरद ॥ दिननहिचें
नरेंननिनहिंसोवतपावककेभईजुन्हैयासरद ॥ १ ॥ जवतेलें
गयेअक्रूरमधुपुरीभईविरहतनवाइछरद ॥ कीनीअव
लजगीअतिऊधोंसोचिभईजैसीपीरीहरद ॥ २ ॥ सखाअ
वीननिरंतरहोंतुमताजेंकहियतखोलिपरद ॥ काथसूर
दासनविनुहरिके सूरमूरनहियोसुरद ॥ ३ ॥ राग गौरी ॥ ऊ
धोंकोंआएव्रजधामते ॥ सहायकसखाराजपरवीमिलिरि
नरघाककछुककमावते ॥ १ ॥ कहोंधर्मकृपाकरिकोंननिसुतो
तुतवसिकें गावते ॥ गुरुनिवरनेदेषिआषिनिसुश्रोतासकल
अघावते ॥ २ ॥ हतकोउकछुनजानतहरिविनुतोंकतजुग
तिवनावते ॥ जोकछुकहनइहोंसोतुमपहिअनभौनेसु
खपावते ॥ ३ ॥ मनमोहनविनदेवेंकैंसेंउरआरूचाहत ॥ सूर
दासप्रभुरसनाविनयहवारवारपछितावत ॥ ४ ॥ राग देव
ख ऊधोमननाहीदसवीस ॥ एकेंहुतोसुगयोहरिकेंसंग
कोंअराधेंतुवईस ॥ १ ॥ भईसिथिलसवैमाधोविनुज्योंन
देहविनुसीस ॥ स्वासअटकिरहेआसालगिजीवहुकोटि
वरीस ॥ २ ॥ तुमतोसखास्यांमसुंदरकेसकलजोगकेअधी
स ॥ सूरदासरसिककीवतियांपुरवोंमनजगदीस ॥ ३ ॥ रा
ग केदारो ॥ ऊधोंघांलगुहेंनगनीजतु ॥ नातेंप्रियसोंप्रेमपुरात
नवहुदिनयोंकरिकोजतु ॥ १ ॥ कहंप्रविराहुराहुरविमनिरू
चिविधिसंजोगुवनायो ॥ उहिउपकारआजुउहिऔसरहरिपि
रसनसुपायो ॥ २ ॥ कहांवतुमजदुनाथसिंधुतटहमगो
कुलव्रजवासी ॥ वहवियोगवहमिलनुकहांअवकाल
चालिऔरासी ॥ ३ ॥ सूरदासमुनि चरणचरचिविनुगुरु
लोगनिरुचिमांनी ॥ तबअबअवइहपरमकठिनअतिनि
मिषपीरनजांनी ॥ ४ ॥ राग मलार ॥ ऊधोंतुमसवसाथीभोरे
अवकेकहेंविलगमांनहुगेकोटिकुटिललेंजोरे ॥ १ ॥ वे
अक्रूरक्रूरकृततिनकेरीतेभरेभरेगहिढोरे ॥ वेघनस्यांम

स्यांमअंतरघनस्यांमकांमहीचोरे॥२॥ एमधुकरदुतिनिर्गुण
गुणकेदेखिफटाकेपछोरे॥ सूरदासकारेनुकीसंगतिकहांपू
जिहेंहिगोरे॥३॥ रा॰सारंग॥ ऊधौसमुझावेंसोबेरनि॥ रेमधुपा
निसादिनमरियतुहेंकांन्हकुंअरऔसेरनि॥१॥ चितचुभिरही
मोहनीमूरतिचपलदृगनिकीहेरनि॥ तिनमनुलियोंचुराय
हमारोवामुरलीकीटेरनि॥२॥ विसरतनाहिंसुभगतनसोभा
पीतांवरकीफेरनि॥ कहतनवनेंकांधलकुटीधरिछबिवि
नगाइनिघेरनि॥३॥ तुमप्रवीनहमहेंविरहवातावेगऔं
खिमूंदिभटभेरनि॥ जिहिंउरवसतस्यामघनसुंदरसुक्तिप
रोंसोईफिरनि॥४॥ तुमहमकोंकहांलेंआयेऊधौंजोगदुखनि
केढेरनु॥ सूररसिकविनुकोजीवतहेंनिर्गुणकठिनकरे
रनु॥५॥ रा॰सारंग॥ ऊधोंस्यांमहिंतुमलेंआवहु॥ व्रजजन
चातकप्यासमरतहेंस्वांतिवूंदवरषावहु॥१॥ घोषसरोज
भयेहेंसंपुटदिनमणिहूँविगसावहु॥ ज्योंतेजाहुविलंवक
रोजिनिहमरीदसासुनावहु॥२॥ ऊधौंहरिइहांनआवेंतु
मकोंतहांवुलावहु॥ सूरदासप्रभुवेगिमिलाएसंतनिमें
जसुपावहु॥३॥ रा॰सारंग॥ ऊधोजूजोगतवहींजान्यों॥ जादिन
तेंसुफलकसुतकेसंगरथव्रजनाथपलान्यों॥१॥ तादिनतें
सवछोहमोहछाँडिसुतपतिहेतुभुलान्यों॥ तजिमायासें
सारसारकोंव्रजवनितनव्रततान्यों॥२॥ नेंनमूंदिसुखरहे
मोंनधरितनतपितेजसुखान्यों॥ नंदनंदनमुखमुरलीधा
रीइहेंहरूपउरआंन्यों॥३॥ सोईसंजोगजिहिंभूलेंमोतुमहूंजो
गवखांन्यों॥ अह्लापच्चिपचिमुएप्राणतजिनऊननिहिंपाहि
चांन्यों॥४॥ कहेंसुजोगकहांलेंकीजेंनिर्गुणपरतनजांन्यों
सूरवहेंनिजरूपस्यांमकोंहेंउरमाहसमान्यों॥५॥ रा॰सारं
ग॥ ऊधौंवेसुखअवेंकहां॥ छिनुछिनुनेंननिनिरखतिवद
मुखपिरिमनज्ञाननहां॥१॥ मुखमुरलीसिरमोरपखौआ
उरघुघुचिनकेहार॥ आगेंधेंनुरेनुतनमंडिततिरछिचितो
नीचार॥२॥ रातिदिवससवकेअंगअंगप्रतिपुनेखेलनवोलनवोत
सूरदासइहप्रभुनाचितवनकहिनसकनइहवात॥३॥ रा॰
सारंग॥ काहेंऊधौंहरिगाएतजिमथुराकोंनवडाईपाई॥ सु
वनचतुर्दसकोंहें॥ वेभोंसनपकहिपराई॥१॥ जोयहकाजक

रैंकोमेवकतोंश्रूलिपठैंवनाई ॥ सेवनसेवतजनमघराव
तरैंजनसरनपठाई ॥ ४ ॥ तुमतोंपरमसाधुश्रंतरहितमिलि
कछुकहोंवनाई ॥ सूरस्यांममनकहूंविचारोंकौनठगौरी
लाई ॥ ३ ॥ रागसारंग ॥ ऊधोंहरिहमनिपटविसारी ॥ जवहीगव
नकियोंमधुवनकोंवहुतकरीमनुहारी ॥ १ ॥ श्रवनोंवेपति
यातिनाहिंहरिपठवतमहनारी ॥ इनहूंतोंश्रलिइतश्राव
नकीजोगसंदेसनिरारी ॥ २ ॥ श्रवलगिप्राणरहेश्रासानकिए
जुचलेपरिचारी ॥ सूरदासस्वामीसोंकहियेंदेतिलश्रंजुलिद
ई ॥ ३ ॥ रागविलावल ॥ ऊधोंकहांमतदीनोंहमहिगोपाल ॥ श्रा
वहुरीसषिसवनिमिलिसोचैंजोपावैंनंदलाल ॥ १ ॥ घरवा
हिरतेंवोलिलेहुसवजावदेकप्रेमवाल ॥ कमलासनवै
ठहुरीमाईमूंदहुनैनविसाल ॥ २ ॥ षटपदकहीसोऊकरिदे
खीहाथकछूनहिश्राई ॥ सुंदरस्यांमकमलदललोचनदेकु
नेंदेतरिखाई ॥ ३ ॥ फिरिभईमगनविरहसागरमेंकाहूसुधिन
रही ॥ पूरनप्रेमदेखिगोपिनकोंमधुकरमौंनगही ॥ ४ ॥ कछु
धुनिसुनिश्रवणनिचातिककीप्राणपलटितवश्राये ॥ सू
रसुश्रवकोंटेरिपपीहेंविरहीमरतजिवाये ॥ ५ ॥ रागविलाव
ल ॥ ऊधोजूभलीकरीश्रवश्राए ॥ विधिकुलालकीनेकाचे
घटतेतुमश्रांनिपकाए ॥ रंगदियोहोकांन्हसांवरेश्रंगश्रं
गचित्रवनाए ॥ गलतनपाएनेंननीरतेंश्रवधिश्रटकैंघाए ॥
१ ॥ व्रजकरिश्रवांगुकरिईधनुतुरतनश्रागिनिसुलगाए
फोकउसासविरहतनप्रजुलितदरसश्रासमियराए ॥ २ ॥
भएसंपूरनभरेप्रेमजलछुवननकाहूपाए ॥ राजकाजतेंगा
येसूरसुनिनंदनंदनकरलाए ॥ ३ ॥ रागमलार ॥ ऊधोंकुलिस
भईयहछाती ॥ मेरोंमनरलागयोनंदलालहिफिरतरहतदिन
राती ॥ १ ॥ तजिश्रवलोगपिताश्ररुजननीकंठलायगएकांती
रासिनिठुरभएहरिहमकोंकवहूंनपठईपांती ॥ २ ॥ पियपिय
कहतरहतजियमेरोंह्वैयचातिककीजाती ॥ सूरदासप्रभु
प्राणहुराखहुह्वैकरिवूंदस्वाती ॥ ३ ॥ रागकान्हरो ॥ ऊधोंस
रसमेंहूंश्रायों ॥ वहुतेघोसरटनचातककीतेऊस्वाति
जलपायो ॥ १ ॥ कवहूंकध्यांनधरतउरश्रंतरमुखमुरलीलें
गावत ॥ मोरसरासपुलिनजमुनाकेससिंदेखेसुधिश्रावत २

सू॰सा॰ जासों लगन प्रीति अंतर ओगुन गुण कछु भावत ॥ हम सों क
२५. परलोक दूरि नातें सूरस नेहू जनावत ॥ ३ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो कों
न कुरि निछाड्यो है गोकुल ॥ बहुरि न आयो फिरि या ब्रज में वि
छुर्यो तब हि मिल्यो अब गोकुल ॥ १ ॥ गर्ग बचन समुझे अब मधु
वन कथा प्रसंग सुन्यो है गोकुल ॥ सूर भए अब त्रिभुवन के
पति नाते सों नाति लहें अब को कुल ॥ ४ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो राखि
ये पय हू बात ॥ कहत तहें अन हू दबानी सुनत हम चपि जात ॥ १ ॥
जोग फल कूष्मांड तैसे अजा मुख न समात ॥ बार बार न भाखि
ये कोई अमृत तजि विष खात ॥ २ ॥ नैंन प्यासे रूप के जल दि
ये नाहिं न अघात ॥ सूर प्रभु मन हर्यौ तो लगि जो लगि तन सु
सरात ॥ ५ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो तुम लोगनि सों आदेस ॥ इक टक
ध्यान धरें निसि जागी इह तुम्हरें उपदेस ॥ १ ॥ [illegible] चित वित
फुरें न डोलें अंग भसम रज लेस ॥ सूरदास प्रभु गोरख विसरी
में जोगिनि के भेस ॥ ६ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो बात तिहारी जांनी ॥ अ
ए हो ब्रज कों बिन काजहि रहत [illegible] कटु बांनी ॥ १ ॥ जो पै स्याम
रहत घट नो कत विरह विथा [illegible] परानी ॥ ऊधो बांन निकोम
न मानत चलि मन अल[illegible] यानी ॥ २ ॥ जोग जुगत की नीति
अगाम हम ब्रजबालनि कहें जांनें ॥ सिख बहु जाय जहां न
र नागर रहत प्रेम लपटाने ॥ ३ ॥ दासी घेरि रहे हरि तुम ढांग
ढिग ढिग कह [illegible] बनाई ॥ निपट निलज अजहूं न चलत उठि कहं
त सूरस[illegible]ई ॥ ७ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो राखति हैं पति तेरी ॥ इहां
ते जाहु जाहु आगें ते देखत आंखि बरत हैं मेरी ॥ १ ॥ तुम जु कहत
गोपाल सयाने हैं देख हु जाय न कुबिजा घेरी ॥ ते सब तैसे
होउ बने हैं वे अहीर वे कंस की चेरी ॥ २ ॥ तुम सारिके बसीठ
पठाये कहौं कहा उनकी मति फेरी ॥ सूरदास प्रभु सू रंग मि
लन कों ग्वालनि के संग जो बन हेरी ॥ ८ ॥ राग नट ॥ ऊधो वेद
वचन प्रमान ॥ कमल मुख पर नैंन खंजन देखि हैं कोउ आन
१ ॥ श्री निकेत समेत सब गुण सकल रूप निधान ॥ अधर सु
धा पिवाय बिछुरे पठै दीनो ग्यान ॥ २ ॥ दूरि नहीं दयाल सब घ
ट कहत एक समान ॥ निकसि क्यौं न गोपाल बोधत दुखनि
के दुख जान ॥ ३ ॥ [illegible] परखन देखिये बिन स्वाद सब रस भुलान
दूध दंड अधार हरि गुण गहत पानि विषान ॥ ४ ॥ बीन राग सु

ज्ञानजोगीसकलसिद्धिनिवास॥ निगमवाणीमेरिकेंक्योंक
हेंसूरजदास॥५॥ राग सारंग॥ ऊधोअबचितभएकठोर॥ पूरब
प्रीतिबिसारीगिरधरनैनतनराचेग्रोर॥१॥ जाहिननेंमधुपा
रीसिधारेधीरजदयोनमोर॥ ननमननमकीदासीतुमरीना
गरनंदकिशोर॥२॥ चितवनिबांनलगाएमोहननिकसेउरब
हिओर॥ सूरदासप्रभुकबहूमिलौहिगेकहांरहेरणछोर॥३॥
राग सारंग॥ ऊधोंअबनहिस्यामहमारे॥ मधुबनबसतबदलि
सेलीनेमाधोंमधुपनिहारे॥१॥ इतनिहिदूरिभएकछुग्रोरें
जोइजोइमगनिहारे॥ कपटीकुटिलकाककोइलज्यों अंतभ
एउडिन्यारे॥२॥ रसलेभवरजायस्वारथहितप्रीतमचित
नबिसारे॥ सूरदासतिनसोंकहाकहियेंजेतनहूंमनकारे
॥३॥ राग सारंग॥ ऊधोंपालभोंभलेंग्राए॥ तुमदेखेजनुमाधोंदे
खिदुखबैनापनमाए॥१॥ नंदनंदनसोदानोतोदेखेवेदपुराणनि
गाए॥ हमग्रहीरितुमग्रहीरनाम नजिनिर्गुणनामलखाए
॥२॥ तबइहघोषखेलबहुखेलेऊखलभुजाबधाए॥ सूरदास
प्रभुइहेंभूलजियबहुरिनचरणदिखाए॥३॥ राग सारंग॥ ऊधों
बलैयालेंहोंबहुरिसिधारो॥ मनमोहनजगतीसबिरहकीज
रीयनकोंकतजारो॥१॥ हमारेप्राणघातदेंनिबरेतुमकसिखा
नोन्हांस॥ इहजीवनमेंमरणभलोजायचकरवतलीजेंकासी
॥२॥ केहरिहमकोंग्रानिमिलेंहोकेलेंजेहोंसांपें॥ सूरस्यामबि
नप्राणतननाहिंबहहदुखतुमसेंरमांपें॥३॥ राग सारंग॥ ऊधोंग्रो
रकछूकाहिवेकों॥ सोऊकहिडारेंपालागोंहमसबसुनिसहिवे
कों॥१॥ पहइउपदेसग्राजुलोंमेंसखिस्रवणसुन्योनदेख्यों॥
नीरसकटुकतपतजीवनगततावहतममउरलेख्यों॥२॥ बस
तस्यामनिकसतनएकपललहियेमनोहरएन॥ पाकहदू
हंठौरनाहीलेंराखोजहांसुबेंन॥३॥ हमसबसखीगोपालउ
पासिकतिनसोंबातेंछांडि॥ सूरमधुपलेंराखिमधुपुरीकुबि
जाकेघरगांडि॥४॥ राग ग्रासावरी॥ ऊधोंकहियोंसबमोहतो
जाहिज्ञानसिखवनतुमग्राएसुकहांब्रजमेंकोइती॥१॥ अं
तहुसीखसुनहुगेहमरीकहियतबातविचारि॥ कुरतनब
चनकछूकाहिवेकोंइहेंप्रीतिसोंहारि॥२॥ देखियतनहींकहण
कीमूरतिसुनियतहेंपरपीरक॥ सोइकरोज्योमिटेंहृदेको

सू॰सा॰ राहू परे उर सी रहु ॥३॥ राज पंथ तें टारि बतावत उरज कुचील कुपे
२५१ डौं ॥ सूरदास समाय कहा लौं अजा बरन कूं हेडौं ॥४॥ रा॰ सा॰ ग॰
ऊधौ तुम ला एक हिकान ॥ हितवौ कहत अहित की लागत
बकत न आवे लाज ॥१॥ आपन कों उपचार करौ कछु तब औ
रनि सिख देहु ॥ मेरे कहें जाहु सब रही गहौ सीयरों गेहु ॥ अहो
भेष नाना विधि के अरु मधुरि प्रही सों बेहु ॥ हम कान तर डराति
अपने सिर ई कलंक कहें कें दई ॥३॥ सांची बात छांडि अब कूटी क
हौ कौन विधि सुनिहै ॥ सूरदास मुकता फल भोगी हंस बनि
कौ चुनिहै ॥४॥ ११ ॥ सा॰ ग॰ ॥ ऊधौ उलटी रीति तिहारी सुने मुए
सी कोहे ॥ अल पवेस अबला अहीरि सठ तिन हियो गतो सो
है ॥१॥ कूची खुभी आंधरी काजर नकटी पहिरें वेसरि ॥ मुड़ली
पटि आंपारि मवारे कोढिनि लावें केसरि ॥२॥ बहिरी पति सों
मतो करें तों उतर जैसो पावे ॥ सोगति होइ सबै ताकी जो अबा
लिनि जोग सिखावें ॥३॥ सिख ई कहा स्याम की बतियां तु
म कों नाहिन दोस ॥ राज काज तुम तें न सरेंगो काया आपनि
पोष ॥४॥ जाने भूलि सबें मा... इहां आनि कहां कहत ते भ
ली भई सुधि रहीन सूर... धार में बहते ॥५॥ १२ ॥ सा॰ ग॰
ऊधौ तुम हू सुनो एक बात ॥ जो तुम कहत न सिखावन सो हमें
नाहिन नेक सुहात ॥१॥ ससि रस नविनु मलिन कमोदनि
ज्यों रवि विनु जलजात ॥ त्यौं हम कमल नयन विनु देखें तल
फि तलफि मुरझात ॥२॥ घसि चंदन घनसार सजे तन ते कैसें
भसम भरात ॥ रहे श्रवण मुरली धर सों रत सिंगी सुनत डरा
त ॥३॥ अबलनि आनि जोग उपदेसत नाहिन नेक लजात
जिनि पायौ हरि परसि सुधा रस ते कैसें कटु खात ॥४॥ अ
वधि आस मानि गनि जीवति है अब हिन प्रान खटात ॥ सू
र स्याम हम नि परबि सारी ज्यों तरु जीरन पात ॥५॥ १३ ॥ मा
रू ॥ ऊधौ कहि मधुबन की बात ॥ राजा है ब्रजनाथ तिहारे
कहां बुलावत जात ॥१॥ निसि लोकरत ... हरि नकरु ज्यों हु
तों सरूस सिसीति ॥ पुरवा पवन कहौ नहि मानत गये स
हज वपुजी ति ॥२॥ कंस काज कुबिजा के मारयो भई निरंत
र प्रीति ॥ सूर विरह ब्रज भलौ न लागत जहां ब्याह तहां गीत
॥३॥ १४ ॥ मारू ॥ ऊधौ को लिचाल औरा सी ॥ मन हरि मरन गो ॥

पालहु मारों बोल न बोल उदासी ॥ ४ ॥ ऐसे पर हम जोग करहि
कैसें अविगत हैं अविनासी ॥ गुपत गोपाल करी बनलीला
हम लूटी सुखरासी ॥ ५ ॥ लोचन उमगि चलत हरि के हितवि
नु देखें बरखा सी ॥ रसना सूर स्याम के रस बिनु चातक हूं तें
प्यासी ॥ ३ ॥ राग कान्हरो ॥ ऊधो अखियां अति अनुरागी ॥ इकट
क मग जोवति अरु रोवति भूलेहु पलक न लागी ॥ १ ॥ बिनु
पावस पावस रितु आई देखत हौ विदमान ॥ अब धौं कहां कि
यो चाहत हौ छांडहु नीरस ज्ञान ॥ २ ॥ सुनि प्रिय सखा स्याम सु
दर के जानत सकल सुभाव ॥ जैसें मिलें सूर प्रभु हम कों सो क
छु करहु उपाव ॥ ३ ॥ राग कान्हरो ॥ ऊधो नैंन हू प्रान रहैं ॥ आवत
जात उलटि फिरि बैठत जीवन तिअवधि गहैं ॥ १ ॥ जो दिन दाम
उलूखल बांधे बदन नवाइ चहे ॥ खुभि जु रहे नवनीत चोरि छ
बि भूलि नैन ज्ञान कहे ॥ २ ॥ तिन सौं कैसें कहि बनि आवै जिन
कुल त्रास सहे ॥ सूर स्याम सुंदर रस पागे पूरि रहे नीर बहे
॥ ३ ॥ राग कान्हरो ॥ ऊधो कहत कही न जाइ ॥ मदन गोपाल लाल
के बिछुरें प्रान रहे मुरझाइ ॥ १ ॥ नव सपरस चादि गवनाकि
यो अति फिरि चितयो गोपाल ॥ नव ही परम कृतज्ञ सबें उ
ठि संग लागी ब्रजलाल ॥ २ ॥ अब हू और स्रमि विरह की
वक निवाइ वो रानी ॥ तिन सों कहा हरि तिफिर ऊतर तुम हो
पूरन ज्ञानी ॥ ३ ॥ अब सी मान घटे का कीजें ज्यों उपजें परती
ति ॥ सूरदास कहा खेव ए निन आवें कठिन विरह की रीति
॥ ४ ॥ राग बिहागरो ॥ ऊधो यह मन अधिक कठोर ॥ निकसि न
गयो कुंभ काचे ज्यों बिछुरत नंदकिसोर ॥ १ ॥ हम कछु प्री
ति रीति नहिं जांनी तौं ब्रजनाथ तजी ॥ हमरे प्रेम नेम की ऊधो
सब रसरी तिलजी ॥ २ ॥ हमतें भली जलचरी बपुरी अपने
नेंम निबाहे ॥ जल तें बिछुरत ही तन त्यागों जलहीं जल कों
चाहे ॥ ३ ॥ अब रजु एक भयो सुनों ऊधो जल विनु मीन जियो
सूरदास प्रभु आनि न कहि गये बनी बिस्वास गह्यो ॥ ४ ॥ रा
ग बिहागरो ॥ ऊधो हम न जोग पर साधें ॥ सुंदर स्याम सलोनो
गिरधर नंदनंदन आराधें ॥ १ ॥ नानन रचि रचि भूषन पहिरें
भांति भांति के साज ॥ तानन कों भसम बनावन आवत ना
हिन लाज ॥ २ ॥ घर भीतर नित वसत सों बरों मो रमु कटासि

सू.सा. रधारें ॥ सूरदास चितवनि सों लागों जोगहिं क्यों न सम्भारें ३ रा
२५२ ग सारंग ॥ मधुकर जो गानि है तसंदेसनि ॥ नाहिन या ब्रज में
कोउ सुनिहैं कोटि जतननि उपदेसनि ॥ १ ॥ रवि के उदय मिलन
चकई को संध्या समैं अंदेसनि ॥ क्यों वन वसैं वापुरो चातक
वधिक काल काज वधे सनि ॥ २ ॥ नगर एक नायक विन सूनों ना
हिन काज सवें सनि ॥ सूर सुभाय मिटत क्यों कारे निहि कुल
रीति उसे सनि ॥ ३ ॥ रा सारंग ॥ मधुकर जानत हैं सब कोउ ॥ जै
सें तुम अरु मीत तुम्हारे गुणनि निपुन हो दोउ ॥ १ ॥ या के चोर
हृदे के कपटी तुम कारे सु रूव ओउ ॥ सरवसु हरत करत अप
नो सुख के सें हूं कि निहोउ ॥ २ ॥ परम कृपन पोरे धन जीवन
अरत नाहिन सोउ ॥ सूर सनेह करें जो तुम सों सु करें आपवि
गोऊ ॥ ३ ॥ रा सारंग ॥ मधुकर कहां कांनहि रे रिस ये हम जीव
त हीं इन नेंन ॥ देखन कछु कमल वदन कों रहु धरत सुनि
वेंन ॥ १ ॥ मधुप कछु विना भये रमापति हो वसे मुख देंनु ॥
सिंधु सुधारा धा सुख पी वत कहीं न पायो चेंन ॥ २ ॥ जिहि
अंस कोमल कर कामिनि के धरे मन करत असहैंन ॥ ति
हि अंस गज वर रद अति सिपारी धमे धरनि ते लेंन ॥ ३ ॥ जिहि
भुज दंड अखंड गगन नासि आलिंगित रमेंन ॥ तिहि भु
ज दंड प्रचंड महा वल सम रन युद्ध दलजेंन ॥ ४ ॥ ये कहियों सं
देस स्यांम कों ते ब्रज मिटियें गेंन ॥ मति न्यारे हो इ लोचन
ते वें सूर सुजानि के एन ॥ ५ ॥ रा सारंग ॥ मधुकर कहियत
वहुत सयाने ॥ तुमरी मति का पे वनि आवें हमारे का न अ
याने ॥ १ ॥ तैसोई तू तैसों नेरो ठाकुर एक हि वरन हि वानें
पहिलें हि प्रीति पिवाय सुधारस पाछें जोग वखांनें ॥ २ ॥
एक समें पंकज रस वासे दिनकर अस्तन मानें ॥ सोई सूर
गति भई यहां हूं विनु हा पयमी डि पहिचानें ॥ ३ ॥ रा सारंग
मधुकर कहत संदेसो मूल हु ॥ हरि पर छांडि चले नाते तुम
प्रीति प्रेम मन्त्र ममूल हु ॥ १ ॥ नहि पाउनि सु फूलनि श्रीमुख की
ने तुम उवरत फूल हु ॥ विलजु वदन ह्री तें या उचरत जे संखा
ननि मूल हु ॥ २ ॥ उत व उठौर नगर मधुरा कों इत तरनि तट
कूल हु ॥ उत महाराज चतुर्भुज सुमिरहु इत ताके सो रनंद दूल
हु ॥ ३ ॥ जे तुम कहीं वेंन की वातियां व्रज जन नाहि समतूल हु

सूरस्यांम रोपी संग विलसे कंठ धरें भुजमूल ॥ ४ ॥ राग सोर
ठि ॥ मधुकर इहां नहीं मन मेरो ॥ गयो जु संग नंदनंदन के बहुरि
न कीनों फेरो ॥ १ ॥ नयों नयन न मुसिकांनि मोल लरें कियों परयो
चेरो ॥ सोप्यो जाय भयो बस ताके विसर्यो वास बसेरो ॥ २ ॥ को
समुझाय कहें सूरज मो रसबस काहू केरो ॥ मंदे परयो सिधा
इ श्रन तले यह निर्गुण मत तेरो ॥ ३ ॥ राग सोरठि ॥ मधुकर रे रे
मरम तवारे ॥ कहां कीजे वा निर्गुण सों चिरजीवहु कान्ह मा
रे ॥ १ ॥ लोटत पीत पराग की चमेली चन श्रम संतारे ॥ बारंबार स
रक मरदरा की श्रप सरक हत उघारे ॥ २ ॥ तुं जानत तेरी सी वसी
जिहिं कें तुम अलि प्यारे ॥ धरी पहर सब कों विरमावत जे तक
आवत कारे ॥ ३ ॥ स्याम सरीर नीर रुह लोचन जसुमति ने दुला
रे ॥ तन मन सूर स्याम को अर्प्यो षाकों ले हिय धारे ॥ ४ ॥ राग सो
रठि ॥ मधुकर एवं ब्रह्म समुझि भई ॥ कमल नयन के अंग अंग
प्रति उपमा न्याय दई ॥ १ ॥ कुंतल कुटिल भ्रमर भर भांवरि माल
ति भुरें लई ॥ तजत न गहरु कियो कपटी जब जानी निरस गई
२ आनन इंदु विमुख सजि संपुट [illegible] ते तें न नई ॥ निरमोही
नव नेह सुकुसुरि निश्रंत हृदे मई ॥ ३ ॥ तन घन सजल से
इ निसि बासर रटि रसना छिजई ॥ सूर विवेक हीन चातक मु
ख बूंदों तो न अई ॥ ४ ॥ राग धनाश्री ॥ मधुकर के पठए तें तुम्हरी
व्यापक पून पुरी ॥ [illegible] नारनापे छावि मुखन न निरखत है बाति
या विसरी ॥ [illegible] कीनेह अरु आप पूरण ता एको नाउ वरी
तती यपंप प्रगट भयो रखियत नव भेरी कुवरी ॥ २ ॥ इहूं तो
परम साधु तुम हृदे वसो इन याह मन न धरी ॥ [illegible] कछू कह्यो सु
नि बल्यो सीस धरी जोग जुगति उचरी ॥ ३ ॥ सूरदास प्रभु ताक
हां कहिये प्रीति भली पसरी ॥ राज मानु सुख रहु कोटि पें घोष
न एक घरी ॥ ४ ॥ राग केदारो ॥ मधुकर मीत न नहीं संसार ॥ जहां जा
कों सुख लेस बढत है तहां ताको अनुसार ॥ १ ॥ तो लोलपति
रहत अंबुज पांहि मकरंद नित तुसार ॥ नें सुक प्रभा प्रगट
दिनकर की तनां छिन तजत व्योहार ॥ २ ॥ मदन मालति का श्रे
सी सुनि अलि कुसुम कर रत नेहि भार ॥ तांहि [illegible] नक रिगंध
लेइ फुनि मत्त नेर चत लब कसार ॥ ३ ॥ नाना स्वाद कर न नित भो
जन एक हि यों स प्रवार ॥ न तछिनु हृत्त चरण मण्पि सिष

सू॰सा॰ लिन पंथन पेंड पसारा॥४॥ विषई भजन त्रिया अंग जब ही नव
२४२ त्यागन उर हार॥ भोर भये निकसत अंन रवि करि गिरि सरिता
प्राकप॥५॥ कहियो कौंन है तहां गोकुल प्रगट कियो अवता
र॥ ताके हेत लई कर मुरली अंग रूप सत मार॥६॥ सूरस्याम
एसी न वूझिये जहां निज अटल विहार॥ विरह घटतु किहि कौं
तुम देखहु यह कछु करो विचार॥७॥ रा॰ सारंग॥ मधुकर देषि
स्यांम तन तेरो॥ हरि मुख की सुनि मीठी वाते डरपत है मन मे
रो॥१॥ कत तहां चर साधु वन तर सलं पर वरन होहैं काज॥ परसत
गात अश्रवण कुच कुमकुम इतनी करी कछु लाज॥२॥ बुधि वि
वेक बल वचन चातुरी ते सब चितै चुराए॥ सो उन कहां कहां
विसाहो लाज छांडि व्रज आए॥३॥ अबलौ कौंन हेतु गावत है
हम आगे इहि गीत॥ सूर इते सों धापि कहा है जो पै त्रिगुण अ
तीत॥४॥ रा॰ सारंग॥ मधुकर काके मीत भये॥ द्यौस चारि की प्री
ति सगाई सो लै अनत गए॥१॥ डहकत फिरत आपने स्वारथ
पाषंड और ठए॥ चाउ सरे चिन्ह मेटी करत जु प्रीति नए॥२
॥ सिरहउ चारि मेलि गये रावालि सन हरि हरि गुलए॥ सूरदास प्र
भु इन धरम ठगि विस के राज वए॥३॥ रा॰ सारंग॥ मधुकर
हौ हु इहां ते न्यारे॥ तुम देखत तन अधिक न पतु है अरु नैन
नि के तपे॥१॥ अपनो जोग सेंति धरि राखो इहां लेत को डारे॥
सो कौ जन अपने सुख कारिहैं मीठे ते फुनि कारे॥२॥ हमरे गि
रिधर के नाम गुण सब केकौं न्हइ उर वारे॥ सूरदास हम सबै
एक मत तुम सब खोटे कारे॥३॥ रा॰ नट॥ मधुप विरानै लोग
वटाऊ॥ दिन दस रह तन काज अपने कौं नजिग ए फिरे न काऊ
॥१॥ प्रथम सिद्धि पठई हरि हमकों आयो ज्ञान अगाऊ॥ हमकों
जोग भोग कुविजा कौं वाकौं इहै सुभाऊ॥२॥ कीजे कहां नैन दूनं
दकों जिनिकै है सति भाऊ॥ सूरदास प्रभु तन मन अर्पी प्रान
रहे वे जाऊं॥३॥ रा॰ सारंग॥ मधुकर कौंन [illegible] नै आए॥ जव
तें कुरंग पौलै मोहन तब तें भेद न पाए॥ जानें सखा साधु ह
रि जू के अवधि वधन कों आए॥ अब या आगि नंद नंदन के
पाय वामित कों पाए॥१॥ आसव धांन वाघु अवरोधन अलि
तन मन अति भाए॥ है विचित्र अति गुणनि सुलछन गुन जो
गमन गाए॥३॥ मुद्रा श्रृंगी भस्म वचा मृग व्रज जुवती तन नाए

अलसी कुसुम बरन मुख मुरली स्यामा मक्कि नि लाए ॥४॥ रा
ग सारंग ॥ मधुकर लायक हो सुनि मेरी ॥ पीन बसन तन स्याम
लाल करि राखति परदा तेरी ॥१॥ रहि हि ब्रज के उपर हे सन लायक तु
व रहैं करि डेरो ॥ इतमान इहू सखी महा सठ छांडत नाहि न के
री ॥२॥ एसी बात कहे हैं तं तासों हो सुकहि बे लायक ॥ रहे अबसोर
कुवर बिराजें छिनु छिनु प्रति सुख दायक ॥३॥ तो तुम पुहुप परा
ग छांडि कै करो ग्राम बस बास ॥ तो हम सूरदास हो करि रखें छिनु
एक छांह ए पास ॥४॥ राग सारंग ॥ मधुकर प्रीति कियें पछितांनी
मैं जानी ऐसी निबहैगी उन कछु औरे ठांनी ॥१॥ कारे तन कौं को
न पत्यावै बोलत मधुरी बांनी ॥ हम कौं लिखि लिखि जोग प
ठावत आपु करत रजधांनी ॥२॥ सूनी सेज स्याम बिनु मोकों त
लफ तिरें निबिहानी ॥ सूर स्याम प्रभु मिलि कौ बिछुरे तातें म
ति जु हिरानी ॥३॥ राग केदारो ॥ मधुकर अब रहु आसरह ॥ बपिध
जेमा अपार अगाम कौं निगम न पाइ हल ही ॥१॥ बुधि बिवेक बो
रिथ चढि अमुकरि तोसि बस चेतपरी ॥ तो बन अति सुकुमार
अधीर जु गति न जानि तरी ॥२॥ अबु निरास कछु चलें न
आवै लहरिन उठे समाइ ॥ आमिक भ्रम रभे खरे छिय न तहे म
न सात ही भजाइ ॥३॥ गुण अवगुण कहें नहि कोई तुम हूं निगु
ण सुनावहु ॥ मन मोहन बिनु कल न परत जिय वेगाई स्यांम
कौं ल्यावहु ॥४॥ साखनवि ये लाल मणि मानिक मुक्ता रतन
अमोल ॥ प्रेम सुफल च्यारि सदा फल निर्भै अमित अडोल
॥५॥ सुमिरन ध्यांन आस छापा करि मन मोहन प्रभु नागर ॥ सू
रदास रत रहि कौ अबला चछु जल सरिता सागर ॥६॥ राग सो
रठि ॥ मधुकर तुम तें अति बडभागी ॥ अपरस रहत सनेह तगा
दें नाहिन तुम अनुरागी ॥१॥ पुरइनि पत्र रहत जल भीतर मह
तन ही न बन नागी ॥ ज्यो जल मांस कतत लै की गागरि बूंद न ताकौं
लागी ॥२॥ प्रीति नदी में पाउ न बोरौ दृष्टि न रूप अनुरागी ॥
सूरदास अबला हम भोरी गुर चेंटी ज्यौं पागी ॥३॥ राग सोरठ
मधुकर सुनहु लै बन बात ॥ इह तरो के अंग गम वपै नें मडउउ
डि जात ॥१॥ जो कपोत बियोग आतुर भ्रमत हे तजि धांम
जात ह्यां ज्यौ फिरि न आवत बिना दरसें स्यांम ॥ रहे मूरि किपार
पल सेउ भये धूं घट ओय ॥ खास सत ज्यौं जात कित नही निव

सू॰सा॰ सिमनमथ्यफोय॥३॥ अबलौं सुनिजस रहत हरि कों मन राहत
२४४ धरि ध्यांन॥ रहत रस नाना मरि के पेंइ नाहिं रस न हांन क
रत देह विभाग भामिनि जो कछु सब लेत॥ सूरदास नहीं वि
नाय हू पलक चेंन न रेन॥५॥रा॥ वि॥ला वल॥ मधुकर भले आ
ए बलवीर दुर्लभ दरसन सुलभ पाए जांनि हैं परपीर॥१॥ क
हत वचन विचारि बिन बहु सो धिहें मन मांहिं॥ प्रांनपति
की प्रीति ऊधौ है कि हमसों नांहि॥२॥ कोंन तुमसों कहें मधुकर
कहन जोगी नांहि॥ प्रीति की कछु रीति न्यारी जांनि हैं मन मां
हि॥३॥ नेंन नीरन परें निसदिन विरह डाढी देह॥ काछन निर्दय
नेरके सुनजोरि जोहयो नेह॥ कहां तुमसों कहें षटपद गुपत
हृदे की वात॥ सूर के प्रभु कैसे वनें जो करहि प्रवला घात॥४॥
रा॥ वि॥ला वल॥ मधुकर यह कारे की रीति॥ मन दे हरत परायो
सर्वसु करें कपट की प्रीति॥१॥ ज्यों षटपद अंबुज के दल में व
सत निसा रति मांनि॥ दिनकर उयें अनत उडि वैठे फिरि न कर
त पहचांनि॥२॥ भवन भुजंग पिटारे पाल्यों ज्यों जननी जियत
ता॥ कुल करतूति जांनि नहीं वह सदन सुनि भजि जात
३॥ कोकिल काग कुरंग स्याम की छिनछिन सुरति करावत
सूरदास प्रभु कों मुख देष्यों निसदिन नहीं मोहि भावत॥४॥ रा
ग सोरठि॥ मधुप तुम कहां इहां गुंण गावहु॥ ए प्रिय कथा नाग
र नारि न सों कहहु जहां कछु पावहु॥१॥ जानत मरम नंदनंद
न कों और प्रसंग चलावहु॥ हम नाहीं कमला सी भोरी क्यों करि
चतुरई मनावहु॥२॥ जिनि परसे अलि चरण हमारे विरहता
प उपजावहु॥ हम नाहीं कुबिजा सी भोरी कपट चातुरी दिखा
वहु॥३॥ अति विचित्र लरिका की नाईं गुर दिखाय बोरावहु
सूरदास प्रभु नागरि मन सों किहिं विधि आनि मिलावहु॥४॥
रा॥ केदारो॥ मधुकर मधु मद माते डोलत॥ जियउ पजत सो
ई कहत न लाज तजत सूधे बोलन बोलत॥१॥ वलकत फिरत
मंदिर रा के लीने वारवार तन घूंमत॥ औरा रहि न सबनि अ
वलोकत सतता कली मुख चूंवत॥२॥ आपन हूं तन की सुधि
नाहीं पहिलें आन हीं कों है॥ सावधान करि लेहिं अपन पों तु
म हीं सों करि गो है॥३॥ मुख लागी परमा पीक की उर तन नाहिंन
धोइ॥ ना सों कहा कहियें सुनि सूरज लाल लाइ पीस बबोइ ५

राग केदारो ॥ मधुकर ए सुनि तन मन कारे ॥ कहूं न सेत सिद्ध लाई तन
न घर खेत अंग तुमारे ॥ १ ॥ कीनो कपट कुं भवि सपूरन पय सुख अग
ट तुम्हारे ॥ बाहिर खेत सम नो हूं रहे सनन अंतर गगन जु भगारे ॥ २ ॥ अव
तुम चले ज्ञान विसवअज रहूं हराए जु प्राण हमारे ॥ ते कैसै भले हैं गहि
सूरज प्रभु रूप वचन कृत कारे ॥ ३ ॥ राग सोरठि ॥ सुनि मधुप कौन
कौ कृत काज कौन पायो ॥ राज सिप चमू अधसी पे ठि जिन पद
रियो जीति विनु कपट दुंदुभि कजायो ॥ १ ॥ सुभट तें सुभट गगन
जीति रवि वस भए फि स्यौन पर त्राहु दिस देस लगायो ॥ एसो क
हू ए कियै ले नवि चरा खिके सप्रभु खसैन साजि सचिव धा
यो ॥ २ ॥ बलीय बाल साजि वाजित्र बहुत रभु न कहूं करें ईस
पशु न रहराए यो ॥ नवल वय वेस सम सील गुण रूप सम गव
न्कों है तन कछु मन न सिनायो ॥ ३ ॥ इन हि जे सुक थट कपट एते
ती नाप सो कहूं तुम कहूं जिन सो वसायो ॥ सूर संगम रस मध
र्म के हेतु जे प्रीति के हेतु नन तनव नायो ॥ ४ ॥ राग सारंग ॥ मधुक
र तुम रस लंपट लोग ॥ कमल कोस मे रहत निरंतर हमहि सि
खावत जोग ॥ १ ॥ अपने काज कि रतत कंअंतर निमिष नहीं
अकुलात ॥ पुहुप गए वहूरो वेलिनिके नेंकन मेरे जात ॥ २ ॥ तु
मं चंचल हम चोर सकल अंग वातननि कोपांत प्रात ॥ सूर वि
धाता धन्य रची जो मधुप स्याम इक गात ॥ ३ ॥ राग सारंग ॥ मधुप
तुम देखियत हौ चित कारे ॥ कालिंदी तटपार वसत हौ सुनि
यत स्याम सखा रे ॥ १ ॥ मधुकर चिहुर भुजंग कोकिला अवधि
नहीं दिन टारे ॥ वे अपने सुख ही के राजा न जियत इह अनुहारे
॥ २ ॥ कपटी कुटिल निठुर निरमोही दुख देंद्रु रि सिधारे ॥ वारक
बहुरि कवहिं आवहिगे नैंनन निसाध निवारे ॥ ३ ॥ उनकी सुनें
सो आप विगो वें चित चोरत वरमारे ॥ सूरदास प्रभु कौ मन नमो
नें सेवक करत निन्यारे ॥ ४ ॥ रा सा ग ॥ एक वात कहुं भांति अ
टपटी कहे अलि कहूं विचारें ॥ हंि म मधुपुरी रहे जोप्यारके
हूम दिन करि क्योटरें ॥ १ ॥ बज बनकी गति अोर भई हें पूर व
दसा निहायें ॥ सुख कर सब प्रतिकूल भए तें क्यों होइ तपा
उधारें ॥ २ ॥ मधुकर सकल खग कंटक वदन अब चंदअ प्रा
नि अनुसारें ॥ सुमन वान सम गुण हूं कुं जग हूं धूम मरु तनतन
जारें ॥ ३ ॥ पलट भयो व्योहार देखियत को दुहूं दुख तें टारें ॥

सू.सा समाधान नहि होत कवन विधि करत बहुत उपचारे ॥४॥ हमसो
२५५ कोटिक है या ब्रज में एके नंदकुमारे ॥ सूरदास तहां रहे तौ लोंजो
लौं दुरि तनि कारे ॥ ५ ॥ रा ॥ सो ॥ र ॥ ए अलि हमें अंदेसो आवे ॥ को
न गुनाह जो गलि लिखि पठयो सो न कहि समुझावे ॥ १ ॥ गाय अंगार बेव
सन आभूसन वके सें भस्म चढावे ॥ कबरी के सुमग हरा षेसो
को जटा बनावे ॥ २ ॥ सब विपरीति कहत तुम हम सो सो के सें बि
त आवे ॥ सूरदास स्याम कमल दल लोचन सूर स्याम मोहि भावे ॥
३ ॥ रा ॥ सो ॥ र ॥ ठि ॥ तुम अलि कहां कहत समुझाइ ॥ हमरे चित एको न
हि आवे जो ई कहत तुम गाय ॥ १ ॥ हमरे हृदे बसत नभ नमो हम सु
दर स्याम सरीर ॥ तुम जो कहत है रूप अराधन जैसो छील नीर
२ जा अंग चंदन कुमकुम चरचे तहां बतावत कहत हो छार
सो तनि हम कबहू न लगावें सुनि मठ सूर गवार ॥ ३ ॥ अपनो
पिन कों बिरह ॥ ए ॥ सा ॥ ग ॥ बारक नेंन नहीं मिलि जाहु ॥ कमल
नयन घनस्याम राधिका परसत जो मन लाहु ॥ १ ॥ कोनत हो के
र कमला बिरोधी नाइ निरखि भूल्यो लाहु ॥ मुख ससि सत्रु रूप
योधर गिरि अलि तहां तुम कों बसनाहु ॥ २ ॥ गति गजमंद स
राल विरोधी रचि रिपु हम सुख हु ॥ वीन्हि रहे चित चोर सकल
अंग ए कों सुपन न साहु ॥ चीन्हि रहे चित चोर सकल अंग ए
कों सुपन न साहु ॥ तहं पिय सूर इन की हचि राखहु तुम जिन निअ
धिक डराहु ॥ ४ ॥ रा ॥ सा ॥ ग ॥ बाते बूझति यो वोरावति ॥ सुन हु स्या
म बे सखी सयानी पावस रितु राधे विनि सुनावति ॥ १ ॥ घन देख
त गोरि कुसल मति गारजति गुह्य सिंघ समुझावति ॥ नहि दा
मिनि द्रुम दवा सेल पर रतनन या सुलटी फर धावति ॥ २ ॥ कब
हू करादुर मोर बक तब न ग्वालमंडली खग निखिझावति ॥
नहि नभ बंधु फिरन फिरना जल परि परि बूंद उचटि इत आव
ति ॥ ३ ॥ कबहुंक प्रगट पपीहा बोलत कहि कुपत्ति करत नी
कजावति ॥ सूरदास प्रभु तुमरे मिलन कों बहु विधि रहि निए
तों सुख पावति ॥ ४ ॥ रा ॥ सा ॥ ग ॥ परेखों कों न बात को कीजे
ना हरि जी जिन पांनि हमारी कहां मांनि ह्वब लीजे ॥ १ ॥ बासु
देव ब्रज राखो कुल नायक नंद जिन वरन्हावें ॥ तैं दरनंदन गोपी ज
न वल्लभ सुनो तहां न कहावें ॥ नाहिन मोर चंद्रिका माथे नाहि
न उर बनमाल ॥ पहिरत हे भूपति के भूषन सुंदर स्याम तमाल

३ ॥ अजनअरूवनकोंनांतोंनाहिनमांनतपकेंअंग ॥ सूरदासमाहि
गईसगाईवामुरलीकेसंग ॥ ४ ॥ राग सारंग ॥ सषीरीस्यांमकहा
हितुजांनें जोकोउप्रीतिकरेंकेसेंहूंहूंठिअपनेगुणठांनें ॥ १ ॥ दे
खोतोंजलधरकीवानेंवरषतअपनेजांनें ॥ चातकसदाचर
णकोसेवकरटतविनाजलपानें ॥ २ ॥ भ्रमरकुरंगकाककों
किलअहिकविसवकपरवखानें ॥ सूरदासजोसर्वसुदीजें
कारेकृतहिनमांनें ॥ ३ ॥ राग सारंग ॥ अवहूंयोंलागोदिनजांन
सुमिरतप्रीतिलाजलागतिहें उरभएकुलिससमांन ॥ १ ॥ लो
चनरहतवदनविनुदेखेंवचनसुनेंविनुकांन ॥ हृदेंरहतहृपि
पाणिपरसविनुवधतनमनसिजवांन ॥ २ ॥ मांनोंसखीएतो
हिहमएवेपाहिलेनतनप्रांन ॥ आजुसमेंटिरथिचलेनंदसुत
विसरसुग्रिहजनप्रांन ॥ ३ ॥ विधिवछहोवहुरिदुनकोंनूवेसेई
वेंनुविषांन ॥ सूरदासवैसीकछुएकसमुझतिहोंअनुमांन ॥ ४ ॥
राग सारंग ॥ विचारतहीलागोदिनजांन ॥ तुमविनुनंदसुवन
रहिगोकुलनिसिभईकलपसमांन ॥ १ ॥ मुरलीसवदधेनुकी
बोलनिसुनियतनाहिनकांन ॥ वलजनरथपगहेस्यांमयों
तवलागीपछितांन ॥ २ ॥ हेंकोजनुवकेहेंमाधोसोधीरनधर
हीप्रांन ॥ सूरदासप्रभुतुमरेदरसविनुकेहेंनिकरविनान ॥ ३ ॥
राग सारंग ॥ सुनियतमुरलीदेखिलजान ॥ दूरिहिनेंसिंघासन
वेठेसीसनाइमुसिक्यात ॥ १ ॥ सुरभीलिखीचित्रभीतिनपरता
हिदेखिसकुचात ॥ मोरपंखकोविजनविलोकतवोरावन
कहिवात ॥ २ ॥ हमरीचरचाजोकोउचालतचालतहीचपिजा
त ॥ सूरदासव्रजभलेंविसाह्योंदूधदह्योंकोखात ॥ ३ ॥ राग सा
रंग ॥ तवतेंइनसवहिनसचुपायों ॥ जवतेंहरिसंदेसतुम्हारों
सुनततवारोंआयों ॥ १ ॥ फूलेव्यालनिकसिदरनतेंअवपवन
पेटभरिखायों ॥ मदूवरलेंगजराजनिकसिकेंअंगअंगगर्व
वढायों ॥ २ ॥ सघनगुहातेंनिकसिकेहरीमाथेंपूछडुलायों
सकलविहंगमवकहूंकोंनकीसुकोंनराउकहायों ॥ ३ ॥ अंव
सिनिगहूरूलगावहुनामरज्योजियचाहतज्यायों ॥ सूरदास
अवभयोंदेखियतुवेरिनिकोंमनभायों ॥ ४ ॥ राग सारंग ॥ अ
वमोहिनिसिदेखतुडरुलागतु ॥ वारवारअकुलायदेहतें
निकसिनिकसिजियभागतु ॥ १ ॥ प्राचीअरुनदेखिपूरनससि

सू.सा.
२४६

ह्वैं जु गयौं नैन नानौं ॥ मांनहु मदन बदन बिरहिनि सौं कैं जु लियैं
रिसु रानौं ॥ २ ॥ लोचन छबि अधिकाइ न नावत अति बल करि
सर सांधत ॥ मांनहु किरनि पसारें पासनि ह्वैं बियोगिनि बांधत ॥
३ ॥ सुनि सठ सुर्‍हैं प्राणपति मेरौ याकौ सब जग जांनत ॥ सूरस्य
धु बूडै नैं काहौं तिनहूं के कंत हि न मांनत ॥ ४ ॥ रा ॥ सारंग ॥ ऐसो
महीं नैंक रि खाई रेहु ॥ मातन नैं रस सन के बदलैं जो भावै सो
लेहु ॥ १ ॥ भूली रही ठगी सी चित बनि नज्यौं ग्राम यूथ ऐगे हु ॥ जब
तैं इन अबिबेकी नैंननि हठ कनाकियौ सनेहु ॥ २ ॥ कहियो पथि
क जाय पालागौं बिरह कियो तन खेहु ॥ सूरदास प्रभु प्राणप
थिक कौं तुम हि निहोरो लेहु ॥ ३ ॥ रा ॥ सारंग ॥ कहियो सुख संदेस
अरु हाथ परी जौं पाती ॥ समैं नांनि यह बात चलैं बीसु खह मां
झ सुहाती ॥ १ ॥ तब हम प्राण समर्पण कीने गननें ग्री दिनराती
जु गत नहीं नैंदनंदन ईहै लैं जु रहे मरणाती ॥ २ ॥ जो कोऊ साखि
तब ही करतीनौं कन हम पछितानी ॥ सूरदास प्रभु कर जाइ
जब संग लिवायें जाती ॥ ३ ॥ रा ॥ सारंग ॥ लोचन व्याकुल दोऊ
दीन ॥ कैसे रहैं दरस बिनु देखें बिधु चकोर ज्यौं लीन ॥ १ ॥ बि
बरन भए खंजन निं य घातु ज्यौं बारिज जल हीन ॥ ज्यौं मासि
धु तैं बिछुरि परे हैं तरफत मानौं मीन ॥ २ ॥ ज्यौं अनु गज बिमु
ख अलि कोकिल सानी दिन दिन खीन ॥ सूरदास प्रभु बिनु गो
पाल अब बतौं बिधना यह कीन ॥ ३ ॥ रा ॥ सारंग ॥ अब ब्रजम
यौं घर निति खगो ॥ तब गिरि धरए अब इन घर गिरि प्रीति किधौं
यह दूर्‍ग ॥ १ ॥ सुसा सुर छबि बालि बारि गढ अन्न अब छिमति
छूटी ॥ प्रिय पति बिरह मदन चहु ढोरी एकौ अलगन टूटी ॥ २ ॥
नैंन नतुरगा अवण मठ सूरति जंत्र सकति बरबांनी ॥ राम केलि
चोरियां मांनहु देखि परम राजधांनी ॥ ३ ॥ गोरंभन गोलाग जे
न अगिनि धूंम धौं धिन भरी की ॥ कर करो मकं गुरनि प्रतिमांनौं
अपनी अपनी दौंकी ॥ ४ ॥ चढ तत्रिभंगा स्यांम साजि दलरस
तैं नहीं पल आंखी ॥ सोई अब सूर सहाय हमारे गगन मंडली
राखी ॥ ५ ॥ रा ॥ सारंग ॥ प्रीति करि काहू सुख न लह्यौ ॥ प्रीति पतंग
करी दीपक सौं अपनौं प्राण दह्यौ ॥ १ ॥ अलि सुत प्रीति करी
जल सुत सौं संपुट सुख हि गह्यौ ॥ सारंग प्रीति जु करी नाद सौं
निकट हि बांन सह्यौ ॥ २ ॥ हम हूं प्रीति करी माधौ सौं चलत न

कछूकह्यौ ॥ सूरदासप्रभु बिछुरे राधिका नैंननि नीर बह्यौ ॥३॥
राग सारंग ॥ अब निज नैंन अनाथ भए ॥ मधुबनतें माधौ सुनि
सजनी कहि यत दूरि गए ॥१॥ मथुरा बसत हुती उर आसा यह
लगनि ब्यौहार ॥ अब मन भए भीम के हाथी सपने हू अगम अ
पार ॥२॥ सिंधु कूल इक बरे सकह तरें नाहि छाप कान्हाऊ ॥ इह
तनु सौंपि सूर के प्रभु कौं आसु उहां उडि जाऊ ॥३॥ राग सारंग ॥
नैंन बापु सोभन का हू बीनौं ॥ सुनि ब्रजनाथ सबनि के प्रेम नमि
लि यह दुख दीनौं ॥१॥ सतु बसंत अन समय अध ममाति पि
क सह्याय लें धावन ॥ प्रीतम संग जानि रितु बंतिन सुख बोलें हू
नाहि आवत ॥२॥ सत्रामर स्वमि सकलक लाले सन्मुख रहत तहु
नाई ॥ सो मिप हुत कहु बीते बिनु कब हूं न रैन सिखाई ॥३॥ त्रि
विधि अनिल सौरभ सुमन सजुत मत मधुप गुंजार ॥ ज्यौं ज्यौं
च्यौ सुकियो बांधि बल तजि मन सवें बिचार ॥४॥ प्रतिपति अ
ति अनीति करि कोप्यौ कोटि धूम ध्वज मांहे ॥ लें कर धनुष
चितें तु सरौं मुख अब कर लै तुहे जानु ॥५॥ भली करी गोकुल
पति आये नीके काल आतीनि ॥ कहा जानियें प्रबल समर सौ
समर कौं न बिधि जीति ॥६॥ सपने रैहू कें सत पके सुख दुख ल
हत मन के असु ॥ सूरस्वामी अब तुम ब्रज रहियो बिरह उत बसि
यौ कें सु ॥७॥ राग सोरठि ॥ अहूर हत तन हारि जुसि धारे काहे की
प्रीति हमारें ॥ छिरि छिरि जात बिरह सर मारें पूरि पूरि आव
त अब बाधि बिचारें ॥१॥ फल्ल तन हरे संदेसनु सारें कुलिस तें क
ठिन धुक न हैं नारें ॥ नीबन मरन दोउ भय भारें कहियें धौं सू
रस जप बिहारें ॥२॥ राग मलार ॥ शाखिन सिखरि चढि टेरि
सुनायौ ॥ बिरहिनि सावधान ह्वै रहियो सजि पावस दल आ
यौ ॥१॥ बादर अनि बानें न पवननि ताजी चढि चटकि दि
खायौ ॥ दामिनि मिलन समान घटा घन गाजि निसान बजा
यौ ॥२॥ चातक पिक सुक भृंग भिल्लरी सब हि निमारू गायौ
मदन सुभट लैं पंच बान कर ब्रज सन्मुख ह्वै धायौ ॥३॥ जा
नि बिदेस नंद नंदन कौं अबलनि त्रास दिखायौ ॥ सूरस्याम
पहिलें गुन सुमिरत जात प्रान बिरमायौ ॥४॥ राग मलार
किधौं घन गरजत नहीं उन देसनि ॥ किधौं वहइं द्र हठि
हि हरि बरज्यौं दादुर खाए सेसनि ॥१॥ किधौं वह हरे सबक

सू॰सा॰ निमसुघांउग्रीं थरखूटननिप्रवेशानि॥ किधौंउहिदेशमोरचा
२५१ तकपिकवधिकनिवधेविशेषनि॥२॥ किधौंउहिदेशवाला
नहिंफूलनिगावतिगीतसहेसनि॥ पथिकनचलतसूरके
प्रभुपैंजासोंकहोंसंदेसनि॥३॥ राग मलार॥ सखीरीपावसमें
नपलान्यौं॥ पायोंबीचइंद्रअभिमानीहरिविनगोकुलजा
न्यौं॥१॥ दसहूंदिसाधूमदेखिकैंकंपतहैंअतिदेह॥ मानहु
चमूंचतुरंगचलतवहुवाढीहैंसुखदेह॥२॥ बोलतमोरसैल
द्रुमचढिकैंआउठतिज्यागिदुंदुभीकों॥ मानोंसेनाफरहराफिरा
वतभाजतकहतपुराकों॥३॥ गरजतगगनगयंदसुजनमानों
भरुदाद्रुरदलवारा॥ सूरदासप्रभुअपनेव्रजकोकाहेंनले
हुसंभार॥४॥ राग मलार॥ कौंछमसखीनईचाहसुनिआई॥ हमव्र
जभूमिसकलसुरपतिपेंमदनमिलिकैंकरिपाई॥१॥ घन
धांवतिवगपांतिपटोसिरवैरखतडितसुहाई॥ बोलतपिक
चोंतकऊंचेसुरमानोंमिलिदेतदुहाई॥२॥ दादुरमोरचकोरव
दतसुकसुमनसमीरसहाई॥ चाहतकियोवासवृंदावनवि
धिसोंकहांवसाई॥३॥ सीवनदीपेसकौंनवकोंऊहुतेवल
कुंवरकन्हाई॥ अवसुनिसूरस्यामकेहरिविनुएकरिहेंठ
कुराई॥४॥ राग मलार॥ देखियतचहुंदिशातेंघनघोरे॥ मानहु
मतमदनकेहाथीवलकरिवंधननोरे॥१॥ स्यामसुभगतन
चुवतगंडमदवरखतथोरेथोरे॥ धावतपवनमहूंतमन
हूंपेंमुरततनअंकुसमोरे॥२॥ मानहुदंतवगपंगतिनिकसि
उरअवधिसरोवरफोरे॥ विनुवेलाजललनिकसिनयनमम
गकुचकंचुकिवंधिवोरे॥३॥ तवउहिसमयआनिएरापति
व्रजपतिसोंकरजोरें॥ अवसुनिसूरस्यामकेहरिविनुगय
तगातजैसेंभोरे॥४॥ राग मलार॥ वरषारितुआईहरिनमिले
माई॥ गरजिगमनघनदामिनिदीनीदिखाई॥१॥ मोरनिवन
वनवुलायदादुरलीनीजगाई॥ पपीहापुकारसखिसु
नैंनेंविकलभाई॥२॥ इंद्रचापधुवढायसायकडरोंरीमाई
विषनवूंदएतौरीपाहीतेसहेनजाई॥३॥ पथिकपातीलि
खायवेगाढीजेपहुचाई॥ सूरसुमतिजैसेंआवहिंजदुराई
॥४॥ राग मलार॥ सखीरीवातकमोहिजिवावें॥ जैसेंहोंपिउपि
उरटतिरैनिदिनतेसेंवहेंपुनिगावें॥१॥ पहिलेंविरहजरीप्री

तुमकै तौउजी भन रहांवें ॥ आपुन बोलि पिआय विरहिनी अम
तरस बोरावें ॥२॥ जौन महा इहोय यहु पंथी प्राणन बहु न दुख पावें
जीवन सुफल सूर ताहीकों जो काज पराए आवें ॥३॥ रा॥ग॥ मला र
बहुरि हरि आवहिगे किहि कांम ॥ रितु बसंत अरु मधुकर बितै
कें अरु वार रभये स्यांम ॥२॥ तारेगन तगगन वे सारिवी मोहि
वितें सब जाम ॥ घरकों काज सबें बिसरायो सुमिरि सुमिरि
पियनांम ॥२॥ छिनु भीतर छिन बाहिर ठाढौ रहेंन तन धन धां
म ॥ सूरदास प्रभु अवधि विचारत रहे आश्रित अरु चांम ॥३॥ रा
ग॥ मलार॥ ब्रज पर बहुरों आए गाजन ॥ जो कब हूं पति जायब
देकी मुरवकौ रिखवत लाजन ॥२॥ वार रहे लव हू रिपि तें अम
दे सुनियत लागे वाजन ॥ घोषके लोगकों न्हव ल विनु अवमि
तति न धाए भाजन ॥२॥ आपुन जाय द्वारिका छाए लागे स्यांम
विराजन ॥ सूरदास गोपीकौ जीवहि जिनिके विरह […] साजन ॥३॥
रा॥ग॥ मलार॥ बहुरों बादर बरखन आए ॥ अपनी अवधि जानि नंन
दनंदन गरजि गरजि घन छाए ॥२॥ सुनियत हैं सुरलोक बसत
तहें सेवक सदा पराए ॥ चातक कुल […] रजां निकें नहुं नहुं
उठि धाए ॥२॥ द्रुम किये हरित हरषि बेली मिलि […] तक
जि वाए ॥ छाए नि […] तहां पंछिन हूं पति भाए
३॥ समुझत नांहि सखि चूक आपनी बहुते दिन हरि लाए ॥ सूर
दास स्वामी करुणामय मधुबन बसि बिसराए ॥४॥ रा॥ग॥ म
लार॥ कहुं अव […] मिलनकौं नेहु ॥ हमरे जिय तें न रनंद
न अव कि […] अव गोहु ॥ एक घोस गई गाय वृंदावन
तहां कछुव रख्यो मेंह ॥ हित के लियें उठाय […] कर निज
एकें देहु ॥२॥ अव हमकों लिखि लिखि पठवत हैं जोग सुग
ति तुम लेहु ॥ सूरदास विरहिनि कौ जीवहि कौं न जतन है एहु
३॥ रा॥ग॥ मलार॥ मोहि भरोसों कान्हकौ ड रपों जिनि कोई ॥ सुनि
जसुमति कें सभी तबें तुजि निव्याकुल होई ॥२॥ पहले हि पूत
ना प्रगट कें आई कुच विष पोई ॥ वासी प्रबल छरिनकें बा
लक मारी देखत तनोई ॥२॥ केसी तरणावर्त अरिष्ट अघ इन देख्यो
बल टोई ॥ गिरिकर धारि घोषसव राख्यो सुरइंद्र दरप खोई ॥३॥
रा॥ग॥ मलार॥ हमारे माई मोरवु वैर परे ॥ घन गरजे बरजे नहि मा
नत त्यों त्यों रटत खरे ॥२॥ करि इक ठौर वीनि इनके पंख मोहू

सू.सा. नहीं संधौरे ॥ याही तें हम हीको मारत हरि हीं ढीठ करे ॥ २ ॥ कहा
२४८ जानि यें कंचन गुन माखिरी हम सों रहत अरे ॥ सूरदास परे
म चसत हू एक न नैंन टरे ॥ ३ ॥ राग मलार ॥ मानों माई सवनि
इन्हें भावत ॥ नवधू हि देश नंदनंदन पहि कोउन हिं संदेसा नावत
॥ २ ॥ धरत तन द्रुमन नव पल्लव फूल फल पिक चवन तन हिं गाव
त ॥ मुदित न सरसरोज नव अलि कुल पवन पराग उडावत
॥ २ ॥ पावस विविधि वरन वार दघन उमडि अंबर धावत ॥ दा
दुर मोर चकोर न बोलत दामिनि रूप दुरावत ॥ ३ ॥ हूं अवध
गट निरंतर आनि पास्हिनु वल करि विरह वढावत ॥ सूर वैर बज
नाथन जानत वैसोई सव वैर करावत ॥ ४ ॥ राग मलार ॥ स्याम घन
दुखि गगन घन उरते ॥ औसर पाय उधानगा हूनन अपनी
सेवा करते ॥ १ ॥ अंग छटा नव घटा निरखि मन मंडित अल्प
चरते ॥ वे भोवानि मोनि सोभ गता बनमाल पें उन भरते ॥ २ ॥
गोत एहि निहरि जानत वे संग छत्र छांह अनुसरते ॥ रही पु
एपते जगत जलर होइ दस हूं दिसा विचरते ॥ ३ ॥ अब विश्राम
अवास संप्राणपति आति मंदिर सर्व सुख रते ॥ सूर स्याम अभिराम
आसा करि हून न विरह वाउरते ॥ ४ ॥ राग मलार ॥ अब कछु औ
रें भाय भई ॥ निरखत नंदनंदन को औरहु तीसु गाई ॥ १ ॥ उ
पजी प्रीति हू देखत रजउ सरूप ता लगाई ॥ अब द्रुम पस को
सिखर अंबर लों चढ़ों दिसि छाय रई ॥ २ ॥ वचन सुपत्र कंक
अवलोकनि गुणनिधि पुष्प मई ॥ सूरदास फल गिरिधर
नागर मिलि रस रीति ठई ॥ ३ ॥ राग मलार ॥ नैंन घन रहत न एक
घरी ॥ कबहूं न घटत सरापां वस ब्रज लागिये रहत झरी ॥ १ ॥
विरह इंदु वरखा वत नि छिन दिन दिनहूं अधिक करी ॥ ऊर्ध
स्वास समीर तेज जल उरा विभुउ मगिभरी ॥ २ ॥ बूडत भुजा रोम
द्रुम अंबर अरु कुच ऊंच थरी ॥ चलि न सकत पग पथिक कर
हूं ण्यक चंदन की चवरी ॥ रसरितु मिटी भई अब यों यह वि
धि उलटि परी ॥ सूरदास प्रभु तुम्हरे विछुरि तुम रनाइ टरी ॥ ४ ॥
राग धनाश्री ॥ रहति रैनि दिन हरि हरि हरि रट ॥ एकटक कुम
गुनो वति चकोर लौं जव तें विछुरे तुम नागर नट ॥ १ ॥ भरि
भरि लोचन नीर लेति उर सजल करत कुच कंचुकि के पट
मांनहु विरह की विज्जुलता लागि लयो हैं नेमुषी वसी सह

सघन ॥ २ ॥ जैसें जवके अग्र अोस कन प्रांण रहन एसें अवधि
हि केतय ॥ सूरदास प्रभु सुधि कि न मिलहूं चलन कहें माधो सो
हि अ प्राण निकाय ॥ ३ ॥ राग धनाश्री ॥ अति रसलंपट मेरे नेंन ॥ त
पत न मांनत पिवत कमल मुख सुंदरता मृदु वेंन ॥ १ ॥ दिन अ
रु रयनि घरी छिनु पल भरि काहू न नाहिं न चेंन ॥ सोभा सिंधु
समाय कहां लों हृदें सांकरों एन ॥ २ ॥ अब ए परहु विरह अजर
उमगी अंग विमलाय्यो दुख देंनु ॥ सूरवेंद ब्रजनाथ मधुपुरी
काहि पठाऊं लेंनु ॥ ३ ॥ राग धनाश्री ॥ नेंननि की कुमति सुनहु स
यानी ॥ निस दिन तपत सिरात न नाछिनु भरि जद्यपि उमगि चल
त पल धानी ॥ १ ॥ होंउ पचार अमित उअ प्रांनानि रवलभ एलोक
लाज कुल कांनी ॥ कछु न सुहाय रहे दरसन रस वारिज वर
न मंद मुसिकांनी ॥ २ ॥ रूप लकुट अभिमांनानि दरजग तुपहा
स सहत न लजांनी ॥ बुधि विवेक बचन चातुरी मांन हु उल
टि उन मांफ समांनी ॥ ३ ॥ आपु जपंथ गुरुजन गुपत करि वि
कल भई तन दसा भुलानी ॥ नागरि सूर स्यांम अंजन कों व
हमूरति जिय मांफ हि तानी ॥ राग धनाश्री ॥ अवनी ऐसें ई
दिन मेरे ॥ सुनि री सखी सोच नाहि काहू हरि हित लोचन के रे
॥ १ ॥ मृगमद मलयज कपूर कुमकुमा जे सब संतन चेरे ॥ मंदप
वन सुमन ससि सीतल ते रवि परजु करें रे ॥ २ ॥ चातक मो
र कोकिला मधुप उपवन दियें वसेरे ॥ जो भावत सो वक
त घोंस निसि वसन न रहत न टेरे ॥ ३ ॥ ने दुमसी विसी चिकर
अपने कि ये व्रच्छ बढेरे ॥ सूरदास कि सवय कर वर कें आं
निनें नमगा घेरे ॥ ४ ॥ राग धनाश्री ॥ अति मलीन वृषभांन दुला
री ॥ हरि श्रम जल भींजेउ र अंचर इहलाल चिन धुवा वति
सारी ॥ १ ॥ रूखे चिहुर वदन कुम्हिलानों ज्यों नलिनी हिमकर
की मारी ॥ अधमुख देति ऊंचो नहिं चितवति ज्यों धन हारें ज्यु
वा तनु आरी ॥ २ ॥ हरि संदेस सुन तन्मा छूटनभई विरहजरी दू
जें आलि नारी ॥ सूर स्यांम बिनु के सें जीवें ब्रजबनि ता नि प्रा
ण दियें वारी ॥ ३ ॥ राग जैतश्री ॥ उमगि चले दोउ नेंन विसाल ॥ सु
नि सुनि यह संदेस स्यांम घन सुमिरि तुमारे गुण गोपाल ॥ १ ॥
आनन अरुण दहन निके अंतर जलधारा सोभित तिहि काल
जानु जुगल जु सुमेर शृंग तें मिले जाय सम सांसि हि सनाल २

सू.सा. भीज्यौं अरु अंबर अनि राजत तिहि तर हरि सुतन की माल मानहु
२५८ इंद्र धनुष नव नलिनी दल अलि अंक्रत अमी ओस कन जाल ३
कहां वह प्रीति रीति राधा की कहां इह कठिनी उलटी चाल
सूरदास प्रभु यह कपट संदेस निको जो बहि विरहनि बेहाल
४॥ राग जैतश्री ॥ केते दिन भये तेरी हरि बिनु देखें गगन नाहि गनत
गिरि गई सखी री कर अंगुरी की रेखें ॥५॥ जिहिं इहि विरह अब
रब्यो न बिसराई नैनन निमेखें ॥ होंउ रपति अवधि सूरज प्रभु
जिनि पारौं सुरलेखें ॥६॥ राग आसावरी ॥ नंदनंदन बारहि हि चित
ए मांन ॥ चलती बेर हरन नहिं कीनों पंथ अमंगल जांन ॥१॥ श्री
रंग अंग समाज सकल गुन मन लोचन अरु ज्ञान ॥ स्वंदन अग्र
पटा तिकिये लें मसिक कहई मुसकान ॥२॥ मथुरा नगर राज ली
ला कों ब्रज मग रायो बन ठान ॥ स्यामा सखी व्याकुल धौं कुंजेगा
जुगति सखि बांन ॥३॥ करुणा सिंधु कहत कानि मुनि गणए तेउन
की नी कांनि ॥ फिरि जिनि मन पछिताहु सूर प्रभु उपजें प्रेम बिज्ञा
न ॥४॥ राग आसावरी ॥ तब तें छीन भए सुवाहु ॥ आधौ भोजन
सु बल करत हें सब ग्वालन राहु ॥१॥ आनि गयो गई सब
सोभा काहु न मन उछाहु गाय पिछवारें डारत नैनन नीर
प्रवाहु ॥२॥ एक बार पाय ब्रज में दूध पूत षित खाहु ॥ सूर
ज प्रभु जब हु गोकुल आसा उलटि मधुपुरी जाहु ॥३॥ राग आसा
री ॥ सखी री हरि हि दोष जिनि देहु ॥ नातें एते मान दुख पैयत हू
मारेंहि कपट सनेहु ॥१॥ विद्यमान अपने इन नैनन सूनौं देख
तिगेहु ॥ तदपि सूल ब्रजनाथ विरह तें फिरि न होत बउ बेहु ॥२
कहि कहि कथा पुरातन ऊधौं अब तुम अंत न लेहु ॥ सूरदास
तन तौ यो ह्वैं सौ ज्यौं फिरि फागुन मेहु ॥३॥ राग आसावरी ॥ ऊधौ
आयौं परदेसी को नेहु ॥ सब तुम कांन्ह कांन्ह कहि टेरत फूला
तिहीं अब लेहु ॥१॥ काहे को तुम सरबस अपनौ हाथ पराए देहु
उन तुम हां मथुरा छांड़ि समुद्र तीर रचि यों गेहु ॥२॥ अब तन
तपत महा उर उपजी बाप्यौं मन संदेहु ॥ सूरदास विहबल भई
गोपी नैनन नि बरष्यौ मेहु ॥३॥ राग देवगंधार ॥ कुमति कौंऊ वैरा
गिनि वैराग ॥ पलटति बसन करनि निसि चोरी वपु विलसि
ति भई जाग ॥१॥ वे सखि वेहमूंदि मृग गामर भषि न रवनि बिसरति
मांग ॥ अब गनि निते तजि न रल तरो नाथ हरत फनि मनि नांग ॥ २

कुसुमावलि ग्रंथित उरमाला रचि पाछैं पाग ॥ वासर रहति निसंज
निके धोखें धोए मिटत न रंग ॥४॥ सुंदरि एक स्यामतें बिछुरी
दूलति है बन बाग ॥ सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन कों आलि उडाव
ति कांग ॥५॥ राग बिलावल ॥ हरि दै रिबि के कीसा धु मुई ॥ पुटपुट फि
रत नयन के गोलक फल फूटें जैसें आक रुई ॥१॥ जोग सुनत न
औरै जिय उपजी प्रेम मुला के भ्रम मन्ये दूखु दई ॥ नांनें भलहि कहांने
आंखनि बहु मूरति मन मांह हुई ॥२॥ बिन देखें की बिपा बिरहि
नी आति सुंदर रतिन जानि सुई ॥ सकन सूर ध्यान अंकुर लो मां
नहुं बरखा मूल तुई ॥३॥ राग नट ॥ तुम्हरे बिरह ब्रजनाथ अहो पिय
नैनन नित नदी बढी ॥ लिये जात निमेष कूल दुहुं एते मान चढी ॥१
गोलक नव नौका न सकत चलि स्यो सरकनि बढि बोरति ॥ ऊ
रध स्वास समीर तरंगिनि तेज तिलक तरु तोरति ॥२॥ सजल की
चकुची लविये नट अंचनि बढि बोरति ॥ ऊरध स्वास समीर तरं
गिनि तेज तिलक तरु तोरति ॥४॥ नाहिन औरौ उपाय रमापति
बिनु दरसन नाहि छिनु जीजें ॥ अश्रु सलिल बूडत सब गोकुल सूर
सु कर गहि लीजें ॥५॥ राग नट ॥ हम को सुपने हू में सोच ॥ नाहिन
तैं बिछुरे नंदनंदन ता दिन तें नहि पोच ॥१॥ मानों गोपाल आए मे
रे आंगन हसि भुज बांह गही ॥ कहा करों बैरिनि भई निद्रा नेंकु
न अधिक रही ॥२॥ ज्यों चकई प्रतिबिंब देखि कें आनंदी पिय जा
नि ॥ सूर पवन मिस निठुर बिधाता चपल कीयौ जल आनि ॥३
राग कान्हरो ॥ अंखियां सबें अजान भई ॥ एक अंग अवलोकत
हरि कों औरो हुते सु गई ॥१॥ यों भूली ज्यों चोर भरे घर निधि नल
ई बदलत भोर भयो पछितानो कर तें छांडि दई ॥२॥ जिहि मुख प
हिलें ही पमि पूरन तो ही कैसो न रई ॥ सूरस कांति आति लोभ बच्यो
हूं उपजत पीर गई ॥३॥ राग केदारो ॥ कैसें धौं बनत ब्रज दूरि कों
आवनु ॥ सुनियत है उहांहू ते सजनी दूरि कियो है अन तगावनु
॥१॥ निकट बसत हू मम रसु न जांन्यो मिलि हू न आई छांडि भवनु
अब के अपने कुटंब माहि तसखि भवनासि धारे जांति जवनु ॥२
आगम अनंत दूरि पाछिम दिसि जहां कहूं न है सिंधु लवनु ॥
सूरदास तनें मन तर सन अबज दूपति पें लेंज डंक वनु ॥३
राग केदारो ॥ दधिसुत जात हों उहि देस ॥ द्वारिका है स्याम सुंदर स
कल भुवन नरेस ॥१॥ पेरम सीतल अमीयत नु तम क हि यो प

सू॰सा॰ हृदपरदेश॥ काजअपनेमारि हमकोंछांडि रहेविदेस॥४॥ नंदनंद
२५० नजगतवंदनधरहुनरवरवेस॥ नाथकैसेंअनाथछांडोंका
हियोंसूरसंदेस॥५॥रा॰गोरी॥ केतेदिनबीतेहरिदेखेंविनुमा
ई॥ नंदसुवनमुखकमलमनोहरमूरतिस्यामसदांसुखदाई
॥१॥जबउठिजातप्राततगोसुतलेंगोविंदग्वालसंगबलभाई॥
अबजुनिकटमथुरामधुसूदननिपटजनकजननीबिसरा
ई॥२॥तबतेंगननघरीघरआंगनबासरबियरजनीनबिहा
ई॥सूरदासऐसीकठिनभईहेंप्राणपवततघरछांडिनजाई॥३
॥रा॰गौरी॥ हरिबिनुकौनसोंकोंहियें मनसिजविथारहतअरुनी
जोंउरअंतरदहियें॥१॥कांननभवनरैनिबासरसखिकहूंन
सुखलहियें॥हमतोंभईजगपंकेपसुज्योंकोलोंदुखसहियें॥२
कबहुंकजियआवतिहेंऐसीजायजमुनजलबहियें॥सूरदा
सप्रभुरामकृस्नबिनुकैसेंकेंब्रजरहियें॥३॥रा॰मलार॥माई
रीस्यांमकहूंरहितुजानें॥कोऊप्रीतिबिसारिकेसेंहंअपनोंहीगु
णठांनें॥१॥देखहुइनजलदननवीनकरनीबरषिजुपोषहिंआं
नें॥चातकचरनसरनकोंसेवकदुखीबिनाजलपांनें॥२॥भ्रम
रकुरंगकोकिलाकहितसबकपटखखांनें॥सूरदाससबखसु
दजिनेंतोंकारोंकृपाहिनमांनें॥३॥रा॰मलार॥अबबेवातेंईजु
रही॥मोहनमुखमुसिकायजुकबहूंकांन्हजेजेकही॥१॥प्रीति
सूलतासुपिनरहीसबसन्मुखसबेंसही॥अबहूंसालतिउ
रअंतरतेकाटेकठतनहीं॥२॥सखियहविथाविसालकर
नकीकततेंहूंफिरनिवही॥हेरिचुंबककजहांमिलेसूरप्रभुलें
चलिमोहितही॥३॥रा॰मलार॥कहूंतोंजोकहिवेकीहोइ॥मांन
नाथबिछुरेकोबेदनिजांननतनाहिनकोइ॥१॥तबतेंअधर
सुधारसलेलेंरहीमदनरसभोइ॥जोरससिवसनकारिनपा
बेंहिसोरसबेंठीखोइ॥२॥विरहविथाबाढीउरअंतरजामें
ब्यापीहोइ॥सूरदासमनहरनमनोहरलेंजुगएमनगोइ॥३
॥रा॰मलार॥कोऊमाईबरजेंरीयाचंदहि॥करतहेंकोपबहु
तहमऊपरकुमुदनिकरतआनंदहि॥१॥कहांकहूंकहांरवि
अरुतुमचंदकहांबलाहककारी॥चलततनचपलरहतथ
चाविकपिविरहिनीकेतननारी॥२॥जिंदतिसैलउदधिफन
गकोंचांपतिकमलककठोरहि॥देतिअसीसजरारखीकोंरा

हूके नु किनि जो हरि ॥ ३ ॥ ज्यों जल हीन मीन तनु तलफतु सोई नप
ति ब्रजबालहि ॥ सूरदास प्रभु वेगि मिलावहु मोहन मदन गुपा
लहि ॥ ४ ॥ राग मलार ॥ हरि बिनु निशि देखत डरु लागतु ॥ वारवार
अकुलाय देहु तें निकसि निकसि मन भागतु ॥ १ ॥ प्राची प्रथम
देखि पूरन ससि कै आयौ तन तातौ ॥ मानहु कमलनि वनवि
रहिन कौं करि लीनौं सिर रातौ ॥ २ ॥ भ्रकुटी कुटिल कनक चाप
जनु अति मद सर हिनु साधें ॥ मनहुं कांम कमन्यातु कोप सौं
विषम वांन वर बांधे ॥ ३ ॥ सुनि सठ सोहि प्रांणपति मेरो जाकों
जस जगु जानत ॥ सूर सिंधु बूडे तें काढ्यौ नाहूं कन हुं न मानत
॥ ४ ॥ राग मलार ॥ अंखियां करति हैं अति आपि ॥ सुंदर स्यांम प हु
नई के मिस मिलि न जाहु हरिन व्यापि ॥ १ ॥ वांह थकी बाइस हि
उडावत कवरे षें अनुहारि ॥ राधा स्यांम स्यांम काहूं हेरति का
लिंदी की कारि ॥ २ ॥ कमलनयनि जनानि ऊ[illegible]नकूडति
हूं थापि ॥ सूरदास प्रभु तुम रे दरस बिनु सक तनु रिखपसापि ॥ ३ ॥
राग मलार ॥ ऐसे मारे हूं मन जाने स्यांम हिं सेवा कारन करी उनि
रासी गाजें नितिकुलनां महि ॥ १ ॥ तनमन जोपि प्रीति जो नाहि
कहूं भलाई तां महि ॥ ते कहूं पीय राई जांनें ज्यों लुब्धक अप
ने कांम महि ॥ २ ॥ चात्रिक चरण[illegible] कों सेवक दुखी विना जल
पांन हि ॥ सूरदास प्रभु अस[illegible] की नी रची कूंवरी नां महि ॥ ३ ॥
राग सोरठ गांधार ॥ जब तें बिछुरे कुंज बिहारी ॥ नीरदन पर घर तिन
हि रजनी विषानि रह[illegible]र भारी ॥ १ ॥ धिक सुंदरी विरह की वेर
नि जगामें रही पुजारी ॥ रविकी रस्मि लागति अनतानी दहसी
तल सिजारी ॥ २ ॥ श्रवणनि सव दुख सुहाइ निसा खिरी पि
कचात्रिक दुमडारी ॥ ननाहिन भावति अति आतुर केकर र्कं
कनसु उतारी ॥ ३ ॥ सूर स्यांम बिनु लागति हैं कुसुम सेज जु खा
री ॥ विलखि वदन वृखभान नंदिनी निंदति कोविद पुहारी
॥ ४ ॥ राग केदारो ॥ मैं जान्यौं री आए हैं हरि जागि परें पाछें तांनी
दुनै मान तनन तलफति साखिरी मनहु मीन विनु पांनी ॥ १ ॥ सु
नारि देह तें जरत विरह ज्वर जतन निहीं प्रकृति आंनी ॥ अव
कहां करौं अपष्प मिलि वेकी वही व्यथा दुख दूहरानी ॥ २ ॥
पठवहु पथिक सव[illegible]लि लिखि वकति वकाति अकुलां
नी ॥ सूर स्यांम सुधा विनु कैसें घटन कठिन जरनि तन जानी ॥ ३

रा॥ सारंग॥ देषि सषी री इत हिं वहगाउ॥ जहां सुहृ नंद लाल वसतु
है मोहन मथुरानाउ॥१॥ कालिंदी के तीर विराजत परम मनोहर
ठाउ॥ जौ तन पाइव हो हि मुनि सजनी आजु अबै उडि जाउ॥२॥ है
नाहै सुहोय उहि ओसर हौं तौ अन्न न खाउ॥ सूरस्याम सुंदर
सौं हितु करि लोगनि कहं डराउ॥३॥ राग गौरी॥ सुनि सषि धन्य हैं
ते नारि॥ जे अपने प्रांन वल्लभ कौं सपनेहु देषति अनुहारि॥१॥
हौं कहां करौं सुस्याम वलै ते पर हिलैं हिनी रगई दिन व्यारि॥ अब
काहू के कहे न आवति रही हूं छिअ पमान सम्हारि॥२॥ अरु ताहू
मैं नैंन तपत ए अंसुवन मुख बाढति है वारि॥ सूरदास हैं ऊ सुभ
गा सो वरि चले उमगि मरजाद उतारि॥३॥ राग मलार॥ जो पै नंद सु
वन घर होते॥ तौ सुनि पिक चातक यह विनती कत डरती अर
तो ते॥१॥ हमहि अकेली जांनि इह गोकुल हरपाय रण रणजो
ते॥ मांनहु गरजि गरजि घन पठवत मदन अहावत तपो ते॥२॥
ज्यों कछु कद लागा तुहे इहि व्रज लेतौ सुमरव सु होते॥ सूरदा
स अव पोल धरन विनु कैहां सरोवमो ते॥३॥ राग मलार॥ हरि
परदेस वहुत दिन लाए॥ कारी घटा देषि वादर की नैनन नीर भरि
आए॥१॥ पा लागों तुम वीर वटाऊ कौन देश ते आए॥ इतनी पति
यां मेरी दीजहु जहां स्याम घन छाए॥२॥ दादुर मोर पपीहा बोल
त सो वन मदन जगाए॥ सूरदास स्वामी के विछुरें प्रीतम भए
पराए॥३॥ राग मलार॥ आजु घनस्याम की अनुहारि॥ उनें आए सां
वरे सषि री देषि रूप की आरि॥१॥ इंद्र धनुष मानौं पीत वसन
छवि दामिनि दसन विचारि॥ जानौं वग पांति मिली मोतिनि
की चितवत चित लेत हे इहारि॥२॥ गरजत गगन गिरा गोविंद
की सुनत नैंन भरे वारि॥ सूरदास गुन सुमिरि स्याम के विक
ल भई व्रजनारि॥३॥ राग केदारो॥ अव हरि आइहैं जिनि सोचहि
सुनि विधुमुखी वारि नैननि ते अपनी सोजि निमोचहि॥१॥
लै लै सुखनि मसि अपने कर लिषि संदेस छांडि संकोचहि
सूर सु विरह जनाउ करति कत प्रवल मदन रिपु मोचहि॥२॥
राग केदारो॥ कर कपोल धरें भुजजानु पर लिषति है चरनन
ष रेषनि॥ सोचति विचार करति वेंदी कामिनि धरति ध्यांन
मरन सुष भूषनि॥१॥ नैंननि [illegible] भरि लेति उसास मिरी
धिक धिक ए रैंनु जाति अलेषनि॥ कमलनयन रहे मधुपुरी

छायकरिञ्जाके गुणनि जानें सहूस सुख शोसनि ॥ ४ ॥ अवधि
घुटप्पकौन्हू सुनुरी सखी कैसोजी वोनि प्रिस्यामिनि देखनि
सूरदास प्रभु चेटक लगाइयें ना चिमयो नर स्तान नामे खनि ॥ ३
॥ राग सारंग ॥ यह सब मेंहू पोच करी ॥ स्यांमसरूप निरखिनैंन
निउठि भोंहू निफंदपरी ॥ १ ॥ वे किशोर कमनीय कुमनि हूं लुब
धतें हून डरी ॥ अब छबि गई समाय हृदै मैं टारत न टूंनटरी ॥ २ ॥
अति सुख दुख व्याकुल संभ्रम अम विधु मुख निरखि खरी
रोम रोम सुंदरता देखत आनंद उमगि भरी ॥ ३ ॥ जद्यपि सूरस
हृति सनमुख सर अंग गुरु देंन सरी ॥ तद्यपि करमुरलिका अंबे
लोकत उलटि अनंग जरी ॥ ४ ॥ राग केदारो ॥ अब सपनिनी हूं मा
ई ॥ भायजिय अपमान मानि जिनु सकुचनि ओट लई ॥ १ ॥ अति
रिस निठुर वकत कियें निसि आगम अटक करई ॥ सपनें हू पिय
संजोग सहि तन कहि सहू चरिसो निभई ॥ २ ॥ कहूं निशि व सोच म
नही मनकर तन चनें खई ॥ सूरदास तन तजें मिले वरु विधि
विपरीति ठई ॥ ३ ॥ राग सारंग ॥ नेंना अवलागें पछितान ॥ विछुर
त उमगि नीर भरि आए विसरे सब पहिचान ॥ १ ॥ हिलि मिलि कें
कंत प्रेम बढायो हम हिम एवि सजान ॥ तब वह प्रीति करी अ
तुरई समुझे न कछु अजांन ॥ २ ॥ वेरी काम दहें निसि वासर न
ही हमारे मांन ॥ भयो विदेस मधुपुरी हमको कैसो हूं हून जांन
३ ॥ अतिचट पटी देखौ यो आहूत अवलागे ललचांन ॥ सूरदास
प्रभु दीनं दुखित तजे लेन गए संग प्रांन ॥ ४ ॥ राग सारंग ॥ हरिदर
सन कों तरसति अंखियां ॥ झांकति झुकति झरोखा वैठी कर मी
डति ज्यों मखियां ॥ १ ॥ विछुरी वदन सुधार सनि धितें लगति न
ही पल पखियां ॥ इकटक चितवनि उडिन सकति देह थकित
भई सुनि सखियां ॥ २ ॥ बारबार सिर धुनति विसूरति विरह ज्वार
जनु जाखियां ॥ सूर सुरूप मिलें हीं जीवहि नाहि काढि करनिन
खियां ॥ ३ ॥ राग सारंग ॥ नैंननि वहैं रूप जो देखौ ॥ तो धौं इहूं जीव
नु जगकों सांचु सुफल करि लेखों ॥ १ ॥ लोचन चपल चारु खं
जनु अंजन रंजन हृदें हमारे ॥ सुरंग कमल मृग मीन मनोहर
श्वेत अरुण अरु कारे ॥ २ ॥ कुंडल रतन जटित अवणनि वर
गंडकपोलनि झाईं ॥ मनौं दिनकर प्रतिविंव मुकर में ढूंढ
तयह छवि पाई ॥ ३ ॥ मुरली अधर विकट भौंहें करि ठाढे होंहि

सू॰सा॰ २५२

त्रिभंग॥ मुक्तमाल उरनी लसि खरतें धसी धरनि जतुरंग॥४॥ औ
रवेष को कहै बरनि सब अंगनि के सरि खोरी॥ देखव नैंन कहत
रसना सो हम अरु मोहन जोरी॥५॥ वे बातैं सुधि करि करि सजनी
विथा हॄ तजिय भारी॥ सूरदास प्रभु के विछुरे तें मरन पांव सर
मारी॥६॥ रा॰ सारंग॥ तब तें मिटे सबै आनंद॥ या ब्रज को सोभा
ग संपदा लै जु गये नंदनंद॥१॥ व्याकुल भई जसोदा डोलति दुखि
त नंद उपनंद॥ धेनु नहीं पैं अवति इहि तमुख चरत नहीं तृण कं
द॥२॥ विषम वियोग दहत तन सजनी बाढि रहे दुख दंद॥ सीत
ल कोंन करे री माई नाहि न इहां सुखचंद॥३॥ रथ चढि चले गहे न
काहू चाहि रही मति मंद॥ सूरदास अब कोंन छिडावै परी विर
ह के फंद॥४॥ रा॰ सारंग॥ मेरे जियकी करके रही॥ वे बतियां छति
यां लिखि राखी जे नंदनंदन कही॥१॥ एक द्यौस आए नंदनंदन
ह्यां गेह हम मथति दही॥ रति मांगत मे मांन कियौ है सो हरि गुसा
गही॥ सोचति अरु पछिताति राधिका मूरछि परति मही॥ सू
रदास स्वामी के विछुरें विषा न जाति सही॥४॥ रा॰ मलार॥ ए
सें नंदराय के बारे इन कुंजनि पतियां हु सखी री जे तें हैं तन
कारे॥१॥ खेलत रंग संग वृंदावन निमिष न होतु न न्यारे॥ पहि
लैं सुख दै प्राण भये हम को दे जु गए दुख भारे॥२॥ उरपर भीजत
हूं सारंग सिख नैंनी रवहु हारे॥ सूरदास प्रभु वेगि मिलहि तु
म ए रतन हौं गुण दारे॥३॥ रा॰ आसावरी॥ ऐसो कोउ हित हैं स
जनी मो कों हरि हि मिलावैं हो॥ बालक बहुरि नंदनंदन को इहां
लौं लै आवै हो॥१॥ पाइनि परि विनती करें अरु यह दुख सो जनावैं
हो॥ नव निकुंजन बकेलि रीति रस रास की सुरति अनावैं हो॥
२॥ औरो कोंन भांति की सकुचनि कोंन्ह रकों उपजावैं हो॥ फु
नि फुनि सूर कहैं प्राणपति सों लोचन नजर तजु उबैं हो॥३॥ रा॰
गांधनाश्री॥ मिलि कि निज्या हु बटाऊं नाते॥ नंद जसोदा के तुम
बालक विनती करति हैं नाते॥१॥ तुम्हरी प्रीति हमारी सेवा
गानियत नाहीं कांतें॥ लोग रै खितुम कहां भुलाने सीतन भए
बन पांतें॥२॥ तुम विछुरत घनस्यांम मनो हर हम अब लाए
समांतें॥ कहा करो तुसनेह न छूटे हूं जो तिगाई जाते॥३॥ अ
ब हठि दांन मांगते हम पे अंग [illegible] ते॥ सूरदास प्रभु अ
बल कों न रिपु बी बप होंहें जाते॥४॥ रा॰ सारंग॥ हरि जु एते

रिनकहांलाए॥ मानोंअवधिमेंकहूतसमुझीगनतअचानकआ
ए॥२ भलीकरीजुवहूपिइनिनैननिमुंदरचरणदिखाए॥ नानी
कृपाराजकाजहिमेंकहूतवबनविसराए॥३॥ इहैंअंतरतेंतुर
तअगस्तिकैमनअभिलाखपुजाए॥ विरहिनिविकलविलोकि
सूरप्रभुधायहृदेंकरलाए॥४॥ रा सारंग॥ जोपैंकोउमाधोसोंक
हैं इहेंविथाजानिनैंदनंदनकजमधुपुरीरहैं॥१॥ पहिलेंसव
हीननाअगटकरिपुनिकरिचरणगहैं॥ मोपरतीतिहुनैंदसु
वनकीसुनतनप्रेमसुहैं॥२॥ सूरदासप्रभुसंदेसोकछुसोईक
तजुनिवहैं॥ एकवारयहितनकेकारनजेदुखअनलदहैं॥३॥
रा सारंग॥ सुनोंसखिमाधोंविनुयातनसवविपरीतिभई॥
गईछिपायछपाकरकीछविरहीकलंकमई॥१॥ अखियांहु
तीकमलपांखुरीसीतेजुनिचोरिलई॥ आंवलगेंवोनोंसोंनो
सोयोंतनुधानथई॥२॥ कदलीदलसीपीठिमनोहरसोऊपल
टिगई॥ सकलसूरहूहिहरीसंपदाविपदावदर्ई॥३॥ रा॥ विला
वल॥ विधुवैरीसिरपरवसेंनिसिनीदनपरई॥ रूपिसुरभानुसु
भटविनायाहिकोवसकरई॥१॥ गगनसिखरउतरेंवठेंगरवां
जियधरई॥ किरनिसकनिभुजनकीहनेउरमेंजनुमरई॥२॥ उड
परिवारपिसुनुसभाअपनसोहिनडरई॥ सोईपरपंचकरेंसा
खीअवलाज्योंनरई॥३॥ घरेंवठें इहिपापतेंकालिमानहिट्यर
ई॥ सूरदाससमुझाइयोन्योंत्यों दुखदरई॥४॥ रा॥ मलार॥ देखो
माईनैंननिसोंघनहारे॥ विनुहीरितुवरखतनिसिवासर
सदासजलदोउतारे॥१॥ ऊरधस्वाससमीरतेजअतिदुखअने
कद्रुमडपे॥ वदनसदनकरिवसेवचनषगरितुपावसकेमारे॥२॥ ढरिढरिबूंदपरतकंचुकिपरमिलिअंजनिसोकारे
मानहूपरनकुटीसिवकीविचधारएस्यामनिन्यारे॥३॥ सुमिरि
सुमिरिगर्जततनिसिबासरअश्रुसलिलकेधारे॥ बूडतव्रज
हिसूरकोराखेंविनुगिरिवरधरप्यारे॥४॥ रा॥ मलार॥ कैसेंजी
उहांपरदेसरहे॥ गरजिगरजिघनवरखनलागेनदीअौना
रवहे॥१॥ वासरगएनिहारतिमारगचातककरैनिदहे॥ का
सोकहोंतपतमनतिमरित्तुकोउलपीरलहे॥२॥ कोउजाय
मदनमोहनसोंभूमरीविथाकहे॥ हमहूंकिनिलेंजायसूरप्रभु
कोव्रजविपतिसहे॥३॥ रा॥ मलार॥ कोउमाईवरजोवोलनमो

सू.सा. रनि ॥ रटतपपीहाछिनुनरहाई होतविरहकीरोरनि ॥४॥ बम
२५३ कतवकतवहूंहिसदामिनिअंवरघनकीघोरनि ॥ वरसत
वूंदवानलहकैलागतवोजीतेंइहिजोरनि ॥५॥ चंदकीकिरनिनें
नकीकोरनिनासतितपतिचकोरनि ॥ सूरदासप्रभुहमतो
जीवेंमिलिहैंनंदकिशोरनि ॥३॥ राग मलार ॥ कैसेंज्योंरावोंगी
बोलतमोर ॥ देखिसखीतनखोदजनोंसेवतवितवनचंदव
कोर ॥१॥ दामिनिअरुमेघघरज्योंगरजतहेंघनघोर
एसीअवस्थापरीवालककोंकठिनमदनकजोर ॥२॥ न
वसतसाजिचलीव्रजगोपीउरनाहिनवंदछोर ॥ सूरदासप्र
भुदरसतुम्हारेकोपलकनिरेतिअकोर ॥३॥ राग मलार ॥ कैसें
भरियेंदिनसावनके ॥ हरितभूमिभई सलिलसरोवरमिटें
मगमोंहनआवनके ॥१॥ हरिमुसंगसवबकनतुहामिलिफूल
तिफूलनभावनके ॥ गरजतघुमरिघटाघनघोरतिमदनध
नुषधरिधावनके ॥२॥ दादुरमोरमोरसारंगपृपाकनिसिहि
निसासुहसावनके ॥ सूरजदीनदोनकोनिघरेंत्रिगुणवि
येमिरावनके ॥३॥ राग मलार ॥ लोतूनेंकहूंउडिजाहि ॥ विविधि
वचनसुनायवांनीइहांनिचितुकाहि ॥१॥ पतितमुखपिकपु
रिषपमुलोकहांएतोरिसाहि ॥ नाहिनकोउसुनतसमुफन
विकलविरहिनमाहि ॥२॥ राखिलेंबाअववधिलौंतनुमदनमु
खजिनिखाहिसुहूतोंतनस्यूरदेखीवहुरिकहांसमुकाहि ॥३
नेदनेदनकोविरहअतिकठतवनतवनाहि ॥ सूरप्रभुविन
नाथविनुलेंमोनमोहिविसाहि ॥४॥ राग मलार ॥ अवव्रजनाहि
ननंदकुमार ॥ इहेंजांनिअजांनमधुवारवीगोकुलआर ॥१॥ नें
नजलदनिमिषदामिनिअसुववरखतधार ॥ दरससासिरवि
दूरोधीसुसासपवनअकार ॥२॥ उदजमिणिभयभरनभारी
श्रमनकोंमकअपार ॥ गरजविकलावियोगवांनीरहतिअवधि
अहार ॥३॥ मधुपमथुराजायहरिसोंवानकहेंविचार ॥ सेन
सतुसुघासुघेरोंसूरलेहुसंभार ॥४॥ राग मलार ॥ इहिडरवहुरि
गोकुलनआए ॥ सुनिरीसखीहमारीकरनीसमुझिमधुपुरी
छाए ॥१॥ आधिरातिवलतेंउठिवालकसवमोहिजगेहेंआइ ॥
विनुपदत्राणिवहुरिपठवेंगीवनमेंहधरावनगाय ॥२॥ सूनेभ
वनआनिरोकेंगीदधिचोरतनवनीत ॥ पकरिजसोदापेंलेजें

ऊनौं बहुं गाव हु गीत ॥३॥ ग्वालनि मोहिं बहुरि बांधैंगी कैंजे व
चन लगाय ॥ एते दुख सुमिरि सूर मन बहुरि महूं कों जाय ॥४॥
रा म स ॥ फिरि ब्रज आइयें गोपाल ॥ नंद नृपति कुमार कहिहैं
पुनि न कहिहैं ग्वाल ॥१॥ मुरलिका सुरस अरिसि हिसि बलोनि
मान बजाइ ॥ हिमिजि के जुवति मंडल भूप परिहैं पाइ ॥२॥ सुरभि
सेन सखा सुभट संग उठैंगी खुर रेंनु ॥ आतपत्र मयूर चंद्र कल
सन हैं रविए नु ॥३॥ सद्रुपनि मधुकरनि कर वर मद न आय
सु पाइ ॥ द्रुमलता वन कुसुम बांनिक बसन कुटी बनाइ ॥४॥
सकल खगगन पैंक पाइक पौरिया प्रतिहार ॥ सूर प्रभु ब्रज
कों समो सुख कौ कहि सकैं अपार ॥५॥ रा म स ॥ तब तें बहु
रि न कोऊ आयौ ॥ वहै जु एक बार ऊधौ पैं कछुक सोधि सो पा
यौ ॥१॥ सुधौं विचार करौ सखि माधौ इतौ गहरु कहूं लायौ
गोकुलनाथ कृपा करिक बहूं लिखि यौं नाहिं पठायौ ॥ अव
धि आस जतन नाने करि इहू मन अव जैहैं धीरायौ ॥ सूरदास
प्रभु बातिक बोलेमे घनि अंवर छायौ ॥३॥ रा म स ॥ सखी री
चातक मोहिं जिवावत ॥ जैसेंहि रैनि रटत हौं पिउपिउ नैसेंइ
फुनि इह गावत ॥१॥ अतिसु कंठ सुर सप्रीत मसुख नाहिं जीभ
नु लावत ॥ आपुन पिवत सुधारस सजनी ॥ विरहिनि वोलि पि
वावत ॥२॥ जो यह पंखी सहाइ नहोतौ प्रांण वहु तु दुख पावतु
जीवन सुफल सूर ताहीं कौ काज पराए आवतु ॥३॥ रा म स ॥
संदेसनि विरहिनि क्या कौ जाति ॥ जबलगि दृष्टि परे न बह
मूरति मन हु चरखी कांति ॥१॥ नारि निनेंह परि हम तें विछुरेत
पत्यौ तन न बुझांति ॥ सूरदास प्रभु मिलहु कृपा करि छातिया
तवही सिरात ॥२॥ रा म स ॥ कहियौ पथिक जाय माधौ सौं ॥
मेरौ मन चरखौ नैंन के लेसें ॥ इहि यौं सकै ऊगरत आंब ननि
रखत मुख कौं लागनि मेरवें ॥१॥ जे अब वारहु तइन पैं फिरि विधि
जु लिखी दरसन अवरेखें ॥ कैंतु नाहि बनाइ विरहिन इस लक्षी
पलक जडता के पेखें ॥२॥ अनुदिन छिनु छिनु जो पिजनन कौर
आनन जुग अवलीया विसरें ॥ सूरदास प्रभु या अरु नानि तें
नहिं मन छुटत दरस बिनु देखें ॥३॥ रा म स ॥ अब वह प्रीति
भई पातरी ॥ स्यांम कां न्हूं नलिरां म हमारे मारग जाउ मिले उन
जातरी ॥१॥ हम ब्रज बसत गोपाल लाल क बहु न सुनी पोच बात

सू॰सा॰ २५५

री॥ कंचनकांचकपूरकटुक नीसोईसमहीरापोतविका
री॥२॥ एसवहूंसमानसरवरकेछीलरबूंदमलिनकोंन्हं
तरी॥ सूरदासमुकताफलभोगीकोबिकरतकोंस्यारिखवाल
री॥३॥रा॰॥विहागरों॥ माईमोकोंचंदलग्योदुखदेंन॥ कहांवेस्या
मकहांवेबतियांकहांवेसुखकीरेंन॥१॥ तारेगगनगगनत्त
ह्वांहारीटपकनलागेनेंन॥ सूरदासप्रभुतुमरेंदरसबिनुवि
रहिनकोंनहिंचेंन॥२॥रा॰॥गोरी॥ अंजरीमनोंअनाथकियों॥
सुनिरीसखीजसोधानंदनविसुसंदेसदियों॥१॥ तबबहुकें
पास्यांमसुंदरखी।करगिरिटेकलियों॥ अहप्रतिपालिबा
लग्राइनिकोंजलकालिदीपियो॥२॥ इहिंसबदोसुहमहि
लागतुहेंचलननपठ्योहियो॥ सूरदासप्रभुनंदनंदनविनु
कारनकोंनजियों॥३॥रा॰॥धना॥श्री॥ मेरोंमनतुपाईरह्यों॥ ग
येसुतवतेंबहुरिनआयोंगहिगोपालसह्यों॥१॥ इननेंननि
कोंभेदनपावेकोहिभरियाकह्यों॥ सोवोरूपचोरिचितअं
रसोईहरिसोंधिलह्यों॥२॥ आएंलोभतनावनऊधोमणिदें
लेहुमह्यों॥ निर्गुणसांदिगोविंदरहेमागतकोरचनातसह्यों
३॥ जिहिंआधारआजुलोंदेहतनुएमेंहीनिवह्यों॥ सोईछिडा
यलेतिसुनिसूरजसोंहनहदेंरह्यों॥४॥रा॰॥नट॥ तवतेंनेंन
निनीरहिरानी॥ मायोंदुवारनुमेखुनलावनतउमगिचल
तभरिपानी॥१॥ एकसमेंउनमाननतेंअंतरसोभासवउरआ
नी॥ सहिनसकीतननपनविरहज्वरसोंअवलोकिउरानी
विसरिगईतिहिंकालसकलसुधिदेहुपरिहांसिविलखां
नी॥ बुधिविवेकबलरहिनाविवसगतिधरनिपरनसुरझां
नी॥३॥ सपनेमेंसपनोसुनिसजनीहठिएसकरिअरुझांनी
मतबांचनमतुहारिछुवतपदनिरखिबदनमुसिकानी
४॥ पानिसरोजउरोजनिपरसेंहंसिसकुचनसमुझिलजानी
रोमरोमप्रगटितपुलकितचितहरखिसुरसमनसांनी॥५॥ जा
गेतेजियसोचपोचअतिविकलभईअकुलांनी॥ इंदुकिर
निजयुतरनितरफिवपुफिरियाछेंपछितांनी॥६॥ पचिहा
रीपुनिपलकनलाग्योंपलपलदेहसुखानी॥ जेहिंविधि
मिलहिंस्यांमघनसुंदरसूरसुचतेंनवताउसयांनी॥७॥रा॰
गटा॥ डसीरीमदनभुयंगमकारे॥ चितवननहींमुसिकाय

लोभकरिजातुमेरूसोंउरे ॥४॥ तेतुनजानोंमंत्रजानोंचलोंगु
णीगुनहूरें॥ परमप्रीतिविषहूरसोंवाधिसोउतरतमोहिंआरे २
यहूंजानिऊधोंव्रजआयेवदंदेचलेहमारे॥ आवतिलहूरिजुम
दनविरहकीकोइहूवेंदहूकारें॥३॥ मदनगोपालगारूरीकहि
यतसोयाविषहिउतारें॥ सूरदासप्रभुकवहिंमिलाहिंगोतिरय
हगुडुआउरें॥४॥ रा॥ मा॥ ग॥ लोगसवरेनसुहाईवातें॥ कहत
हिंसुगमकरतनहिंआवेंवोलिनआवतुतातें॥१॥ पहिलेंआ
गिसुनतवंदनसीलातीवहुतउमहें॥ समाचारतातेंअरुसीरे
पाछेंकोंनुकहें॥२॥ कहतसवेसंग्रामसुभगअतिकुसमला
तांकरवार॥ सूरदाससिरदियेंसूरमाकोंनुकहैंविवहार॥३॥ रा
ग॥ केदारो॥ मोहनफिरिफिरिगोकुलआवतु॥ जिनिकुंजनिकी
डावनकीनीसोसवहूनिमनभावतु॥१॥ गोपीग्वालऔरव्रजव
नितासुमिरिसुमिरिगुनगावतु॥ वारेतेतुमकाजेकौसिरजेकु
विजावायकहावतु॥२॥ निननितप्रीतिवढाबनउनसोंहमहिं
कोंलगाइलावत॥ सूरदासप्रभुपरमचतुरभएपतियांकत
विसरावत॥३॥ रा॥ गोपी॥ सुरतिकरिउद्धोकेरोयादियों॥ चल्योंजा
तपथिंकठकमारगगोपीवलवालिलियों॥१॥ कहिंधोंवीयक
हांतेंआयोंपुहूमिप्रणमाकियों॥ परमप्रीतिकरनिगहवोल्यों
पहुंनाचारविरयों॥२॥ गहरदकंठहृदेंभरिआयोंवचननक
ह्योंपरयों॥ सूरदासप्रभुफिरिवूझेंतेउतरएकछुनकह्यो॥३॥
रा॥ गोरी॥ हरिविछुरतमकोंविसराहिं॥ मिलनदूरिमनवसत
चंदज्योंचकोरघितेंपखिनाहिं॥१॥ जलमेंरहेंजलहिमेंउपजेंन
लहीविनकुम्हिलाहिं॥ नलनजिहंसचुनहिमुकताहलमीनक
हांउडिजांहिं॥२॥ धरनीदूरिगनदेखिवादरज्योंवरखेंअरुविलखा
हिं॥ प्रगटनप्रीतिकरेंपरदेसीदूरदेरहेंसमाहिं॥३॥ सोईगोकु
लगोवर्द्धनसोईकोंनकरेंव्रजकाहि॥ सूरदासप्रभुतुम्हरेमिल
नविनुअनतनेंकहूंसमाहिं॥४॥ रा॥ सो॥ रठि॥ जोलोंजाउकोंऊउ
हिरेसु जैसेंकेंवहकहेंसखीरीकरोंसोईतुमभेसु॥१॥ वोलिं
धोंहरवायवूझोंआपनेसनेंसंस॥ संगवाकेचलोंजोगिनि
जटासिरकरिकेस॥२॥ जदपिहमव्रजनारिवेनोंजुवतिहरिवं
नरेस॥ तदपिससिकुमुदिनीसूरजरचीप्रीतिविसेस॥३॥ रा॥ सो
रठि॥ पथिकपालागोंपूयांमसोंकहियोंयहवात॥ दतनीदूरिव

सू.सा. मनकौं विसरे अपने जमनी तात ॥ १ ॥ जा दिन तें मधुपुरी सिधारे
२५५ स्यांम मनोहर गात ॥ ता दिन तें ए नैंन पपीहा दरस प्यास अकुला
त ॥ २ ॥ जहां खेलन की ठोर तुम्हारी देखि नैंन दुख पात ॥ जब कब हूं
उहि खरिक जात तेहिं गाय दुहावन प्रांत ॥ ३ ॥ दुहत देखि औरनि के
बालक प्राननि कसि नांहि जात ॥ सूरस्यांम फिरि कबें देखिहों
कोमल कर दधि खात ॥ ४ ॥ रा ॥ सारंग ॥ तौ तू उडि हि न रे काग जो
गोपाल गोकुलहि आंवहिं तौ तो हमारे भाग ॥ १ ॥ दधि ओदन दे
नाकें देहूं अरु अंचर की पांग ॥ लोचन हर्दें बुझाप सगुन तन में
टि विरह के दाग ॥ २ ॥ सूरदास प्रभु मिलहु मया करि याहू तें अनु
रागु ॥ जैसें मात पिता नहिं जांनत रेनि होय नहिं जाग ॥ ३ ॥ रा ॥ ध
ना ॥ श्री ॥ सुनि री हमें जो हरि आवें ॥ निरखि निरखि वे वदन मनोह
र नैंन बहुत सुख पावें ॥ १ ॥ तैसें ई हरित वन तें प्रिय स्याम घटा तें
सिख वरा पंगति दिखावें ॥ तैसोई मोर बकुला हू लकरत हरषि
हि ओरना गावें ॥ २ ॥ कबहुं कहि लिसिलि खेलन के मिस सघन
निकुंज बुलावें ॥ कबहुं कलें संग वासे लै चढि मुरली मराल
बजावें ॥ ३ ॥ विछुरे प्राण हरत तैसें करि बहुत जतननि समुझा
वें ॥ जितहि बजोनि चलत सूरज प्रभु नितप हिलें उठि धावें ॥ ४
॥ रा ॥ ध ॥ ना ॥ श्री ॥ आली अबहु रिनक बहु मिले हरि ॥ कमलनयन मि
लिवे के कारन अपनो सो जतन रही बहु तें करि ॥ १ ॥ काहू न प्रगट
करी जदुपति सों दुसह करास गई अब धोंटरि ॥ धीर न धरें प्रे
म व्याकुल तन लेति उसासनीर लोयन भरि ॥ २ ॥ विनु गोपाल भ
ई हूं ऐसी ज्यों मछरी जल भिन्न करी धरि ॥ सूरदास तातें विथ्य
कित भई अब यह वियोग विरह सागर तरि ॥ ३ ॥ रा ॥ मलार ॥ कहां
परदेसी कौं पतिआरों ॥ प्रीति लगाय चले मधुवनकों विछुरें
दुख दीनों अति भारो ॥ १ ॥ ज्यों जल हीन मीन तलफत है तैसें व्या
कुल प्रांन हमारो ॥ सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलन विनु दीपक जैसें
भवन अंध्यारो ॥ २ ॥ रा ॥ सारंग ॥ कहौं कैसें कें दरसन पाऊं ॥ सुनहु
पथिक उहि देश द्वारिका जो तुम्हरे संग आऊं ॥ १ ॥ बाहिर भीर बहु
त भूपति की पूछत बदन दुराऊं ॥ भीतर भोन भोर भामिनि भर
ति निहिं कौं कौं हू पठाऊं ॥ २ ॥ बुधि बल विधि संयोग जतन करि तनपि
यावें पहुचाऊं ॥ ब्रज जमुना तट के रसिक बिनु कि हियह दसा सुना
ऊं ॥ ३ ॥ तद्यपि सूर जाउ प्रभु तारस मनकों भलों मनाऊं ॥ नवलकि

मोरमुखमुरलीबिनुइननैंननिकहूंरिखाऊं॥४॥रा॥गौरी॥बा
तहूमरीमानोंजोनों॥आवनकह्योंवहूनैंदिनलाएनोतैंउनई।
कीनों॥१॥एकईबोलनिकेलिआपनीखोयदईवेबाती॥नाते
परमितताहीठारहूचाहैवचनसेबानी॥२॥इननोंकहेंकोरथपि
एखेंजोगआपनेघरकों॥पंजखेंचिमेंटनआएहो॥ननकउजाऐ
खरकों॥३॥नंदनंदनलेंगयेहमारीपाव्रजकीसवकंठव॥सूरस्यां
मनाहिंटरतहदैंतज्योंकुजरखेरकीदूब॥४॥रा॥बिलावल॥क
हांलोंमनराखियेंविरमाय॥इकटकसिवघानेत्रनलागतो।
स्यांमसुतासुनधरनीआय॥१॥हरिवाहनइवनासुमहोदर
तिपतिउरितसुरछिमहिजाय॥गिरिजापतिरिपुनखसिरखवा
पततामसुधापियकथासुनाय॥२॥विरहिनिविरहआपुवस
कीनोंलेवकमलनिजपाइनुलाय॥वेगमिलोसूरकेस्वामी
उदधितनयापतिमिलिहैंआय॥३॥रा॥बिलावल॥महाक्षवि
तरैंफ़मेरैनैंन॥मास्निनतेंहरिचलेमधुपुरीलेकोनकवहूंकीनों
सेंन॥१॥भरेरहतआतिनीरननिघटनलोचननाहिकवरैंन
महादुखितआतिहीभ्रममानेविलरखपावततनाहिचैंन॥२॥
जोचकवहूंपलकोनहिखोलतजोहनचाहतमुरलीमैंन॥छां
डतछिनमैंएजोसरीरहिगातकेविथाजानहरिलेंन॥३॥एसैं
नदहैंइनैंमिलिउहैंनसोरभाखैंवेंन॥सूरदासप्रभुजवतेंबि
छुरेतवतेंसववलाघटदुखरैंन॥४॥रा॥मलार॥माईरीकनकार
नकोंनात॥देखीइनकमलमधुपनकी।छिनतनप्रीतिघटात
॥१॥कोइलककपिसवापसवलिछलिनाहिउहिवनजात॥ज
द्यपिसुधाराहुससिपीवोंबेंठिएकहीपांत॥२॥सुनहितज्यों।
जसव्रतकीजनवहुविधिनीकीभांत॥जिनैंपायसुखमांनि
मोहतजियवैंजननीजसुमात॥३॥इनकोंकहांपरेखोकी
जतअवलावलसुखसांत॥सूरदासमैंनवहीजानीजवंकार
वामीनांत॥४॥रा॥केदारो॥सखीरीस्यांमकेवोरूसेजाय॥आंगुन
हमजुकियेमेरेप्यारेसोंकेंसोनरहुवनाइ॥१॥प्रीतिअंचेनहम
तेंभईवौरीमोउपजीसनभाइ॥पायपरोंविनतीकरोंमोकोउ
स्यांममिलाइ॥२॥चोरहिनकीचपक्रमअवलाकासोंहलप
टाय वंद्रकीससिअगिनिदहेंलागीतारेगननविहूाइ॥३॥वरन
मलीनभईसवगोपीछांडिचलेजदुराइ॥नित्तप्रतिभजनक

सु.सा. २५६

रही मो कों चरणकमल चित लाइ॥४॥ चोरी पर कहां कर क
ई माखो जै तुम बेली साय॥ कालनि कुंडल अरु बनमाला सो
छबि क्यौं बिसराय॥५॥ सुरदास चातक ज्यों मा पिउ पिउ रसना
लाय॥ नीरद ज्यों मसु खर सो भगत न न हैं कोऊ आंनि मिलाइ
॥६॥ राग॥ केदारो॥ सखी री स्याम घटा वे आई॥ जिहि दिसि गोचारन
मोहन बल उमगि उमगि तित धाई॥१॥ पाविन भई चहूं दिसि मु
रली मुनि मोहन नव हि बजाई॥ तैसोई नील बसु निरखि तैसोरे
खि दुकि धर लत घन बल भाई॥२॥ चाविन रही मुरभी जित कि
त सब तजि तन प्रेम लुभ्याई॥ मांनहु कलित तडित रपिंउ रुचि ध
रि हैं अंचल एक चाई॥३॥ नव रस लघ छत्र विचित्र विराजत आनन
विधु बधू सुहाई॥ मांनहु नील नग मुकुटं गास रापस्म निसह नाल
गुहाई॥४॥ सुरति भूषन अनि खग जनत विगत करि अधर धरनी वह
ई॥ मांनहु विधि यारि दिसि नगर रामिनी पटनिमह तिडुम हाई॥५
कुल पट्यो छबि सुवमुकता फल करि … नाई॥ उरकत नसु ग
तहं समसार समानो पावस मन नाहि लिनाई॥ ॥ चातक मोर चकोर
भेख पुनि पिक समोस सुना … पनि मनि लिये पिरत चानक
ज्यों मांसु रहै ध्यान बिनाई॥७॥ उपति विधु रति घन लौं ग्रीध
कुहक न सरास मम्ल नाम सबल मो मिन कों मल धरा हिर नपि
रत बिमलाई॥ … पल राज कों नन इहि राजन गाजन रागन
गुहाई॥ कौं धन चपल छटा रसा हूं रिम डोलत मरनर हाई॥६
बितुमो पासल कलाए हूम कों विधुसम लागत माई॥ सूरदास
प्रभु मिलहु हुख पाक रिगेपिन लेहु जिवाई॥१०॥ राग॥ केदारो॥ स
खी री सुमह कहो क्यों सहियें॥ इह घन घटा रयनि पिक बोलत
विरहिन दुष रहियें॥१॥ सीत मयूल रामिनी वै हिनि भई मेक
नि भीषम सूल सहियें॥ नीर गई सिरायजल जल ज्यों तिल विश्रा
मनं गहियें॥२॥ नाहिन हित कारन कों अपनो ना सो एद षकहि
यें॥ मरनातीर गंभीर नीर पर … न सुखना उ ज्यों बहियें॥ पल
कन मिलत छुटी किहि औसर सो क सरल न न सहियें॥ को
किल का कमोर सुनि हर खत कहां न हियें॥४॥ जो अब कहूं या छ
परनि रंतर रहत परम गात लगत नहियें॥ तुव कहं सुरति हूव
दुत रषन हेत विनय इयें॥५॥ विकल स्याम गवाई मनि ज्यों
जुग वत अवांध बतेई यें॥ सूरज स्यां मवियो गिनि विहवलाए

कोंआवतननहियें॥४॥ राग कान्हरा॥ सखेंपि तु औरें लगावनि आहि
सुनि सखि बाज्रजनाथ बिनाब्रज फीको लागत चाहि॥१॥ दे
खि स्यांम घननें नए बरखत पावस इहि सिरात॥ सरदसने
हू सुख सरिता उरमा रगाइ जलजात॥२॥ हिमरुति नवर देखें
ही उपजनि निसारहित इहि जोग॥ सिसिर सुरति आए कांप
त उर सुमिरि स्यांम उपभोग॥३॥ निरखि बदन बिरह वसीत
न वे सुख दुख होय फूली॥ ग्रीषम काल निमिख नाहि छंडति
देह दसा सब भूली॥४॥ घटरि तु मिलि इक धांम कि यों बपु उ
में त्रिदोष जुरे॥ सूरअवधि उपचार आस लों राखे प्राण भुरे
५॥ राग सारंग॥ कहां होत अबके पछितानें॥ खेलत खात न हस
त अंग संग रहि मन सां मकें गुण जानें॥१॥ कौन सुदेव कौन
की पांती कोहें मात पिता जब हितु आनें॥ सो अबतन लागरे ह्मधौ
हमें तुम हूं तो अति निपट सयानें॥२॥ इहैं न कपट कान्ह कोकि
लकी कपट रंग मन मांहि सयानें॥ सूरसलो तु राज बिराजें
मिले जाय निज कुल पहिचानें॥३॥ राग सारंग॥ बहुरि न कबहूं
मिले हरि॥ कमलनयन रूप मनके मारन ह्योंस खिजननरही
बहुलें करि॥१॥ जे ने पथिक गए मधुबनकों तिनसों बिथा क
ही पाइनि परि॥ कहियौ प्रगट जाय जदुपति सों स्यामकही सो
जाति अवधि टरि॥२॥ स्रवन धरत प्रांण व्याकुल अति लेति
उसास नयन नैंननि भरि॥ सूरदास मन थाकित भए हैं यह ह्मवि
योग सागर नतरि॥३॥ राग सारंग॥ बिनय बोहिउ पगार
गह्यौं॥ नाजानौं पहराहु उमापति कतहो इसो धिलह्यौं॥१॥ ता
के बीच नीचनें ननि में अंजन रूपरह्यौं॥ बिरह सिंधु बल पाय
प्रगट भयों नाहिन परत कह्यौं॥२॥ रसहृदसन दुखह लिनैंन
निजल परसन परत सह्यौं॥ मांन हु श्रवन सुधा अंतरनें ऊप
ज्ञात बह्यौं॥३॥ अब सुख सखि तासों लागत ज्यों बिनु मारवन
हिम ह्यौं॥ सूरदास हरि दरसन बिनु यो बिनु सुख प्रकासनि बह्यौं॥४॥
राग बिहागरो॥ टरत नहीं टरी छबि जिय में चुभी॥ घनतन स्यां
म पीतांबर दामिनि चातक ज्यों अभिलाषा लुभी॥१॥ ज्यों बगपंग
ति राजति मानों अरु मुक्तमाल सुभी॥ गिरा गंभीर गाजसी
सुनि कें नाच्यकी अबाधि खुभी॥२॥ मुरली मोर मनो हरवानी॥
सुनें कटक जु उभी॥ सूर मेघ मनमों हन रे खंत उपजी कांम